Edition : September 2024/017 Price : Free

मातृका MĀTRKĀ

मातृका

A CORE SHARADA TEAM FOUNDATION INITIATIVE

REINCARNATION OF THE SHARADA SCRIPT

Download Our Free "Satisar" Andriod app

नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुरवासिनि
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥

𑆤𑆩𑆱𑇀𑆠𑆼 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆼 𑆢𑆼𑆮𑆵 𑆑𑆳𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆥𑆶𑆫𑆮𑆳𑆱𑆴𑆤𑆴
𑆠𑇀𑆮𑆳𑆩𑆲𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑇀𑆡𑆪𑆼 𑆤𑆴𑆠𑇀𑆪𑆁 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆢𑆳𑆤𑆁 𑆖 𑆢𑆼𑆲𑆴 𑆩𑆼॥

Maa Sharada by Praseeda Menon

LEARN SHARADA TEACH SHARADA

संस्कृति और सभ्यता को जानने की एक पहल

PRESERVE - PROTECT - PROPAGATE

Chief Editor :- Kuldip Dhar Catalogue Designer :- Sunil Mahnoori
Supporting Editors :- Vinutha Saligram,Veronica Peer & Team

INSIDE

Page 1 • Maa Sharada by Praseeda Menon

Page 2 • Content List

Page 3 • Editorial

Page 4 • Kaivalya Upnishad Shlokas 1 to 3 by Sh.AK Razdan

Page 5 • Vijnana Bhairava MS transliteration

Page 7 • Gyan ka Deepak by Deepak Sopory

Page 8 • Vijnana Bhairava MS Shloka -wise transliteration

Page 11 • Shiva Nirvana Padhati MS compilation by CST

Page 15 • Sh. Martand Mahatamaya MS

Page 16
- ल्वकुचार by M.K.Raina
- Art by Suresh Kardar

Page 17
- CST path forward by Rakesh Kaul
- Reader's Feedback

Page 21 • लघुभट्टारक प्रणीत लघुस्तवी - Dr. Ketu Ramachandrasekhar

Page 22 • Mata Laleshwari Paintinngs by Gokal Dembi

Page 23 • Hemkund Yarta travel blog by Shakti Munshi

Page 24 • Learn Sanskrit by Saraswathy N/ Vinutha Saligram

Page 27 • Bringisha Samhita Part 3 by Ketu Ramachandrasekhar

Page 28 • Kashmiri poem

Page 29 • पन तु अम्यिच्य महिमा by Kishni Pandita

Page 30 • Names of professions in Kashmiri

Page 31 • "Parva" by Ketu Ramachandrasekhar

Page 34 • Poem by Sh.Parmanandji & Purport by A.K.Razdan

Page 36 • क्याह छुख च़ु करनि आमुत by Girja Kaul

Page 37 • Painting of Lalleswari by Seema Kachroo

Page 38 • क्याह छु यि संसार by Amit Ztushi

Page 39
- Highlights of the month
- Reading Kashmiri

Page 40 • Koshur Primer Praveshika Page 6

Page 41 • Sharada वर्णमाला - CST

Page 42 • Advertisements and Core Sharada Team information

संपादकीय / Editorial

Kuldip Dhar

हम इतिहास के एक ऐसे पायदान पर हैं, जहां अत्यधिक महत्वाकांक्षाएं, आवश्यकताएं और संभावनाएं हैं। जब धन, ज्ञान या सुविधाओं में संसाधनों की कोई कमी नहीं है, ऐसे में विविध गतिविधियों में भाग लेने की व्याकुलता होना वास्तविक है। मानव स्वभाव का मूल है, कि समाज हमें देखे, पहचाने और सराहे। समाज में मान्यता प्राप्त करना मानवता के लिए वरदान और अभिशाप दोनों रहा है। इस स्वभाव, ऊर्जा व उत्सुकता को हमे संस्कृति के उधान के लिये उपयोग में लाने की आवश्यकता है।

हम मां शारदा के आशीर्वाद और मार्गदर्शन के साथ-साथ अपने पाठकों, संरक्षकों, विद्वानों, छात्रों, शुभचिंतकों के सहयोग से शारदा लिपि की प्रगति चाहते हैं। यह लिपि के प्रति जुनून और इस में लिखित साहित्य की सरल व सुलभ पहुंच के साथ हो सकता है। हम अपनी ओर से व्यक्तियों, विद्वानों, संस्थानों को बिना किसी लागत के ऑनलाइन, ऑफलाइन शरदा लिपि सिखाने के लिए सभी प्रयास कर रहे हैं। हमने प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए शारदा लिपि को समझने के लिए किताबें प्रकाशित की हैं। हम ने शारदा में एक कश्मीरी प्रवेशिका भी प्रकाशित की है।

एंड्रॉइड पर हमारा सतीसार ऐप गुगुल स्टोर पर निःशुल्क उपलब्ध है और हमारी सतीसर शारदा वेब एप्लिकेशन भी है जो शारदा लिपि में संस्कृत और कश्मीरी को लिखने और प्रशिक्षित करने की सुविधा प्रदान करती है। इसमें देवनागरी लिपि में लिखी गई संस्कृत/कश्मीरी को शारदा लिपि में लिप्यंतरित करने की भी सुविधा है। यह उतना ही सरल है जितना कि कीबोर्ड पर टाइप करना या बस कॉपी करके पेस्ट करना।

अपने पाठकों से हम अनुरोध करते हैं कि वह शारदा लिपि को जनसामानय तक पहुंचाने में हमारी सहायिता करें। आप शारदा में लिखी किताबें पढ़ें, मातृका और अन्य पत्रिकाओं के लिए शारदा में लिखें, मातृका को अपने सामाजिक, व्यावसायिक, शैक्षिक समूहों और संस्थानों में प्रसारित करें। आप हमारे साथ शारदा में लिखित पुराना साहित्य भी साझा कर सकते हैं जिसे आप संरक्षित और लोकप्रिय / प्रसारित करना चाहते हैं।

हम मातृका लिपि को समझने में सुविधा के लिए देवनागरी और शारदा लिपि में लेख प्रकाशित करते रहे हैं। मातृका को मुख्य रूप से शारदा लिपि में प्रकाशित करने के उद्देश्य में हम अग्रसर हैं।

इस माह से त्योहारों का समय शुरू हो गया है और अगले तीन महीनों तक चलते रहेंगा। हमने अगस्त मास में श्रावण पूर्णिमा / रक्षाबंधन और जन्माष्टमी मनाई। अब हम गणेश चतुर्थी, पन्न पूजा, ओणम, दिवाली की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम अपने पाठकों को इन पर्वों पर बधाई देते हैं और कामना करते हैं कि ये आप के जीपन में सद्भाव, शांति, आनंद और समृद्धि लाएँ।

𑆲𑆩 𑆅𑆠𑆴𑆲𑆳𑆱 𑆑𑆼 𑆍𑆑 𑆎𑆱𑆼 𑆥𑆳𑆪𑆢𑆳𑆤 𑆥𑆫 𑆲𑆽𑆁, 𑆘𑆲𑆳𑆁 𑆃𑆠𑇀𑆪𑆣𑆴𑆑 𑆩𑆲𑆠𑇀𑆮𑆳𑆑𑆳𑆁𑆑𑇀𑆰𑆳𑆍𑆁, 𑆄𑆮𑆯𑇀𑆪𑆑𑆠𑆳𑆍𑆁 𑆐𑆫 𑆱𑆁𑆨𑆳𑆮𑆤𑆳𑆍𑆁 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆘𑆧 𑆣𑆤, 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤 𑆪𑆳 𑆱𑆶𑆮𑆴𑆣𑆳𑆏𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆱𑆁𑆱𑆳𑆣𑆤𑆾𑆁 𑆑𑆵 𑆑𑆾𑆆 𑆑𑆩𑆵 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆲𑆽, 𑆎𑆱𑆼 𑆩𑆼𑆁 𑆮𑆴𑆮𑆴𑆣 𑆓𑆠𑆴𑆮𑆴𑆣𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆨𑆳𑆓 𑆬𑆼𑆤𑆼 𑆑𑆵 𑆮𑇀𑆪𑆳𑆑𑆶𑆬𑆠𑆳 𑆲𑆾𑆤𑆳 𑆮𑆳𑆱𑇀𑆠𑆮𑆴𑆑 𑆲𑆽𑇅 𑆩𑆳𑆤𑆮 𑆱𑇀𑆮𑆨𑆳𑆮 𑆑𑆳 𑆩𑆷𑆬 𑆲𑆽, 𑆑𑆴 𑆱𑆩𑆳𑆘 𑆲𑆩𑆼𑆁 𑆢𑆼𑆒𑆼, 𑆥𑆲𑆖𑆳𑆤𑆼 𑆐𑆫 𑆱𑆫𑆳𑆲𑆼𑇅 𑆱𑆩𑆳𑆘 𑆩𑆼𑆁 𑆩𑆳𑆤𑇀𑆪𑆠𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆠 𑆑𑆫𑆤𑆳 𑆩𑆳𑆤𑆮𑆠𑆳 𑆑𑆼 𑆬𑆴𑆍 𑆮𑆫𑆢𑆳𑆤 𑆐𑆫 𑆃𑆨𑆴𑆯𑆳𑆥 𑆢𑆾𑆤𑆾𑆁 𑆫𑆲𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆅𑆱 𑆱𑇀𑆮𑆨𑆳𑆮, 𑆈𑆫𑇀𑆘𑆳 𑆮 𑆇𑆠𑇀𑆱𑆶𑆑𑆠𑆳 𑆑𑆾 𑆲𑆩𑆼 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆴 𑆑𑆼 𑆇𑆣𑆳𑆤 𑆑𑆼 𑆬𑆴𑆪𑆼 𑆇𑆥𑆪𑆾𑆓 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆳𑆤𑆼 𑆑𑆵 𑆄𑆮𑆯𑇀𑆪𑆑𑆠𑆳 𑆲𑆽𑇅

𑆲𑆩 𑆩𑆳𑆁 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆑𑆼 𑆄𑆯𑆵𑆫𑇀𑆮𑆳𑆢 𑆐𑆫 𑆩𑆳𑆫𑇀𑆓𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤 𑆑𑆼 𑆱𑆳𑆡-𑆱𑆳𑆡 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆥𑆳𑆜𑆑𑆾𑆁, 𑆱𑆁𑆫𑆑𑇀𑆰𑆑𑆾𑆁, 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆮𑆳𑆤𑆾𑆁, 𑆗𑆳𑆠𑇀𑆫𑆾𑆁, 𑆯𑆶𑆨𑆖𑆴𑆁𑆠𑆑𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆱𑆲𑆪𑆾𑆓 𑆱𑆼 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆑𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆓𑆠𑆴 𑆖𑆳𑆲𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆪𑆲 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆑𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴 𑆘𑆶𑆤𑆷𑆤 𑆐𑆫 𑆅𑆱 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠 𑆱𑆳𑆲𑆴𑆠𑇀𑆪 𑆑𑆵 𑆱𑆫𑆬 𑆮 𑆱𑆶𑆬𑆨 𑆥𑆲𑆶𑆁𑆖 𑆑𑆼 𑆱𑆳𑆡 𑆲𑆾 𑆱𑆑𑆠𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆲𑆩 𑆃𑆥𑆤𑆵 𑆏𑆫 𑆱𑆼 𑆮𑇀𑆪𑆑𑇀𑆠𑆴𑆪𑆾𑆁, 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆮𑆳𑆤𑆾𑆁, 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆡𑆳𑆤𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆧𑆴𑆤𑆳 𑆑𑆴𑆱𑆵 𑆬𑆳𑆓𑆠 𑆑𑆼 𑆃𑆾𑆤𑆬𑆳𑆅𑆤, 𑆃𑆾𑆦𑆬𑆳𑆅𑆤 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆱𑆴𑆒𑆳𑆤𑆼 𑆑𑆼 𑆬𑆴𑆍 𑆱𑆨𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆳𑆱 𑆑𑆫 𑆫𑆲𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆲𑆩𑆤𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆡𑆩𑆴𑆑 𑆱𑇀𑆠𑆫 𑆑𑆼 𑆗𑆳𑆠𑇀𑆫𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆬𑆴𑆍 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆑𑆾 𑆱𑆩𑆙𑆤𑆼 𑆑𑆼 𑆬𑆴𑆍 𑆑𑆴𑆠𑆳𑆧𑆼𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆴𑆠 𑆑𑆵 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆲𑆩 𑆤𑆼 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆍𑆑 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆮𑆼𑆯𑆴𑆑𑆳 𑆨𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆴𑆠 𑆑𑆵 𑆲𑆽𑇅

𑆍𑆁𑆝𑇀𑆫𑆾𑆅𑆝 𑆥𑆫 𑆲𑆩𑆳𑆫𑆳 𑆱𑆠𑆵𑆱𑆳𑆫 𑆎𑆥 𑆓𑆶𑆓𑆶𑆬 𑆱𑇀𑆛𑆾𑆫 𑆥𑆫 𑆤𑆴𑆂𑆯𑆶𑆬𑇀𑆑 𑆇𑆥𑆬𑆧𑇀𑆣 𑆲𑆽 𑆐𑆫 𑆲𑆩𑆳𑆫𑆵 𑆱𑆠𑆵𑆱𑆫 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆮𑆼𑆧 𑆍𑆥𑇀𑆬𑆴𑆑𑆼𑆯𑆤 𑆨𑆵 𑆲𑆽 𑆘𑆾 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠 𑆐𑆫 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆑𑆾 𑆬𑆴𑆒𑆤𑆼 𑆐𑆫 𑆥𑇀𑆫𑆯𑆴𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠 𑆑𑆫𑆤𑆼 𑆑𑆵 𑆱𑆶𑆮𑆴𑆣𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆢𑆳𑆤 𑆑𑆫𑆠𑆵 𑆲𑆽𑇅 𑆅𑆱𑆩𑆼𑆁 𑆢𑆼𑆮𑆤𑆳𑆓𑆫𑆵 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆴𑆒𑆵 𑆓𑆆 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠/𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫𑆵 𑆑𑆾 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆴𑆥𑇀𑆪𑆁𑆠𑆫𑆴𑆠 𑆑𑆫𑆤𑆼 𑆑𑆵 𑆨𑆵 𑆱𑆶𑆮𑆴𑆣𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆪𑆲 𑆇𑆠𑆤𑆳 𑆲𑆵 𑆱𑆫𑆬 𑆲𑆽 𑆘𑆴𑆠𑆤𑆳 𑆑𑆴 𑆑𑆵𑆧𑆾𑆫𑇀𑆝 𑆥𑆫 𑆛𑆳𑆅𑆥 𑆑𑆫𑆤𑆳 𑆪𑆳 𑆧𑆱 𑆑𑆾𑆥𑆵 𑆑𑆫𑆑𑆼 𑆥𑆼𑆱𑇀𑆛 𑆑𑆫𑆤𑆳𑇅

𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆥𑆳𑆜𑆑𑆾𑆁 𑆱𑆼 𑆲𑆩 𑆃𑆤𑆶𑆫𑆾𑆣 𑆑𑆫𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁 𑆑𑆴 𑆮𑆲 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆑𑆾 𑆘𑆤𑆱𑆳𑆩𑆳𑆤𑆪 𑆠𑆑 𑆥𑆲𑆶𑆁𑆖𑆳𑆤𑆼 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆩𑆳𑆫𑆵 𑆱𑆲𑆳𑆪𑆴𑆠𑆳 𑆑𑆫𑆼𑆁𑇅 𑆄𑆥 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆴𑆒𑆵 𑆑𑆴𑆠𑆳𑆧𑆼𑆁 𑆥𑆞𑆼𑆁, 𑆩𑆳𑆠𑆸𑆑𑆳 𑆐𑆫 𑆃𑆤𑇀𑆪 𑆥𑆠𑇀𑆫𑆴𑆑𑆳𑆏𑆁 𑆑𑆼 𑆬𑆴𑆍 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆴𑆒𑆼𑆁, 𑆩𑆳𑆠𑆸𑆑𑆳 𑆑𑆾 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆱𑆳𑆩𑆳𑆘𑆴𑆑, 𑆮𑇀𑆪𑆳𑆮𑆱𑆳𑆪𑆴𑆑, 𑆯𑆽𑆑𑇀𑆰𑆴𑆑 𑆱𑆩𑆷𑆲𑆾𑆁 𑆐𑆫 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆡𑆳𑆤𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆱𑆳𑆫𑆴𑆠 𑆑𑆫𑆼𑆁𑇅 𑆄𑆥 𑆲𑆩𑆳𑆫𑆼 𑆱𑆳𑆡 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠 𑆥𑆶𑆫𑆳𑆤𑆳 𑆱𑆳𑆲𑆴𑆠𑇀𑆪 𑆨𑆵 𑆱𑆳𑆙𑆳 𑆑𑆫 𑆱𑆑𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁 𑆘𑆴𑆱𑆼 𑆄𑆥 𑆱𑆁𑆫𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠 𑆐𑆫 𑆬𑆾𑆑𑆥𑇀𑆫𑆴𑆪 / 𑆥𑇀𑆫𑆱𑆳𑆫𑆴𑆠 𑆑𑆫𑆤𑆳 𑆖𑆳𑆲𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅

𑆲𑆩 𑆩𑆳𑆠𑆸𑆑𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆑𑆾 𑆱𑆩𑆙𑆤𑆼 𑆩𑆼𑆁 𑆱𑆶𑆮𑆴𑆣𑆳 𑆑𑆼 𑆬𑆴𑆍 𑆢𑆼𑆮𑆤𑆳𑆓𑆫𑆵 𑆐𑆫 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆬𑆼𑆒 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆴𑆠 𑆑𑆫𑆠𑆼 𑆫𑆲𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆩𑆳𑆠𑆸𑆑𑆳 𑆑𑆾 𑆩𑆶𑆒𑇀𑆪 𑆫𑆷𑆥 𑆱𑆼 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆴𑆠 𑆑𑆫𑆤𑆼 𑆑𑆼 𑆇𑆢𑇀𑆢𑆼𑆯𑇀𑆪 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆩 𑆃𑆓𑇀𑆫𑆱𑆫 𑆲𑆽𑆁𑇅

𑆅𑆱 𑆩𑆳𑆲 𑆱𑆼 𑆠𑇀𑆪𑆾𑆲𑆳𑆫𑆾𑆁 𑆑𑆳 𑆱𑆩𑆪 𑆯𑆶𑆫𑆷 𑆲𑆾 𑆓𑆪𑆳 𑆲𑆽 𑆐𑆫 𑆃𑆓𑆬𑆼 𑆠𑆵𑆤 𑆩𑆲𑆵𑆤𑆾𑆁 𑆠𑆑 𑆖𑆬𑆠𑆼 𑆫𑆲𑆼𑆁𑆓𑆳𑇅 𑆲𑆩𑆤𑆼 𑆃𑆓𑆱𑇀𑆠 𑆩𑆳𑆱 𑆩𑆼𑆁 𑆯𑇀𑆫𑆳𑆮𑆟 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟𑆴𑆩𑆳 / 𑆫𑆑𑇀𑆰𑆳𑆧𑆁𑆣𑆤 𑆐𑆫 𑆘𑆤𑇀𑆩𑆳𑆰𑇀𑆛𑆩𑆵 𑆩𑆤𑆳𑆆𑇅 𑆃𑆧 𑆲𑆩 𑆓𑆟𑆼𑆯 𑆖𑆠𑆶𑆫𑇀𑆡𑆵, 𑆥𑆤𑇀𑆤 𑆥𑆷𑆘𑆳, 𑆏𑆟𑆩, 𑆢𑆴𑆮𑆳𑆬𑆵 𑆑𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆵𑆑𑇀𑆰𑆳 𑆑𑆫 𑆫𑆲𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆲𑆩 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆥𑆳𑆜𑆑𑆾𑆁 𑆑𑆾 𑆅𑆤 𑆥𑆫𑇀𑆮𑆾𑆁 𑆥𑆫 𑆧𑆣𑆳𑆆 𑆢𑆼𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁 𑆐𑆫 𑆑𑆳𑆩𑆤𑆳 𑆑𑆫𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁 𑆑𑆴 𑆪𑆼 𑆄𑆥 𑆑𑆼 𑆘𑆵𑆥𑆤 𑆩𑆼𑆁 𑆱𑆢𑇀𑆨𑆳𑆮, 𑆯𑆳𑆁𑆠𑆴, 𑆄𑆤𑆁𑆢 𑆐𑆫 𑆱𑆩𑆸𑆢𑇀𑆣𑆴 𑆬𑆳𑆍𑆀𑇅

𑆑𑆶𑆬𑆢𑆵𑆥 𑆣𑆫

कैवल्योपनिषद् भाग - १ (मन्त्र १- ४) / 𑆑𑆽𑆮𑆬𑇀𑆪𑆾𑆥𑆤𑆴𑆰𑆢𑇀 𑆨𑆳𑆓 - 𑇑 (𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫 𑇑- 𑇔)

A.K.Razdan

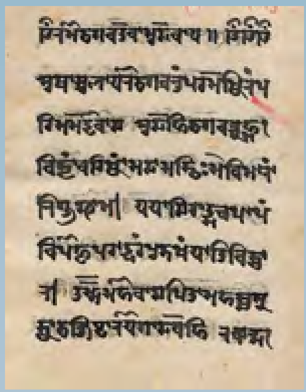

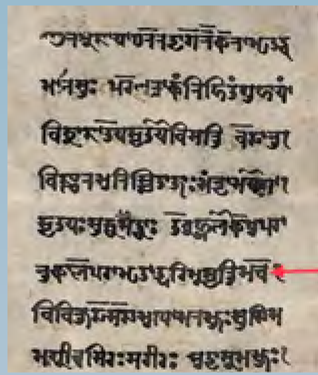

ईशावास्य उपनिषद् के उपरांत हम मातृका के इस अंक से कैवल्योपनिषद् आरम्भ कर रेहे हैं। कैवल्योपनिषद् सनातन धर्म के प्रमुख उपनिषदों में से एक है, जो मुख्य रूप से अद्वैत वेदान्त के सिद्धांतों का प्रतिपादन करता है। इस उपनिषद् के शारदा पाण्डु लिपि के पहले दो पृष्टों से हम इस अंक मे पहले चार मन्त्र और उनके अर्थ तथा विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं:

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥
𑇄 𑆤𑆩𑆾 𑆨𑆓𑆮𑆠𑆼 𑆮𑆳𑆱𑆶𑆢𑆼𑆮𑆳𑆪𑇆

मन्त्र १
𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫 𑇑

ॐ ॐॐ अथाश्वलायनो भगवन्तं
परमेष्ठिनंपरिसमेत्योवाच—
अदेहि (अधिहि) भगवन् ब्रह्मविद्यां वरिष्ठां
सदा सद्भिः सेविमानां निगूढाम्।
यया चिरात् सर्वपापं विपोह्य
परात्परं पुरुषं याति विद्वान्॥

𑇄 𑇄𑇄 𑆃𑆡𑆳𑆯𑇀𑆮𑆬𑆳𑆪𑆤𑆾 𑆨𑆓𑆮𑆤𑇀𑆠𑆁
𑆥𑆫𑆩𑆼𑆰𑇀𑆜𑆴𑆤𑆁𑆥𑆫𑆴𑆱𑆩𑆼𑆠𑇀𑆪𑆾𑆮𑆳𑆖—
𑆃𑆢𑆼𑆲𑆴 (𑆃𑆣𑆴𑆲𑆴) 𑆨𑆓𑆮𑆤𑇀 𑆧𑇀𑆫𑆲𑇀𑆩𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆁 𑆮𑆫𑆴𑆰𑇀𑆜𑆳𑆁
𑆱𑆢𑆳 𑆱𑆢𑇀𑆨𑆴𑆂 𑆱𑆼𑆮𑆴𑆩𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆤𑆴𑆓𑆷𑆞𑆳𑆩𑇀𑇅
𑆪𑆪𑆳 𑆖𑆴𑆫𑆳𑆠𑇀 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆥𑆳𑆥𑆁 𑆮𑆴𑆥𑆾𑆲𑇀𑆪
𑆥𑆫𑆳𑆠𑇀𑆥𑆫𑆁 𑆥𑆶𑆫𑆶𑆰𑆁 𑆪𑆳𑆠𑆴 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆮𑆳𑆤𑇀𑇆

अर्थ - ॐ, तब अश्वलायन ऋषि भगवान परमेष्ठिन (ब्रह्मा) के पास गए और उनसे प्रार्थना की: "हे भगवन, कृपया मुझे सर्वोच्च ब्रह्मविद्या का उपदेश दीजिए, जो सदा संतों द्वारा सेवित है, गुप्त है, और जिससे पुराण पुरुष (प्राचीन पुरुष) को प्राप्त किया जा सकता है।"
व्याख्या:इस प्रथम मन्त्र में अश्वलायन ऋषि ब्रह्मा जी के पास जाकर उनसे उच्चतम ब्रह्मविद्या का ज्ञान प्राप्त करने की याचना करते हैं। इस ज्ञान की विशेषता यह है कि यह सदैव सच्चे साधकों द्वारा प्रतिष्ठित है और अत्यंत गूढ़ (गुप्त) है। यह ब्रह्मविद्या पुराण पुरुष या परमात्मा को प्राप्त करने का साधन है। इस मन्त्र से यह संकेत मिलता है कि ब्रह्मविद्या की प्राप्ति एक योग्य गुरु से ही संभव है और इसके लिए श्रद्धातथा समर्पण आवश्यक है।

मन्त्र २
𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫 𑇒

तस्मै स होवाच पितामहश्च –
श्रद्धाभक्तिध्यानयोगादवैहि॥

𑆠𑆱𑇀𑆩𑆽 𑆱 𑆲𑆾𑆮𑆳𑆖 𑆥𑆴𑆠𑆳𑆩𑆲𑆯𑇀𑆖 –
𑆯𑇀𑆫𑆢𑇀𑆣𑆳𑆨𑆑𑇀𑆠𑆴𑆣𑇀𑆪𑆳𑆤𑆪𑆾𑆓𑆳𑆢𑆮𑆽𑆲𑆴𑇆

अर्थ - उस को (अश्वलायन ऋषि को) परमपिता ब्रह्मा जी ने कहा...
'यह परम सत्य श्रद्धा, भक्ति एवं ध्यान से जाना जा सकता है'।
व्याख्या – स्वयं अनावरण की प्रक्रिया में निर्देशित पथ पर चलना विद्यार्थी को स्वयं ही है , यदि उसे सत्यकी आत्मिक
खोज में सफल होना है। ये सभी बातें छात्र अश्वलायन ऋषि को ज्ञात थीं, क्योंकि वह स्वयं ही इस क्षेत्र में पहले से शिक्षक थे। इसलिए कम से कम शब्दों में महान शिक्षक ब्रह्मा जी, यहाँ अपनेउत्तर के प्रारंभिक शब्दों में ही विकास के साधनों और तकनीक की ओर संकेत करते हैं। ब्रह्मा जीअश्वलायन ऋषि को उपदेश देते हुए बताते हैं कि ब्रह्मविद्या को प्राप्त करने के लिए श्रद्धा, भक्ति, ध्यानऔर योग की आवश्यकता है। श्रद्धा का अर्थ है गुरु और विद्या में अटूट विश्वास। भक्ति का अर्थ है प्रेम और समर्पण की भावना। ध्यान का अर्थ है मन को एकाग्र करके आत्मा में स्थिर करना। योग का अर्थ है आत्मा और परमात्मा का मिलन । इन चारों साधनों के द्वारा साधक ब्रह्मविद्या को प्राप्त कर।

मन्त्र ३
𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫 𑇓

न कर्मणा न प्रजया धनेन
त्यागेनैके अमृतत्वमानुशुः।
परेण नाकं निहितं गुहायां
विभ्राजते यद्यतयो विशन्ति॥

𑆤 𑆑𑆫𑇀𑆩𑆟𑆳 𑆤 𑆥𑇀𑆫𑆘𑆪𑆳 𑆣𑆤𑆼𑆤
𑆠𑇀𑆪𑆳𑆓𑆼𑆤𑆽𑆑𑆼 𑆃𑆩𑆸𑆠𑆠𑇀𑆮𑆩𑆳𑆤𑆶𑆯𑆶𑆂𑇅
𑆥𑆫𑆼𑆟 𑆤𑆳𑆑𑆁 𑆤𑆴𑆲𑆴𑆠𑆁 𑆓𑆶𑆲𑆳𑆪𑆳𑆁
𑆮𑆴𑆨𑇀𑆫𑆳𑆘𑆠𑆼 𑆪𑆢𑇀𑆪𑆠𑆪𑆾 𑆮𑆴𑆯𑆤𑇀𑆠𑆴𑇆

अर्थ: न कर्म से, न संतति से, न धन से; केवल त्याग से ही कुछ लोग अमरत्व को प्राप्त हुए हैं। वह उच्चतम लोक, जो हृदय की गुफा में छिपा हुआ है, वहाँ तपस्वी प्रवेश करते हैं और वह प्रकाशमान है।
व्याख्या: इस श्लोक में यह बताया गया है कि अमरत्व या मोक्ष की प्राप्ति कर्म (कर्मकांड या सामाजिककार्यों) से, प्रजा(संतान) से या धन से नहीं हो सकती। इसका अर्थ है कि भौतिक उपलब्धियाँ, चाहे वेकितनी भी बड़ी क्यों न हों, आत्मा की मुक्ति के लिए पर्याप्त नहीं हैं।त्याग का अर्थ है सांसारिक सुखों, इच्छाओं और पदार्थों से दूर होना। केवल वही लोग अमरत्व को प्राप्त कर सकते हैं जिन्होंने अपने मन और आत्मा को सांसारिक मोह माया से मुक्त कर लिया है। यह त्याग केवल बाहरी नहीं बल्किआंतरिक भी होना चाहिए, जहां व्यक्ति अपने अहंकार, स्वार्थ और व्यक्तिगत इच्छाओं का त्याग करता है।श्लोक में 'गुहा' का उल्लेख हृदय की गुफा के रूप में किया गया है, यह वह स्थान है जहां परमात्मा का निवास होता है। यह स्थल हमारी आंतरिक आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है, जहां सच्ची आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

मन्त्र ४ :
𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫 𑇔 :

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः
संन्यासयोगाध्यतयः शुद्धसत्त्वाः।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले
परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे॥

𑆮𑆼𑆢𑆳𑆤𑇀𑆠𑆮𑆴𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆱𑆶𑆤𑆴𑆯𑇀𑆖𑆴𑆠𑆳𑆫𑇀𑆡𑆳𑆂
𑆱𑆁𑆤𑇀𑆪𑆳𑆱𑆪𑆾𑆓𑆳𑆣𑇀𑆪𑆠𑆪𑆂 𑆯𑆶𑆢𑇀𑆣𑆱𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆳𑆂𑇅
𑆠𑆼 𑆧𑇀𑆫𑆲𑇀𑆩𑆬𑆾𑆑𑆼𑆰𑆶 𑆥𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆑𑆳𑆬𑆼
𑆥𑆫𑆳𑆩𑆸𑆠𑆳𑆠𑇀𑆥𑆫𑆴𑆩𑆶𑆖𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆼𑇆

अर्थ : जो वेदांत विज्ञान से सुनिश्चित अर्थ वाले होते हैं, संन्यास योग का अभ्यास करते हैं, और शुद्धसत्त्व वाले होते हैं, वे सभी ब्रह्मलोक में, जीवन के अंत में, परम अमृत से मुक्त हो जाते हैं।
व्याख्या - इस श्लोक में उन साधकों की विशेषताओं और उनकी अंतिम प्राप्ति का वर्णन किया गया है जो मोक्ष की ओर अग्रसर होते हैं। वेदांत का ज्ञान वह ज्ञान है जो वेदों के अंत का या सार का प्रतिनिधित्व करता है। यह ज्ञान व्यक्ति को आत्मा और परमात्मा के वास्तविक स्वरूप की पहचान कराता है। वेदांत विज्ञान से सुनिश्चित अर्थ वाले लोग वे हैं जिन्होंने इस ज्ञान को समझा और आत्मसात कर लिया है। संन्यास योग का अभ्यास उन साधकों द्वारा किया जाता है जिन्होंने सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया है और आत्मा की खोज में लगे हुए हैं। यह योग मानसिक और शारीरिक अनुशासन के माध्यम से आत्मा की शुद्धि की प्रक्रिया है। या मन्त्र कहता है कि ऐसे साधक, जो वेदांत विज्ञान से सुनिश्चित अर्थ वाले, संन्यास योग का अभ्यास करने वाले और शुद्ध सत्त्व वाले होते हैं, वे अपने जीवन के अंत में ब्रह्मलोक मेंप्रवेश करते हैं।

Vijnana Bhairava Manuscript 1661 (contd.. Pages 5 to 8)

CST

कोर शारदा टीम द्वारा संकलन किया गया

In continuation to the last article on Vijnana Bhairava Manuscript 1661, we are publishing the next four pages of the same manuscript in this edition of Matrka. As mentioned earlier it the transliterated version of the original Manuscript.

Manuscript Description : Vijnanabhairava Manuscript 1661
Subject: Vijnana Bhairava with Shivopadhyaya commentary
Place: Oriental Research Library University Campus, Hazratbal. Dept of Libraries & Research, Municipal Complex, Karannagar, Srinagar.
Language: Sanskrit. Script: Sharada.
Folios: 111. Lines: 24 per folio. Size: 17.2x12.2cm.
Material: Paper. Colour: yellow. Complete

Page - 5

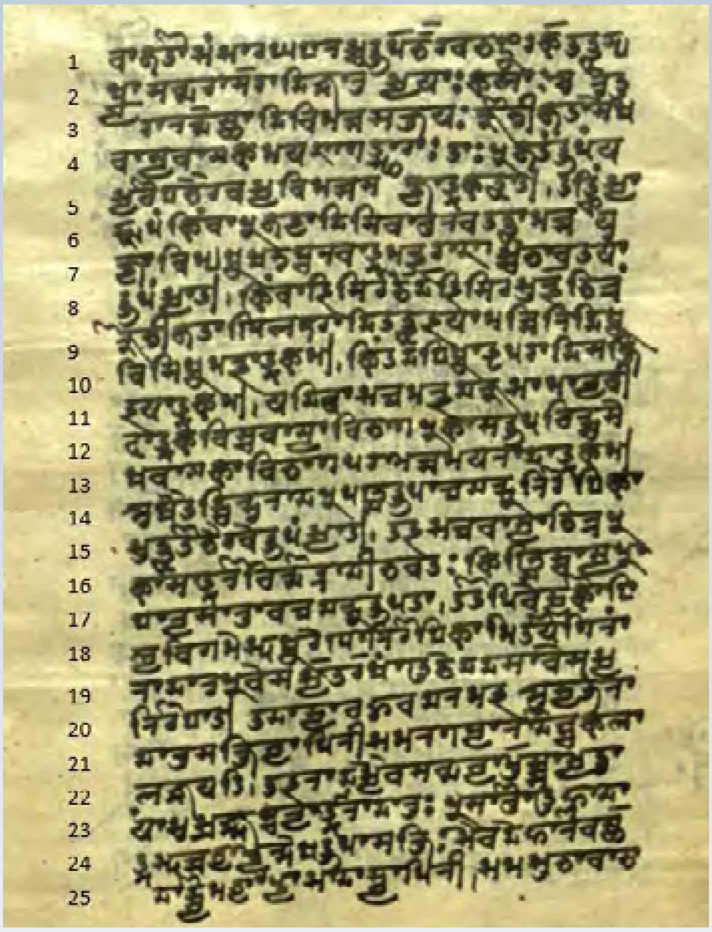

वाकृतौ संसारघटनस्वरूपे भैरवभट्टारके तत्त्वदृ
ष्ट्या शब्दराशेरादिक्ष्मान्तस्य याः कलाः अनुत्त
रानन्देच्छादिविमर्शशक्तयः क्रोडीकृताशेष
वाच्यवाचकमयजगत्स्फाराः ताः प्रकृतं रूपं य
स्य बोधभैरवस्य विमर्शशक्त्यात्मकत्वात्। तत्किं स्या
द्रूपं किं वा प्रकृत्यादिशिवान्तनवतत्त्वामर्शयु
क्त्या विमृष्टषडध्वनवात्ममन्त्रराजस्वभावत या
रूपं स्यात्। किं वा त्रिशिरोभेदे त्रिशिरस्तन्त्रे भिन्नं
क्रोडीकृताखिलहरादितत्त्वत्रयामर्शिनिर्दिष्ट
विशिष्टमन्त्रात्मकम्। किं तदधिष्ठातृपरादिशक्ति
त्रयात्मकम्। यदि वा सर्वमन्त्रचक्रसामान्यवी
र्यात्मकविश्ववाच्याविभागप्रकाशरूपबिन्दुशे
षवाचकाविभागपरामर्शमयनादात्मकम्।
अथैतद्बिन्दुनादप्रपञ्चरूपार्धचन्द्रनिरोधिका
स्तत्त्वतो भैरवे रूपं स्यात्। तत्र सर्ववाच्याभिन्नप्र
काशात्मनो बिन्दोर्नादीभवतः किञ्चिद्वाच्यप्रा
धान्यशान्तावर्धचन्द्ररूपता। ततो(ऽ)पि वेद्यकौटि
ल्यविगमे स्पष्टरेखा शिरोधिका मितयोगिनां
नादानुप्रवेशस्येतरेषां तु भेददशावेशस्य
निरोधात् तदाद्या बहुवचनमत्र आद्यर्थना
दान्तशक्तिव्यापिनीसमनाख्या नादोर्ध्वकला
लक्षयति। तत्र नादस्यैव शब्दव्याप्तेश्शाम्यत्ता
यां सुसूक्ष्मध्वन्यात्मा नादान्तः प्रशान्तौ तु ह्लादा
त्मस्पर्शव्याप्त्युन्मेषरूपा शक्तिः सैव देहानवच्छे
दाद्व्योमव्याप्त्या सादाद्व्यापिनीं(नीम्)। समस्तभावाभा

Page -6

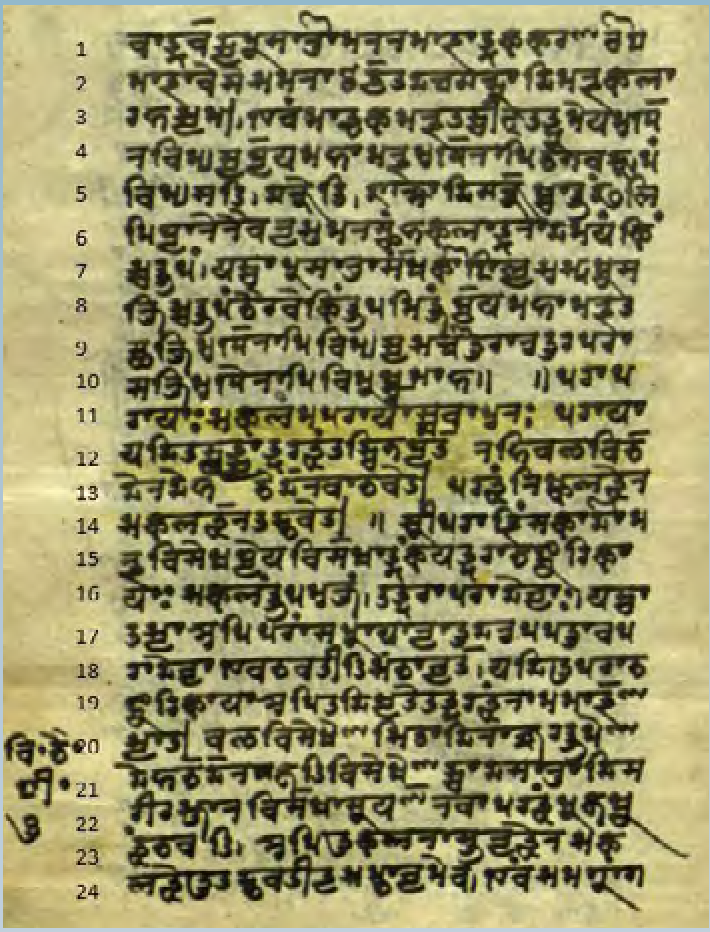

वात्मवेद्यप्रशान्तौ मननमात्रात्मककरणबोध
मात्रावेशे समना इत्येतदर्धचन्द्रादिमन्त्रकला
रहस्यम्। एवं मातृक(का)मन्त्रतद्वीर्यतत्प्रमेयमुखे
न विमृश्य ध्येयमहामन्त्रमुखेनापि भगवद्रूपं
विमृशति। चक्रेति। जन्मादिचक्रेष्वारूढं लि
पिध्यानेनैव न्यस्तमनच्कं हकलात्म नादमयं किं
स्वरूपं(पम्)। यद्वा प्रशान्ताशेषकौटिल्यसुस्पष्टश
क्तिस्वरूपं भैरवे किं रूपमित्थं ध्येयमहामन्त्रत
च्छक्तिमुखेनापि विमृश्य सर्वोत्तरानुत्तरपरा
शक्तिमुखेनापि विम्रष्टुमाह॥ ॥ पराप
राया: सकलमपरायाश्च वा पुन: पराया
यदि तद्वत्स्यात्परत्वं तद्विरुध्यते(॥५॥) न हि वर्णविभे
देन देहभेदेन वा भवेत् (।) परत्वं निष्कलत्वेन
सकलत्वे न तद्भवेत् ॥(६॥) श्रीपरात्रिंशकादौ म
न्त्रविशेषध्येयविशेषात्मकं यत्पराभट्टारिका
या: सकलं रूपमुक्तं, तत्परापरादेव्या: । यद्वा
तस्या अपि परांशप्राधान्यात्तदनुपपत्तावप
रादेव्या एव भवतीति संभाव्यते। यदि तु पराभ
ट्टारिकाया अपि तदिष्यते तत्परत्वं नाममात्रेण
स्यात् वर्णविशेषेण सितादिनाक्षररूपेण
देहभेदेन कृतिविशेषेण द्वादशान्तादिश
रीरस्थानविशेषाश्रयणेन वा परत्वं प्रकृष्ट
त्वं भवति। अपि तु कलनाशून्यत्वेन सक
लत्वे तु तद्भवतीत्यसम्भाव्यमेव। एवं समग्राग
वि भै टी ३

Page - 7

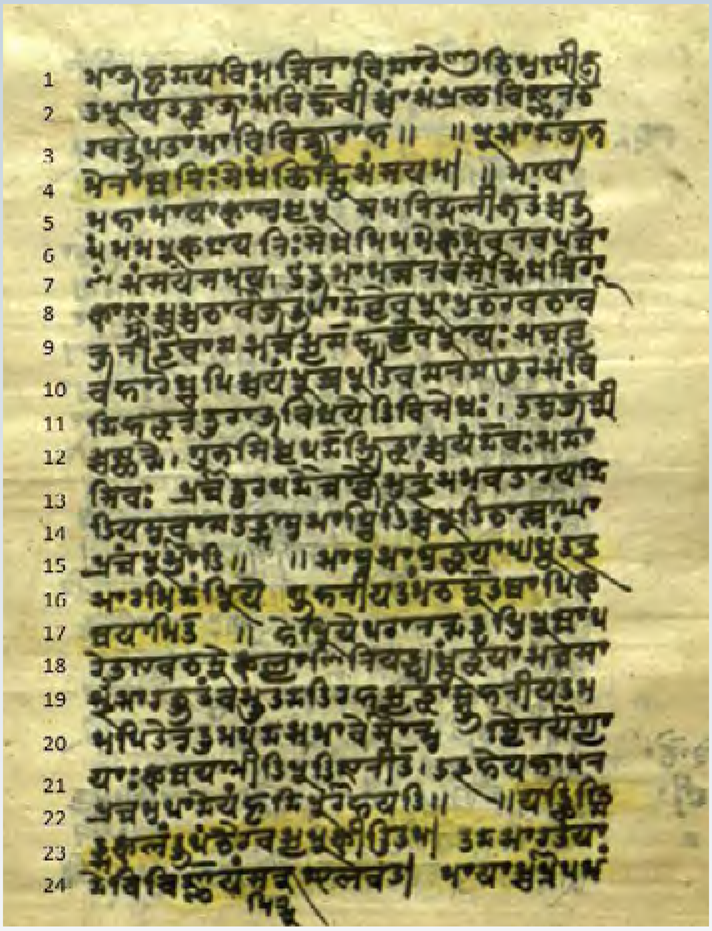

मार्थहृदयविमर्शिना विचारेणाभिमुखीकृ
तप्रायतत्त्वार्था संविद्देवी स्वां संपूर्णविज्ञानभै
रवरूपतामाविविक्षुराह ॥ ॥ प्रसादं कुरु
मे नाथ नि:शेषं छिन्द्धि संशयम् ॥(।) माया
महामायाकालुष्यप्र शमनिर्मलीकृतं स्वरू
पं मम प्रकटय नि:शेषमिममेकमेव नवपर्वा
णं संशयं शमय। इत्थमामर्शनवशोन्मिषन्निरा
काङ्क्षा स्वस्वभावोक्तरूपा देव्येव प्राप्तभैरवभावो
क्तनीत्योवाच सर्वस्य चेदृश्येव प्राय: सर्वव्य
वहारेष्वपि स्वयं प्रश्नप्रतिवचनचतुरसंवि
दिह त्वनुत्तरार्थविषयेति विशेष:। तदुक्तं श्री
स्वच्छन्दे। गुरुशिष्यपदे स्थित्वा स्वयं देव: सदा
शिव:(।) पूर्वोत्तरपदैर्वाक्यैस्तन्त्रं समवतारयदि
ति यदुवाच तत्साधु साध्विति स्वप्रतिभाश्लाघा
पूर्वं प्रस्तौति ॥ ॥ साधु साधु त्वया पृष्टं तन्त्र
सारमिदं प्रिये(॥७॥) गूहनीयतमं भद्रे तथापि क
थयामि ते ॥(।) हे प्रिये परानन्दतृप्तिप्रथाप
रे(ऽ)त एव भद्रे कल्याणि नियत्पृष्टं त्वया सर्वशा
स्त्रसारभूतं वस्तु तदतिरहस्यत्वाद्गूहनीयतम
मपि ते(ऽ)नुत्तमपदसमावेशोन्मुख्येन योग्या
या: कथयामीति प्रतिजानीते। तत्र हेयहापन
पूर्वमुपादेयं हृदि प्ररोहयति ॥ ॥ यत्किञ्चि
त्सकालं रूपं भैरवस्य प्रकीर्तितुम्(॥८॥) तदसारतया
देवि विज्ञेयं शक्र((मिन्द्र))जालवत्(।) मायास्वप्नोपमं

Page - 8

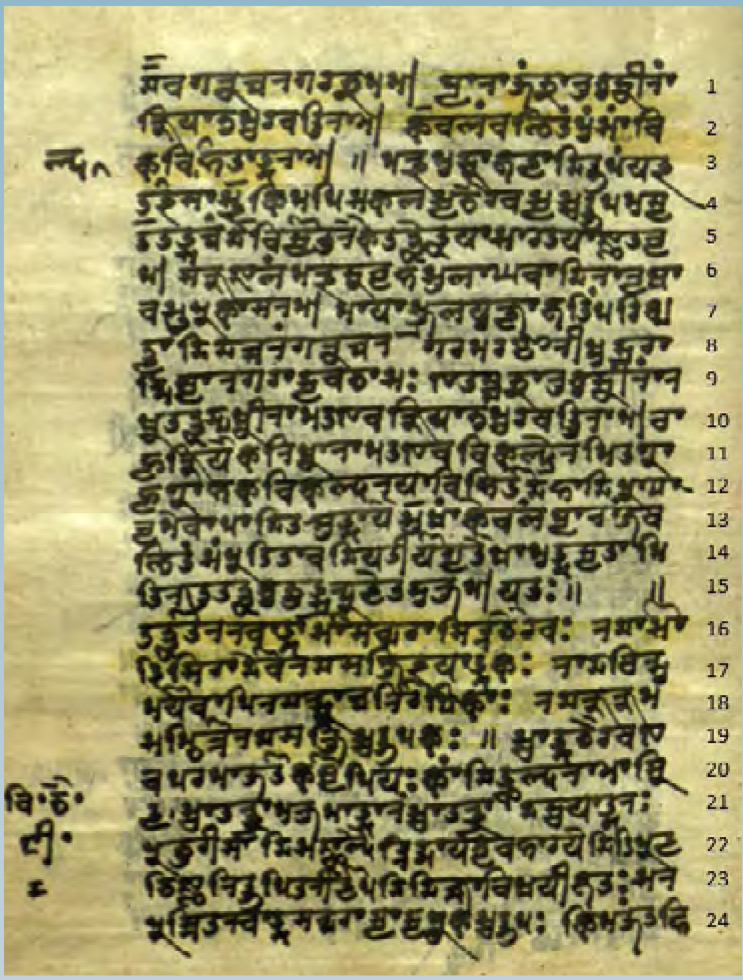

चैव गन्धर्वनगरभ्रमम् (॥९॥) ध्यानार्थं भ्रान्तबुद्धीनां क्रियाडम्बरवर्तिनाम् (।) केवलं वर्णितं पुंसां वि कल्पविहितात्मनाम् ॥ (१०॥) मन्त्रमुद्राकृत्यादिरूपं यत्र तत्र शास्त्रे किमपि सकलस्य भैरवस्य स्वरूपमुच्य ते तत्सर्वं देवि द्योतनैकतत्त्वे त्वयासारतया ज्ञातव्य म् (।) शक्रजालं मन्त्रद्रव्यहस्तलाघवादि नान्यथा वस्तुप्रकाशनम् (।) मायास्थूलयुक्त्याकृतिं परिवृ त्यादिदर्शनं गन्धर्वनगरमरण्यनीषु दूरा न्मिथ्यानगराद्यवभासः एतश्च भ्रान्तबुद्धीनां न ष्टतत्त्वदृष्टीनामत एव क्रियाडम्बरवर्त्तिनाम् (।) बा ह्यक्रियैकनिष्ठानामत एव विकल्पेन मितग्रा ह्यग्राहकविकल्पनयाविर्चितं देहादिप्राधा ह्यग्राहकविकल्पनया विहितो देहादिप्राधा न्यमेवापादित आत्मा यैस्तेषां केवलं ध्यानार्थं व र्णितं संप्रति तावदियती योग्यतैषामुत्पद्यतामि ति न तु तत्त्वबुभुत्सून्प्रत्येतदुक्तम्(।) यतः ॥ ॥ तत्त्वतो न नवात्मासौ शब्दराशिर्न भैरवः(।) न चासौ त्रिशिरादेवो न च शक्तित्रयात्मकः(॥११॥) नादबिन्दु मयो वापि न चन्द्रार्धनिरोधिकाः(।) न चक्रक्रम सम्भिन्नो न च शक्तिस्वरूपकः ॥(१२॥) स्वात्मभैरव ए व परमार्थतो कश्यो(थ्यो5)पि यः कांचित्कल्पनामाश्रि त्य। स्वातन्त्र्यामुक्तमात्मानं स्वातन्त्र्याददृयात्मनः(।) प्रभुरीशादिसङ्कल्पैर्निर्माय व्यवहारयेदिति प्रत्य भिज्ञानिरूपितनीत्योपदिदिक्षाविषयीकृतः स न प्रश्नितनवात्मशब्दराश्याद्यष्टकस्वरूपः(॥) किमर्थं तर्हि

वि भै टी ४

ज्ञान का दीपक जलाओ / 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤 𑆑𑆳 𑆢𑆵𑆥𑆑 𑆘𑆬𑆳𑆍

Deepak Sopory

ज्ञान का दीपक जलाओ,
शारदा सीखो , सिखाओ।

मातृलिपि में प्राण फूँको,
माँ का इतना ऋण चुकाओ।
लुप्त है अस्तित्व अपना,
गुप्त गंगा फिर बहाओ।

तंत्र, त्रिक , शिव-सूत्र को तुम,
विश्व से अवगत कराओ।
एक अभिनव, एक ललद्यद,
अपने भीतर भी जगाओ।

हमने क्या क्या खो दिया है,
गीत गाकर गुनगुनाओ।

लेखनी है शस्त्र अपना,
बढ़के हाथों में उठाओ।

ज्ञान की प्रावेशिका पर,
एक पग अपना बढ़ाओ।

𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤 𑆑𑆳 𑆢𑆵𑆥𑆑 𑆘𑆬𑆳𑆍,
𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆱𑆵𑆒𑆾 , 𑆱𑆴𑆒𑆳𑆍𑇅
𑆩𑆳𑆠𑆸𑆬𑆴𑆥𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆟 𑆦𑆷𑆀𑆑𑆾,
𑆩𑆳𑆀 𑆑𑆳 𑆅𑆠𑆤𑆳 𑆉𑆟 𑆖𑆶𑆑𑆳𑆍𑇅
𑆬𑆶𑆥𑇀𑆠 𑆲𑆽 𑆃𑆱𑇀𑆠𑆴𑆠𑇀𑆮 𑆃𑆥𑆤𑆳,
𑆓𑆶𑆥𑇀𑆠 𑆓𑆁𑆓𑆳 𑆦𑆴𑆫 𑆧𑆲𑆳𑆍𑇅
𑆠𑆁𑆠𑇀𑆫, 𑆠𑇀𑆫𑆴𑆑 , 𑆯𑆴𑆮-𑆱𑆷𑆠𑇀𑆫 𑆑𑆾 𑆠𑆶𑆩,
𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮 𑆱𑆼 𑆃𑆮𑆓𑆠 𑆑𑆫𑆳𑆍𑇅
𑆋𑆑 𑆃𑆨𑆴𑆤𑆮, 𑆋𑆑 𑆬𑆬𑆢𑇀𑆪𑆢,
𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆨𑆵𑆠𑆫 𑆨𑆵 𑆘𑆓𑆳𑆍𑇅
𑆲𑆩𑆤𑆼 𑆑𑇀𑆪𑆳 𑆑𑇀𑆪𑆳 𑆒𑆾 𑆢𑆴𑆪𑆳 𑆲𑆽,
𑆓𑆵𑆠 𑆓𑆳𑆑𑆫 𑆓𑆶𑆤𑆓𑆶𑆤𑆳𑆍𑇅
𑆬𑆼𑆒𑆤𑆵 𑆲𑆽 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆃𑆥𑆤𑆳,
𑆧𑆞𑇊𑆑𑆼 𑆲𑆳𑆡𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆇𑆜𑆳𑆍𑇅
𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤 𑆑𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆮𑆼𑆯𑆴𑆑𑆳 𑆥𑆫,
𑆋𑆑 𑆥𑆓 𑆃𑆥𑆤𑆳 𑆧𑆞𑇊𑆳𑆍𑇅

वाकृतौ संसारघटनस्वरूपे भैरवभट्टारके तत्त्वदृष्ट्या शब्दराशेरादिक्ष्मा(क्षा)न्तस्य

याः कलाः अनुत्तरानन्देच्छादिविमर्शशक्तयः क्रोडीकृताशेषवाच्यवाचकमय जगत्स्फाराः

ताः प्रकृतं रूपं यस्य बोधभैरवस्य विमर्शशक्त्यात्मकत्वात् तत्किंस्याद्रूपं (।)

किं वा प्रकृत्यादिशिवान्तनवतत्त्वामर्शयुक्त्या विमृष्टषडध्वनवात्ममत्रराजस्व भावतया रूपं स्यात् ।

किं वा त्रिशिरोभेदे त्रिशिरस्तन्त्रे भिन्नं क्रोडीकृताखिलहरादितत्त्वत्रयामर्शिनिर्दिष्टविशिष्टमन्त्रात्मकम् ।

किं तदधिष्ठातृपरादिशक्ति त्रयात्मकम् । यदि वा सर्वमन्त्रचक्रसामान्यवीर्यात्मकविश्ववाच्याविभागप्रकाशरूपबिन्दुशेषवाचकाविभागपरामर्शमयनादात्मकम्। अथैतद्बिन्दुनादप्रपञ्चरूपार्धचन्द्रनिरोधिकास्तत्त्वतो भैरवे रूपं स्यात् ।

तत्र सर्ववाच्याभिन्नप्रकाशात्मनो बिन्दोर्नादीभवतः किञ्चिद्वाच्यप्राधान्यशान्तावर्धचन्द्ररूपता ।

ततो(ऽ)पि वेद्यकौटिल्यविगमे स्पष्टरेखा शिरोधिका मितयोगिनांनादानुप्रवेशस्येतरेषां तु भेददशावेशस्य निरोधात् तदाद्या बहुवचनमत्र आद्यर्थनादान्तशक्तिव्यापिनीसमनाख्या नादोर्ध्वकला लक्षयति ।

तत्र नादस्यैव शब्दव्याप्तेश्शाम्यत्ता यां सुसूक्ष्मध्वन्यात्मा नादान्तः

प्रशान्तौ तु ह्लादात्मस्पर्शव्याप्त्युन्मेषरूपा शक्तिः सैव देहानवच्छेदाद्व्योमव्याप्त्या सादाद्व्यापिनीं(नीम्)। समस्तभावाभा

वात्मवेद्यप्रशान्तौ मननमात्रात्मककरणबोधमात्रावेशे समना इत्येतदर्धचन्द्रादि मन्त्रकलारहस्यम् ।

एवं मातृक(का)मन्त्रतद्वीर्यतत्प्रमेयमुखेन विमृश्य ध्येयमहामन्त्रमुखेनापि भगवद्रूपं विमृशति । चक्रेति । जन्मादिचक्रेष्वारूढं लिपिध्यानेनैव न्यस्तमनच्कं हकलात्म नादमयं किं स्वरूपं(पम्) ।

यद्वा प्रशान्ताशेषकौटिल्यसुस्पष्टशक्तिस्वरूपं भैरवे किं रूपमित्थं

ध्येयमहामन्त्रतच्छक्तिमुखेनापि विमृश्य सर्वोत्तरानुत्तरपराशक्तिमुखेनापि विम्रष्टुमाह ॥ ॥

परापरायाः सकलमपरायाश्च वा पुनः(।)

परायायदि तद्वत्स्यात्परत्वं तद्विरुध्यते (॥५॥)

न हि वर्णविभेदेन देहभेदेन वा भवेत् (।)

परत्वं निष्कलत्वेनसकलत्वे न तद्भवेत् ॥(६॥)

श्रीपरात्रिंशकादौ मन्त्रविशेषध्येयविशेषात्मकं यत्पराभट्टारिकायाः सकलं

𑆮𑆳𑆑𑆸𑆠𑆿 𑆱𑆁𑆱𑆳𑆫𑆔𑆛𑆤𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆼 𑆨𑆽𑆫𑆮𑆨𑆛𑇀𑆛𑆳𑆫𑆑𑆼 𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑇀𑆪𑆳 𑆯𑆧𑇀𑆢𑆫𑆳𑆯𑆼𑆫𑆳𑆢𑆴𑆑𑇀𑆰𑇀𑆩𑆳(𑆑𑇀𑆰𑆳)𑆤𑇀𑆠𑆱𑇀𑆪
𑆪𑆳𑆂 𑆑𑆬𑆳𑆂 𑆃𑆤𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫𑆳𑆤𑆤𑇀𑆢𑆼𑆖𑇀𑆗𑆳𑆢𑆴𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯𑆯𑆑𑇀𑆠𑆪𑆂 𑆑𑇀𑆫𑆾𑆝𑆵𑆑𑆸𑆠𑆳𑆯𑆼𑆰𑆮𑆳𑆖𑇀𑆪𑆮𑆳𑆖𑆑𑆩𑆪
𑆘𑆓𑆠𑇀𑆱𑇀𑆦𑆳𑆫𑆳𑆂
𑆠𑆳𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆸𑆠𑆁 𑆫𑆷𑆥𑆁 𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆧𑆾𑆣𑆨𑆽𑆫𑆮𑆱𑇀𑆪 𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯𑆯𑆑𑇀𑆠𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆑𑆠𑇀𑆮𑆳𑆠𑇀𑇅 𑆠𑆠𑇀𑆑𑆴𑆁𑆱𑇀𑆪𑆳𑆢𑇀𑆫𑆷𑆥𑆁 (𑇅)
𑆑𑆴𑆁 𑆮𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆸𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴𑆯𑆴𑆮𑆳𑆤𑇀𑆠𑆤𑆮𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆳𑆩𑆫𑇀𑆯𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑇀𑆪𑆳 𑆮𑆴𑆩𑆸𑆰𑇀𑆛𑆰𑆝𑆣𑇀𑆮𑆤𑆮𑆳𑆠𑇀𑆩𑆩𑆠𑇀𑆫𑆫𑆳𑆘𑆱𑇀𑆮
𑆨𑆳𑆮𑆠𑆪𑆳 𑆫𑆷𑆥𑆁 𑆱𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀 𑇅
𑆑𑆴𑆁 𑆮𑆳 𑆠𑇀𑆫𑆴𑆯𑆴𑆫𑆾𑆨𑆼𑆢𑆼 𑆠𑇀𑆫𑆴𑆯𑆴𑆫𑆱𑇀𑆠𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆨𑆴𑆤𑇀𑆤𑆁 𑆑𑇀𑆫𑆾𑆝𑆵𑆑𑆸𑆠𑆳𑆒𑆴𑆬𑆲𑆫𑆳𑆢𑆴𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆠𑇀𑆫𑆪𑆳𑆩𑆫𑇀𑆯𑆴𑆤𑆴
𑆫𑇀𑆢𑆴𑆰𑇀𑆛𑆮𑆴𑆯𑆴𑆰𑇀𑆛𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆳𑆠𑇀𑆩𑆑𑆩𑇀 𑇅
𑆑𑆴𑆁 𑆠𑆢𑆣𑆴𑆰𑇀𑆜𑆳𑆠𑆸𑆥𑆫𑆳𑆢𑆴𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴 𑆠𑇀𑆫𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆑𑆩𑇀 𑇅 𑆪𑆢𑆴 𑆮𑆳 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆖𑆑𑇀𑆫𑆱𑆳𑆩𑆳𑆤𑇀𑆪𑆮𑆵𑆫𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩
𑆑𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆮𑆳𑆖𑇀𑆪𑆳𑆮𑆴𑆨𑆳𑆓𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆫𑆷𑆥𑆧𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆯𑆼𑆰𑆮𑆳𑆖𑆑𑆳𑆮𑆴𑆨𑆳𑆓𑆥𑆫𑆳𑆩𑆫𑇀𑆯𑆩𑆪𑆤𑆳
𑆢𑆳𑆠𑇀𑆩𑆑𑆩𑇀𑇅
𑆃𑆡𑆽𑆠𑆢𑇀𑆧𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆳𑆢𑆥𑇀𑆫𑆥𑆚𑇀𑆖𑆫𑆷𑆥𑆳𑆫𑇀𑆣𑆖𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆤𑆴𑆫𑆾𑆣𑆴𑆑𑆳𑆱𑇀𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆠𑆾 𑆨𑆽𑆫𑆮𑆼 𑆫𑆷𑆥𑆁 𑆱𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀 𑇅
𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆮𑆳𑆖𑇀𑆪𑆳𑆨𑆴𑆤𑇀𑆤𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆳𑆠𑇀𑆩𑆤𑆾 𑆧𑆴𑆤𑇀𑆢𑆾𑆫𑇀𑆤𑆳𑆢𑆵𑆨𑆮𑆠𑆂 𑆑𑆴𑆚𑇀𑆖𑆴𑆢𑇀𑆮𑆳𑆖𑇀𑆪𑆥𑇀𑆫𑆳𑆣𑆳𑆤𑇀𑆪𑆯𑆳𑆤𑇀
𑆠𑆳𑆮𑆫𑇀𑆣𑆖𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆫𑆷𑆥𑆠𑆳 𑇅
𑆠𑆠𑆾(𑇁)𑆥𑆴 𑆮𑆼𑆢𑇀𑆪𑆑𑆿𑆛𑆴𑆬𑇀𑆪𑆮𑆴𑆓𑆩𑆼 𑆱𑇀𑆥𑆰𑇀𑆛𑆫𑆼𑆒𑆳 𑆯𑆴𑆫𑆾𑆣𑆴𑆑𑆳 𑆩𑆴𑆠𑆪𑆾𑆓𑆴𑆤𑆳𑆁𑆤𑆳𑆢𑆳𑆤𑆶𑆥𑇀𑆫𑆮𑆼𑆯
𑆱𑇀𑆪𑆼𑆠𑆫𑆼𑆰𑆳𑆁 𑆠𑆶 𑆨𑆼𑆢𑆢𑆯𑆳𑆮𑆼𑆯𑆱𑇀𑆪 𑆤𑆴𑆫𑆾𑆣𑆳𑆠𑇀 𑆠𑆢𑆳𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆧𑆲𑆶𑆮𑆖𑆤𑆩𑆠𑇀𑆫 𑆃𑆢𑇀𑆪𑆫𑇀𑆡𑆤𑆳𑆢𑆳𑆤𑇀𑆠𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆮𑇀
𑆪𑆳𑆥𑆴𑆤𑆵𑆱𑆩𑆤𑆳𑆒𑇀𑆪𑆳 𑆤𑆳𑆢𑆾𑆫𑇀𑆣𑇀𑆮𑆑𑆬𑆳 𑆬𑆑𑇀𑆰𑆪𑆠𑆴 𑇅
𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆤𑆳𑆢𑆱𑇀𑆪𑆽𑆮 𑆯𑆧𑇀𑆢𑆮𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆠𑆼𑆯𑇀𑆯𑆳𑆩𑇀𑆪𑆠𑇀𑆠𑆳 𑆪𑆳𑆁 𑆱𑆶𑆱𑆷𑆑𑇀𑆰𑇀𑆩𑆣𑇀𑆮𑆤𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆳 𑆤𑆳𑆢𑆳𑆤𑇀𑆠𑆂
𑆥𑇀𑆫𑆯𑆳𑆤𑇀𑆠𑆿 𑆠𑆶 𑆲𑇀𑆬𑆳𑆢𑆳𑆠𑇀𑆩𑆱𑇀𑆥𑆫𑇀𑆯𑆮𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆠𑇀𑆪𑆶𑆤𑇀𑆩𑆼𑆰𑆫𑆷𑆥𑆳 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆂 𑆱𑆽𑆮 𑆢𑆼𑆲𑆳𑆤𑆮𑆖𑇀𑆗𑆼𑆢𑆳𑆢𑇀𑆮𑇀𑆪𑆾𑆩𑆮𑇀𑆪𑆳𑆥𑇀𑆠𑇀𑆪𑆳
𑆱𑆳𑆢𑆳𑆢𑇀𑆮𑇀𑆪𑆳𑆥𑆴𑆤𑆵𑆁(𑆤𑆵𑆩𑇀)𑇅 𑆱𑆩𑆱𑇀𑆠𑆨𑆳𑆮𑆳𑆨𑆳
𑆮𑆳𑆠𑇀𑆩𑆮𑆼𑆢𑇀𑆪𑆥𑇀𑆫𑆯𑆳𑆤𑇀𑆠𑆿 𑆩𑆤𑆤𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳𑆠𑇀𑆩𑆑𑆑𑆫𑆟𑆧𑆾𑆣𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫𑆳𑆮𑆼𑆯𑆼 𑆱𑆩𑆤𑆳 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆼𑆠𑆢𑆫𑇀𑆣𑆖𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆳𑆢𑆴
𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆑𑆬𑆳𑆫𑆲𑆱𑇀𑆪𑆩𑇀 𑇅
𑆍𑆮𑆁 𑆩𑆳𑆠𑆸𑆑(𑆑𑆳)𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆠𑆢𑇀𑆮𑆵𑆫𑇀𑆪𑆠𑆠𑇀𑆥𑇀𑆫𑆩𑆼𑆪𑆩𑆶𑆒𑆼𑆤 𑆮𑆴𑆩𑆸𑆯𑇀𑆪 𑆣𑇀𑆪𑆼𑆪𑆩𑆲𑆳𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆩𑆶𑆒𑆼𑆤𑆳𑆥𑆴
𑆨𑆓𑆮𑆢𑇀𑆫𑆷𑆥𑆁 𑆮𑆴𑆩𑆸𑆯𑆠𑆴𑇅 𑆖𑆑𑇀𑆫𑆼𑆠𑆴𑇅 𑆘𑆤𑇀𑆩𑆳𑆢𑆴𑆖𑆑𑇀𑆫𑆼𑆰𑇀𑆮𑆳𑆫𑆷𑆞𑆁 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆣𑇀𑆪𑆳𑆤𑆼𑆤𑆽𑆮
𑆤𑇀𑆪𑆱𑇀𑆠𑆩𑆤𑆖𑇀𑆑𑆁 𑆲𑆑𑆬𑆳𑆠𑇀𑆩 𑆤𑆳𑆢𑆩𑆪𑆁 𑆑𑆴𑆁 𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆁(𑆥𑆩𑇀)𑇅
𑆪𑆢𑇀𑆮𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆯𑆳𑆤𑇀𑆠𑆳𑆯𑆼𑆰𑆑𑆿𑆛𑆴𑆬𑇀𑆪𑆱𑆶𑆱𑇀𑆥𑆰𑇀𑆛𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆁 𑆨𑆽𑆫𑆮𑆼 𑆑𑆴𑆁 𑆫𑆷𑆥𑆩𑆴𑆠𑇀𑆡𑆁
𑆣𑇀𑆪𑆼𑆪𑆩𑆲𑆳𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆠𑆖𑇀𑆗𑆑𑇀𑆠𑆴𑆩𑆶𑆒𑆼𑆤𑆳𑆥𑆴 𑆮𑆴𑆩𑆸𑆯𑇀𑆪 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆾𑆠𑇀𑆠𑆫𑆳𑆤𑆶𑆠𑇀𑆠𑆫𑆥𑆫𑆳𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆩𑆶𑆒𑆼𑆤𑆳𑆥𑆴
𑆮𑆴𑆩𑇀𑆫𑆰𑇀𑆛𑆶𑆩𑆳𑆲 𑇆 𑇆
𑆥𑆫𑆳𑆥𑆫𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆱𑆑𑆬𑆩𑆥𑆫𑆳𑆪𑆳𑆯𑇀𑆖 𑆮𑆳 𑆥𑆶𑆤𑆂(𑇅)
𑆥𑆫𑆳𑆪𑆳𑆪𑆢𑆴 𑆠𑆢𑇀𑆮𑆠𑇀𑆱𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆥𑆫𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆠𑆢𑇀𑆮𑆴𑆫𑆶𑆣𑇀𑆪𑆠𑆼 (𑇆𑇕𑇆)
𑆤 𑆲𑆴 𑆮𑆫𑇀𑆟𑆮𑆴𑆨𑆼𑆢𑆼𑆤 𑆢𑆼𑆲𑆨𑆼𑆢𑆼𑆤 𑆮𑆳 𑆨𑆮𑆼𑆠𑇀 (𑇅)
𑆥𑆫𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆤𑆴𑆰𑇀𑆑𑆬𑆠𑇀𑆮𑆼𑆤𑆱𑆑𑆬𑆠𑇀𑆮𑆼 𑆤 𑆠𑆢𑇀𑆨𑆮𑆼𑆠𑇀 𑇆(𑇖𑇆)

रूपमुक्तं, तत्परापरादेव्याः ।

यद्वा तस्या अपि परांशप्राधान्यात्तदनुपपत्तावपरादेव्या एव भवतीति संभाव्यते ।

यदि तु पराभट्टारिकाया अपि तदिष्यते तत्परत्वं नाममात्रेणस्यात्

वर्णविशेषेण सितादिनाक्षररूपेण देहभेदेन कृतिविशेषेण द्वादशान्तादिशरीरस्थान विशेषाश्रयणेन वा परत्वं प्रकृष्टत्वं भवति । अपि तु कलनाशून्यत्वेन सकलत्वे तु तद्भवतीत्यसम्भाव्यमेव ।

एवं समग्राग

वि भै टी ३

मार्थहृदयविमर्शिना विचारेणाभिमुखीकृतप्रायतत्त्वार्था संविद्देवी स्वां संपूर्णविज्ञान भैरवरूपतामाविविक्षुराह ॥ ॥

प्रसादं कुरुमे नाथ निःशेषं छिन्धि संशयम् ॥(।)

माया महामायाकालुष्यप्रशमनिर्मलीकृतं स्वरूपं मम प्रकटय निःशेषमिममेकमेव नवपर्वाणं संशयं शमय ।

इत्थमामर्शनवशोन्मिषन्निराकाङ्क्षा स्वस्वभावोक्तरूपा देव्येव प्राप्तभैरवभावोक्तनीत्योवाच सर्वस्य चेद्दृश्येव प्रायः सर्वव्यवहारेष्वपि स्वयं प्रश्नप्रतिवचनचतुरसंविदिह त्वनुत्तरार्थविषयेति विशेषः।

तदुक्तं श्री स्वच्छन्दे।

गुरुशिष्यपदे स्थित्वा स्वयं देवः सदाशिवः(।)

पूर्वोत्तरपदैर्वाक्यैस्तन्त्रं समवतारयदिति

यदुवाच तत्साधु साध्विति स्वप्रतिभाश्लाघा पूर्वं प्रस्तौति ॥ ॥

साधु साधु त्वया पृष्टं तन्त्रसारमिदं प्रिये(।।७।।)

गूहनीयतमं भद्रे तथापि कथयामि ते ॥(।)

हे प्रिये परानन्दतृप्तिप्रथापरे(ऽ)त एव भद्रे कल्याणि नियत्पृष्टं त्वया सर्वशास्त्रसारभूतं वस्तु तदतिरहस्यत्वाद्गूहनीयतममपि ते(ऽ) नुत्तमपदसमावेशोन्मुख्येन योग्या याः कथयामीति प्रतिजानीते ।

तत्र हेयहापन पूर्वमुपादेयं हृदि प्रोहयति ॥ ॥

यत्किञ्चित्सकालं रूपं भैरवस्य प्रकीर्तितुम्(।।८।।)

तदसारतया देवि विज्ञेयं शक्र(मिन्द्र)जालवत्(।)

मायास्वप्नोपमं

चैव गन्धर्वनगरभ्रमम् (।।९।।)

ध्यानार्थं भ्रान्तबुद्धीनां क्रियाडम्बरवर्तिनाम् (।)

केवलं वर्णितं पुंसां विकल्पविहितात्मनाम् ॥ (१०॥)

मन्त्रमुद्राकृत्यादिरूपं यत्र तत्र शास्त्रे किमपि सकलस्य भैरवस्य स्वरूपमुच्यते

तत्सर्वं देवि द्योतनैकतत्त्वे त्वयासारतया ज्ञातव्यम् (।) शक्रजालं मन्त्रद्रव्यहस्तलाघवादिनान्यथा वस्तुप्रकाशनम् (।) मायास्थूलयुक्त्याकृतिं परिवृत्त्यादिदर्शनं गन्धर्वनगरमरण्यनीषु दूरान्मिथ्यानगराद्यवभासः

एतश्च भ्रान्तबुद्धीनां नष्टतत्त्वदृष्टीनामत एव क्रियाडम्बरवर्त्तिनाम् (।) बाह्यक्रियैकनिष्ठानामत एव विकल्पेन मितग्राह्यग्राहकविकल्पनयाविर्
चितं देहादिप्राधाह्यग्राहकविकल्पनया विहितो देहादिप्राधान्यमेवापादित आत्मायैस्तेषां केवलं ध्यानार्थं वर्णितं

संप्रति तावदियती योग्यतैषामुत्पद्यतामिति न तु तत्त्वबुभुत्सून्प्रत्येतदुक्तम् (।)
यतः ॥ ॥
तत्त्वतो न नवात्मासौ शब्दराशिर्न भैरवः(।)

न चासौ त्रिशिरादेवो न च शक्तित्रयात्मकः(॥११॥)

नादबिन्दुमयो वापि न चन्द्रार्धनिरोधिकाः(।)

न चक्रक्रमसम्भिन्नो न च शक्तिस्वरूपकः ॥(१२॥)

स्वात्मभैरव एव परमार्थतो कश्यो(थ्योऽ)पि यः कांचित्कल्पनामाश्रित्य।

स्वातन्त्र्यामुक्तमात्मानं स्वातन्त्र्याद्द्वयात्मनः(।)
प्रभुरीशादिसङ्कल्पैर्निर्माय व्यवहारयेदिति

प्रत्यभिज्ञानिरूपितनीत्योपदिदिक्षाविषयीकृतः स न प्रश्नितनवात्मशब्दराश्याद्
यष्टकस्वरूपः(॥)

किमर्थं तर्हि
वि भै टी ४

𑆠𑆠𑇀𑆱𑆫𑇀𑆮𑆁 𑆢𑆼𑆮𑆴 𑆢𑇀𑆪𑆾𑆠𑆤𑆽𑆑𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆼 𑆠𑇀𑆮𑆪𑆳𑆱𑆳𑆫𑆠𑆪𑆳 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆠𑆮𑇀𑆪𑆩𑇀 (𑇅) 𑆯𑆑𑇀𑆫𑆘𑆳𑆬𑆁
𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆢𑇀𑆫𑆮𑇀𑆪𑆲𑆱𑇀𑆠𑆬𑆳𑆔𑆮𑆳𑆢𑆴𑆤𑆳𑆤𑇀𑆪𑆡𑆳 𑆮𑆱𑇀𑆠𑆶𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆤𑆩𑇀 (𑇅) 𑆩𑆳𑆪𑆳𑆱𑇀𑆡𑆷𑆬𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑇀𑆪𑆳𑆑𑆸𑆠𑆴𑆁
𑆥𑆫𑆴𑆮𑆸𑆠𑇀𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴𑆢𑆫𑇀𑆯𑆤𑆁 𑆓𑆤𑇀𑆣𑆫𑇀𑆮𑆤𑆓𑆫𑆩𑆫𑆟𑇀𑆪𑆤𑆵𑆰𑆶 𑆢𑆷𑆫𑆳𑆤𑇀𑆩𑆴𑆡𑇀𑆪𑆳𑆤𑆓𑆫𑆳𑆢𑇀𑆪𑆮𑆨𑆳𑆱𑆂
𑆍𑆠𑆯𑇀𑆖 𑆨𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆧𑆶𑆢𑇀𑆣𑆵𑆤𑆳𑆁 𑆤𑆰𑇀𑆛𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑆵𑆤𑆳𑆩𑆠 𑆍𑆮 𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆳𑆝𑆩𑇀𑆧𑆫𑆮𑆫𑇀𑆠𑇀𑆠𑆴𑆤𑆳𑆩𑇀
(𑇅) 𑆧𑆳𑆲𑇀𑆪𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆽𑆑𑆤𑆴𑆰𑇀𑆜𑆳𑆤𑆳𑆩𑆠 𑆍𑆮 𑆮𑆴𑆑𑆬𑇀𑆥𑆼𑆤 𑆩𑆴𑆠𑆓𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆪𑆓𑇀𑆫𑆳𑆲𑆑𑆮𑆴
𑆑𑆬𑇀𑆥𑆤𑆪𑆳 𑆮𑆴𑆫𑇀𑆖𑆴𑆠𑆁 𑆢𑆼𑆲𑆳𑆢𑆴𑆥𑇀𑆫𑆳𑆣𑆳𑆲𑇀𑆪𑆓𑇀𑆫𑆳𑆲𑆑𑆮𑆴𑆑𑆬𑇀𑆥𑆤𑆪𑆳 𑆮𑆴𑆲𑆴𑆠𑆾
𑆢𑆼𑆲𑆳𑆢𑆴𑆥𑇀𑆫𑆳𑆣𑆳𑆤𑇀𑆪𑆩𑆼𑆮𑆳𑆥𑆳𑆢𑆴𑆠 𑆄𑆠𑇀𑆩𑆳𑆪𑆽𑆱𑇀𑆠𑆼𑆰𑆳𑆁 𑆑𑆼𑆮𑆬𑆁 𑆣𑇀𑆪𑆳𑆤𑆳𑆫𑇀𑆡𑆁 𑆮𑆫𑇀𑆟𑆴𑆠𑆁
𑆱𑆁𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴 𑆠𑆳𑆮𑆢𑆴𑆪𑆠𑆵 𑆪𑆾𑆓𑇀𑆪𑆠𑆽𑆰𑆳𑆩𑆶𑆠𑇀𑆥𑆢𑇀𑆪𑆠𑆳𑆩𑆴𑆠𑆴 𑆤 𑆠𑆶 𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆧𑆶𑆨𑆶𑆠𑇀𑆱𑆷𑆤𑇀𑆥𑇀𑆫𑆠𑇀𑆪𑆼𑆠𑆢𑆶𑆑𑇀𑆠𑆩𑇀 (𑇅)
𑆪𑆠𑆂 𑇆 𑇆
𑆠𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆠𑆾 𑆤 𑆤𑆮𑆳𑆠𑇀𑆩𑆳𑆱𑆿 𑆯𑆧𑇀𑆢𑆫𑆳𑆯𑆴𑆫𑇀𑆤 𑆨𑆽𑆫𑆮𑆂(𑇅)
𑆤 𑆖𑆳𑆱𑆿 𑆠𑇀𑆫𑆴𑆯𑆴𑆫𑆳𑆢𑆼𑆮𑆾 𑆤 𑆖 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆠𑇀𑆫𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆑𑆂(𑇆𑇑𑇑𑇆)
𑆤𑆳𑆢𑆧𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆩𑆪𑆾 𑆮𑆳𑆥𑆴 𑆤 𑆖𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆳𑆫𑇀𑆣𑆤𑆴𑆫𑆾𑆣𑆴𑆑𑆳𑆂(𑇅)
𑆤 𑆖𑆑𑇀𑆫𑆑𑇀𑆫𑆩𑆱𑆩𑇀𑆨𑆴𑆤𑇀𑆤𑆾 𑆤 𑆖 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆑𑆂 𑇆(𑇑𑇒𑇆)
𑆱𑇀𑆮𑆳𑆠𑇀𑆩𑆨𑆽𑆫𑆮 𑆍𑆮 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆫𑇀𑆡𑆠𑆾 𑆑𑆯𑇀𑆪𑆾(𑆡𑇀𑆪𑆾𑇁)𑆥𑆴 𑆪𑆂 𑆑𑆳𑆁𑆖𑆴𑆠𑇀𑆑𑆬𑇀𑆥𑆤𑆳𑆩𑆳𑆯𑇀𑆫𑆴𑆠𑇀𑆪𑇅
𑆱𑇀𑆮𑆳𑆠𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑇀𑆪𑆳𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆩𑆳𑆠𑇀𑆩𑆳𑆤𑆁 𑆱𑇀𑆮𑆳𑆠𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑇀𑆪𑆳𑆢𑇀𑆢𑇀𑆮𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆤𑆂(𑇅)
𑆥𑇀𑆫𑆨𑆶𑆫𑆵𑆯𑆳𑆢𑆴𑆱𑆕𑇀𑆑𑆬𑇀𑆥𑆽𑆫𑇀𑆤𑆴𑆫𑇀𑆩𑆳𑆪 𑆮𑇀𑆪𑆮𑆲𑆳𑆫𑆪𑆼𑆢𑆴𑆠𑆴
𑆥𑇀𑆫𑆠𑇀𑆪𑆨𑆴𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆴𑆫𑆷𑆥𑆴𑆠𑆤𑆵𑆠𑇀𑆪𑆾𑆥𑆢𑆴𑆢𑆴𑆑𑇀𑆰𑆳𑆮𑆴𑆰𑆪𑆵𑆑𑆸𑆠𑆂 𑆱 𑆤 𑆥𑇀𑆫𑆯𑇀𑆤𑆴𑆠𑆤𑆮𑆳𑆠𑇀𑆩𑆯𑆧𑇀𑆢𑆫𑆳𑆯𑇀𑆪𑆳𑆢𑇀
𑆪𑆰𑇀𑆛𑆑𑆱𑇀𑆮𑆫𑆷𑆥𑆂(𑇆)
𑆑𑆴𑆩𑆫𑇀𑆡𑆁 𑆠𑆫𑇀𑆲𑆴
𑆮𑆴 𑆨𑆽 𑆛𑆵 𑇔

शिवनिर्वाणशैवी (पद्धतिः) / 𑆯𑆴𑆮𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆳𑆟𑆯𑆽𑆮𑆵 (𑆥𑆢𑇀𑆣𑆠𑆴𑆂)

MS 476 Pages 9 to 16

CST

This is a part of the second Manuscript is transliterated by another team of Core Team Sharada

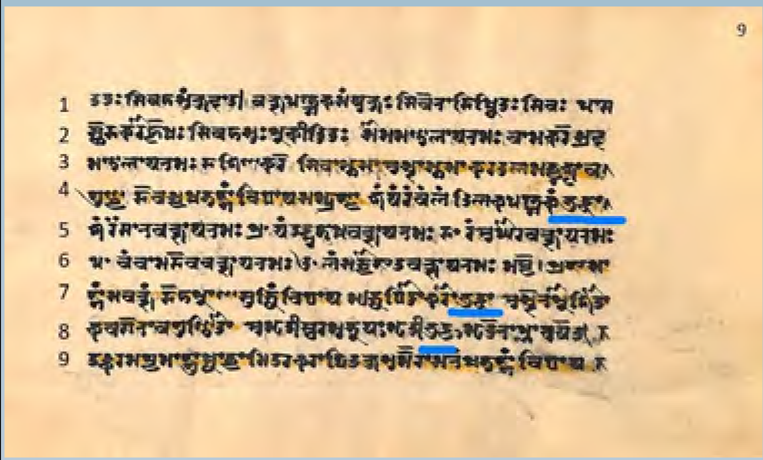

Folio 8 Page 09

०९०१ ततः शिवहस्तं कुर्यात् वक्त्रपञ्चकसंयुक्तः शिवेनादि(धि)ष्ठितः शिवः पाश

०९०२ च्छेदकरो ह्येषः शिवहस्तः प्रकीर्तितः| सोममण्डलाय नमः वामकरे सूर्य

०९०३ मण्डलाय नमः दक्षिणकरे शिवाम्भसा अस्त्राम्भसा करतलमभ्युक्ष्याव

०९०४ गुण्ठ्य देवस्य षडङ्गं विधाय सम्पूज्य क्षं यं रं वं लं तिलकपञ्चकं कृत्वा

०९०५ क्षं ईशानवक्त्राय नमः पू॰ यं तत्पुरुषवक्त्राय नमः द॰ रं अघोरवक्त्राय नमः

०९०६ प॰ वं वामदेववक्त्राय नमः ऊ॰ लं सद्योजातवक्त्राय नमः मध्ये पूजा सा

०९०७ङ्गं सवक्त्रं देहप्राणशुद्धिं विधाय मृद्धधित्तौ करौ कृत्वा अस्त्रेन प्रोक्षितौ

०९०८ कवचेनावगुण्ठितौ अमृतीश्वरमुद्रयाऽमृतीकृत्य (त्या) ऽमृतेनाप्लावयेत्

०९०९ तत्करमध्यमाङ्गुष्ठाभ्यामितरकराधितकुसुमैरासनं षडङ्गं विधाय

Note:- कृ in ms appears like this, so it could be scribe's calligraphy for कृ, or variation to कृ

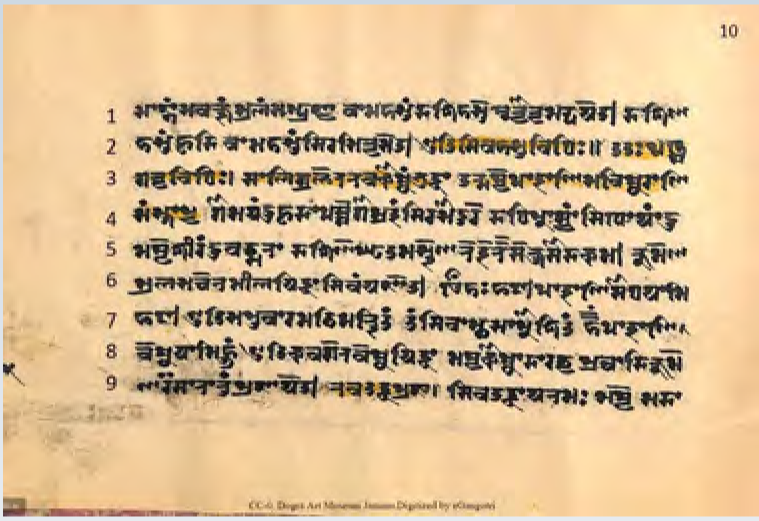

Folio 8 Page 10

१००१ साङ्गं सवक्त्रं मूलं सम्पूज्य वामहस्तं दक्षि[ण]हस्ते अन्योन्यमर्पयेत् | दक्षिण

१००२ हस्तं हृदि वामहस्तं शिरसि न्यसेत् इति शिवहस्तविधिः ।। ततः पञ्च

१००३ गव्यविधिः । शालिचूर्णेन नवकोष्ठं कृत्वा तन्मध्ये पात्राणि सविष्ठराणि

१००४ संस्थाप्य गोमयं तु हृदा पश्चे गोमूत्रं शिरसोत्तरे दधि प्राच्यां शिखायां तु

१००५ मध्ये क्षीरं तु वर्त्मना दक्षिणे घृतमस्त्रेण नेत्रे नैशे कुशोदकम् क्रमेण

१००६ मूलसर्वेन मीलयित्वा शिवं यजेत् | ओं हः फट् पात्राणि शोधयामि

१००७ फट् इति सप्तवारमभिमन्त्रितं तं शिवाम्भसा प्रोक्षितं हैं पात्राणि

१००८ वेष्ठयामि हूं इति कवचेन वेष्ठयित्वा मध्यकोष्ठादारभ्य मूर्धादिक्रमे

१००९ ण ईशानान्तं पूजयेत् | नवतत्त्वपूजा | शिवतत्त्वाय नमः मध्ये सदा

Note: दक्षि दक्षे etc are used in the ms throughout instead of दक्षिण, दक्षिणे

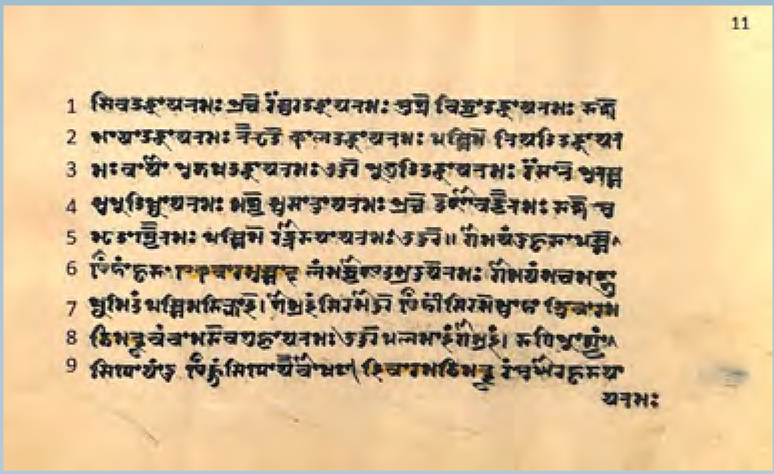

Folio 8 Page 11

११०१ शिवतत्वाय नमः पूर्वे ईश्वरतत्वाय नमः आग्ने विद्यातत्वाय नमः दक्षे

११०२ मायातत्वाय नमः नैऋते कालतत्वाय नमः पश्चिमे नियतितत्वाय न

११०३ मः वायौ पुरुषतत्वाय नमः उत्तरे प्रकृतितत्वाय नमः ईशाने पुनश्च

११०४ सुप्रतिष्ठाय नमः मध्ये सुशान्ताय नमः पूर्वे तेजोवत्यै नमः दक्षे अ

११०५ मृताख्यै नमः पश्चिमे रत्नोदयाय नमः उत्तरे।।गोमयं तु हृदा पश्चे-

११०६ ओं हां हृदा एकवारमुच्चार्य लं सद्योजातमूर्तये नमः गोमयं सर्वमङ्गु

११०७ छमितं पश्चिमदिक्पात्रे। गोमूत्रं शिरसोत्तरे ओं हीं शिरसे स्वाहा द्विवारम

११०८ भिमन्त्र्य वं वामदेवगुह्याय नमः उत्तरे पलमात्रं गोमूत्रं। दधिप्राच्यां

११०९ शिखायां तु ओं हूं शिखायै वौषट् त्रिवारमभिमन्त्र्य रं अघोरहृदयाय नमः

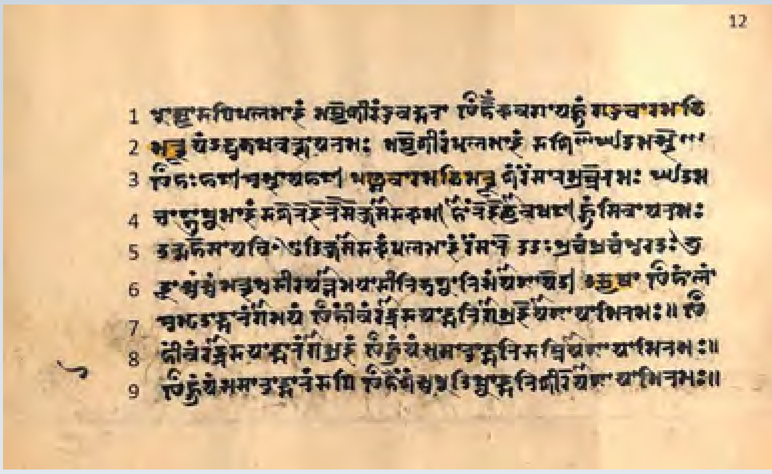

Folio 8 Page 12

१२०१ प्राच्या दधि पलमात्रं मध्ये क्षीरं तु वन्दना ओं हैं कवचाय हूं चतुर्वारमभि

१२०२ मन्त्र्य यं तत्पुरुषवक्त्राय नमः मध्ये क्षीरं पलमात्रं दक्षिणे घृतमस्त्रेण

१२०३ ओं हः फट् अस्त्राय फट् पञ्चवारमभिमन्त्र्य क्षं ईशानमूर्ध्ने नमः घृतम

१२०४ र्धाङ्गुष्ठमात्रं दक्षे नेत्रेनैशे कुशोदकम् होः नेत्रेभ्यो वषट् हूं शिवाय नमः

१२०५ तन्महेशाय वि॰ इति कुशोदकं पलमात्रं ईशाने ततः पूर्वं पूर्वं पुरतः कृ

१२०६ त्वा स्वं स्वंमन्त्रमुदीरयन्गोमयादीनि दुग्धानि संयोजयेत् तद्यथा ओं हां लां

१२०७ अमृतात्मानं गोमयं ओं हीं वं रत्नोदयात्मनि गोमूत्रे योजयामि नमः।। ओं

१२०८ हीं वं रत्नोदयात्मानं गोमूत्रं ओं हूं यं सशान्तात्मनि दध्नि योजयामि नमः ।।

१२०९ ओं हूं यं सशान्तात्मानं दधि ओं हैं क्षं स्वप्रतिष्ठात्मनि क्षीरे योजयामि नमः ।।

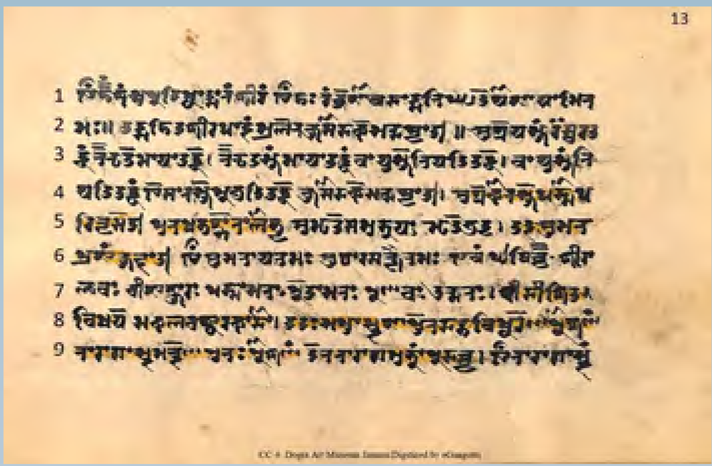

Folio 8 Page 13

१३०१ ओं हैं क्षं स्वप्रतिष्ठात्मानं क्षीरं ओं हः रं तेजोवदात्मनि घृते योजयामि न
१३०२ मः।। तत्सहितक्षीरपात्रं मूलेन कुशोदके सन्दध्यात्।। आग्नेयस्थं ईश्वरत
१३०३ त्वं नैनृ(र्ऋ)ते मायातत्त्वे। नैनृ(र्ऋ)तस्थं मायातत्त्वं वायुस्थे नियतितत्वे। वायुस्थं नि
१३०४ यतितत्त्वं(त्त्वम्) ऐशानस्थे प्रकृतितत्त्वे कुशोदके सन्दध्यात्। अग्ने कोन(ण)स्थे पद्मोप
१३०५ रि न्यसेत् पुन: षडङ्गेनालोड्य अमृतेशमुद्रयाऽमृतेकृत्य। तत्र आसन
१३०६ पूजां कुर्यात् ओं आसनाय नमः आधारशक्त्यै नमः एवं पृथिव्यै० क्षीरा
१३०७ र्णवः बीजाङ्कुरः पद्मासनः प्रेतासनः प्रणवः उन्मनः। दीक्षित-
१३०८ विषये सकलबट्टारकादौ। ततः सप्तास्त्रजप्तेन दर्भविष्टरेण प्रोक्षणं
१३०९ नाराचास्त्रमन्त्रेण पुनः प्रोक्षणं तेन नाराचमुद्रां प्रदर्श्य। ओं नाराचास्त्रं

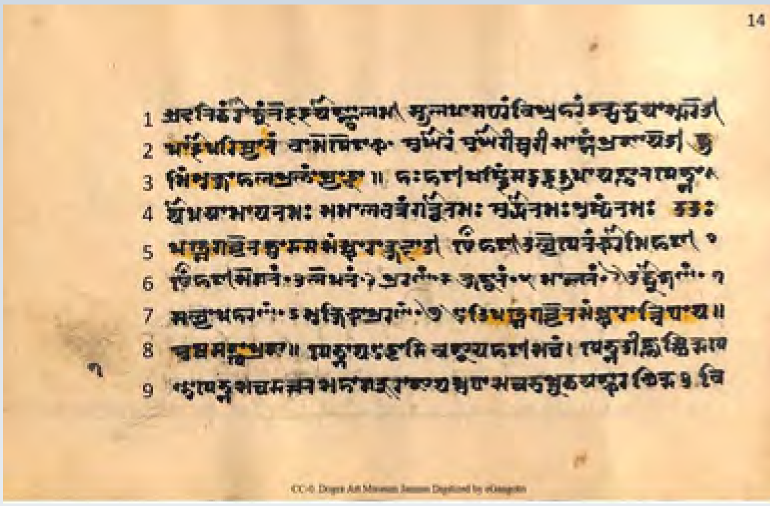

Folio 8 Page 14

१४०१ सूर्यनिभं रौद्रं नेत्रत्रयोज्ज्वलम् शूलपाशधरं विघ्नहरं तन्मुद्रया स्मरेत्
१४०२ पात्रोपरि ध्यानं वामे खेटक° अघोरं(रम्) अघोरीश्वोरीसाङ्गं पूजयेत् भू
१४०३ मिं मुक्ताफलपूर्णां ध्यात्वा ॥ ह: फट् षट्त्रिंशत्तत्वरूपाय ज्ञानखड्गा-
१४०४ योपयामाय नम: समालबन्नं गन्धो नम: अर्घो नम: पुष्पं नम: ततः
१४०५ पञ्चगव्येन द्वादश संस्कारान्कुर्यात् ओं फट् उल्ये(ल्ले)खनं करोमि फट् १
१४०६ ओं फट् सेचनं० २ लेपनं० ३ पूरणं० ४ कुट्टनं० ५ मार्जनं० ६ उत्प्रेक्षणं० ७
१४०७ शल्यापहरणं० ८ मृक्ति(त्ति)कापूरणं० ० इति पञ्चगव्येन संस्कारान्विधाय ||
१४०८ अथ शङ्खपूजा || खड्गाय इत्यादि वज्राय फट् सर्वं | खड्गतीक्ष्णच्छिन्द ख
१४०९ ण्डखड्गसर्वदर्शनमहाचक्रराजाय स्वधा सर्वदुष्टभयङ्करछिन्द २ वि

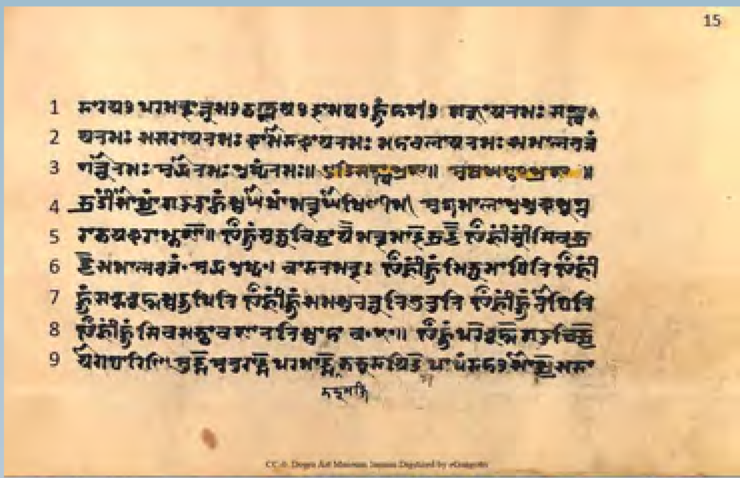

Folio 8 Page 15

१५०१ दारय२ परमन्त्रान्ग्रस२ भञ्जय२ त्रासय२ हूं फट्२ चक्राय नम : शङ्खा
१५०२ य नमः सशराय नमः कौमोदकाय नमः महाबलाय नमः समालब(भ)न्नं(नं)
१५०३ गन्धो नम अर्घो नमः पुष्पं नमः इति शङ्खपूजा॥ अथ घण्ठा(ण्टा) पूजा
१५०४ दूतीं सौम्यां चतुर्बाहुं सुघोषां मन्त्रघोषिणीम् अक्षमालापुस्तकस्रग्व
१५०५ राभयकराम्भजे ॥ ओं हूं शुद्धविद्यायै मन्त्रमात्रे दूत्यै ओं ह्रीं श्रीं शिवदू
१५०६ त्यै समालब(भ)न्नं(नं)° अर्घपुष्प°। वादनमन्त्रः ओं ह्रीं हूं सिद्धसाधिनि ओं ह्रीं
१५०७ हूं शब्दब्रह्मस्वरूपिनि ओं ह्रीं हूं समस्तबन्धनिकृन्तनि ओं ह्रीं हूं बोधिनि
१५०८ ओं ह्रीं हूं शिवसद्भावजननि स्वाहा व° ५° ॥ ओं हूं परे ब्रह्मे चतुर्विद्ये
१५०९ योगधारिणि आत्मे अन्तरात्मे परमात्मे रुद्रशक्ति रुद्रदयिते पापं दह २ सौम्ये सदा

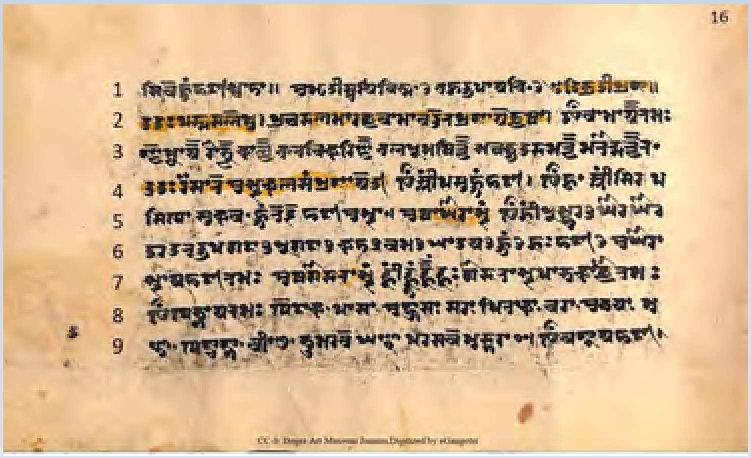

Folio 8 page 16

१६०१ शिवे हूं फंट् स्वाहा ॥ अमृतीश्वर्यं विद्म°२ बहुरूपाय वि°२ इति दूतीपूजा ॥
१६०२ ततः पद्मदलेषु । पूर्वदलमारभ्य वामावत्ते(र्ते)न पूजयेद्यथा । ओं वामायै नमः
१६०३ ज्येष्ठायै रौद्र्यै काल्यै बलविकरिण्यै बलप्रमथिन्यै सर्वभूतदमन्यै मनोन्मन्यै न °
१६०४ ततः ईशाने अस्त्रकलशं पूजयेत् ओं श्लीं पशु हूं फट् । ओं ह° श्लीं शिर प
१६०५ शिखा शुकव° हूं नेत्रे फट् अस्त्रा° । अथाघोरास्त्रं ओं ह्रीं प्रस्फुर २ घोर घोर
१६०६ तर तनुरूप चट २ प्रचट २ कह २ वम २ घातय २ हूं २ हः फट् ३ अघोरा
१६०७ स्त्राय फट् नमः अथ चोदनास्त्रं ह्रीं हूं हैं हः चोदनास्त्रपादुकाभ्यो नमः
१६०८ ओं खड्गाय नमः खेटक° पाशा अङ्कुशः शरः पिनाकः वरा अभयः मु
१६०९ ण्ड° खट्वाङ्गा° वीणा भु(ड)मरवे घण्ठा(ण्टा) परशवे मुद्गरा १० ओं वज्राय फट्

Source: - Dogra Art Museum. Digitisation by e-Gangotri Part 2

श्री मार्तंड महातम्य पाण्डुलिपि (पृष्ठ ५,६,७,८)
𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆩𑆳𑆫𑇀𑆠𑆁𑆝 𑆩𑆲𑆳𑆠𑆩𑇀𑆪 𑆥𑆳𑆟𑇀𑆝𑆶𑆬𑆴𑆥𑆴 (𑆥𑆸𑆰𑇀𑆜 𑇕,𑇖,𑇗,𑇘)

CST

Transliterated by Core Sharada Team members

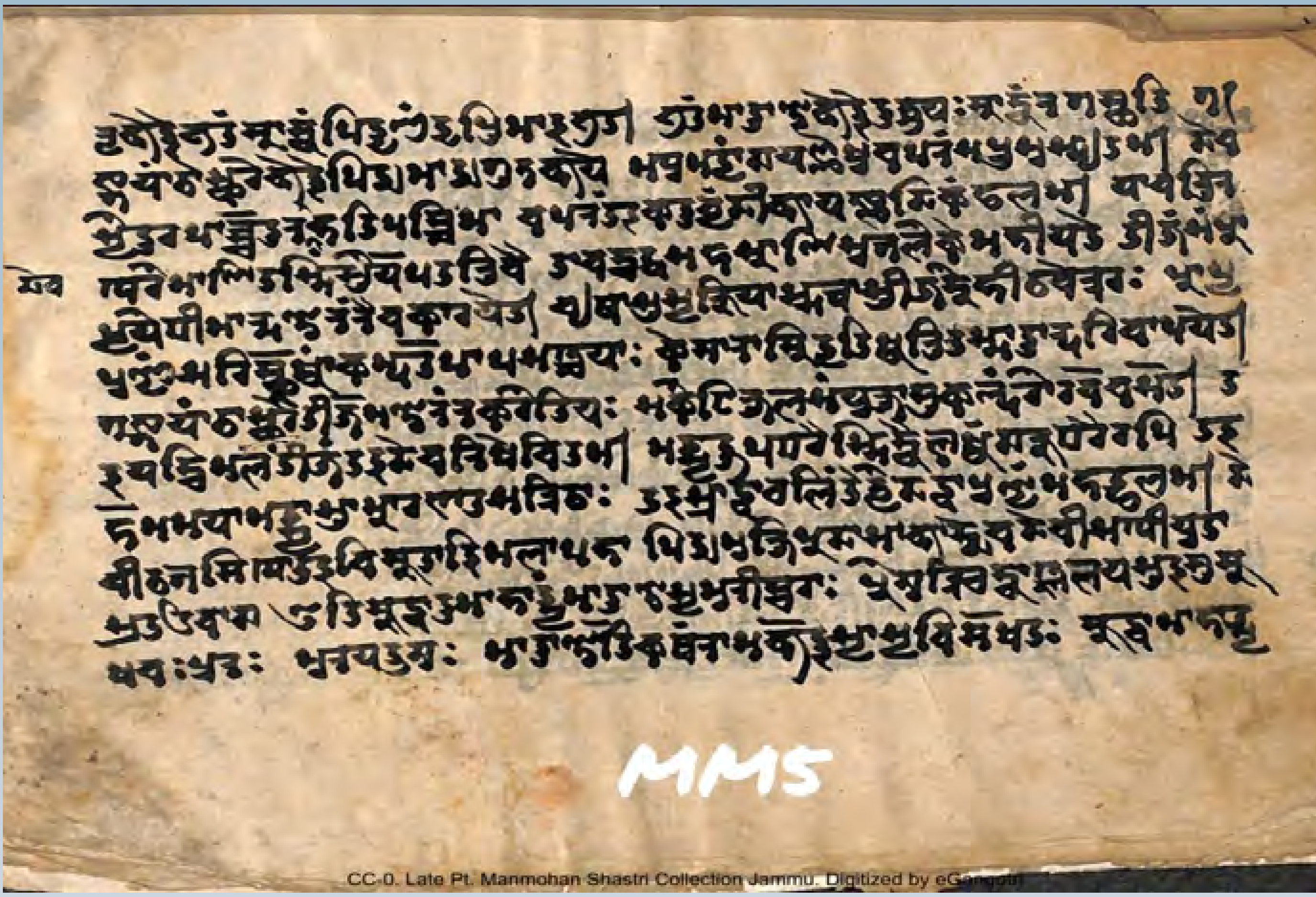

न्यक्षेत्रे कृतं श्राद्धं पितॄणां तृप्तिमात्रकृत् | कृतं मार्ताण्डक्षेत्रे तु भूयः श्राद्धं न गच्छति || ग-
ङ्गायां भास्करे क्षेत्रे पितृमातृगुरुक्षये | मधुमत्यां च यज्ञेषु वपनं सप्तसु स्मृतम् || देव-
स्योत्तरपार्श्वे तु नदी(दे) वहति पश्चिमा | वपनं तत्र कर्तव्यं दीक्षा यज्ञाधि(दि)कं फलम् || यावन्ति न-
खरोमाणि तस्मिंस्तोये पतन्ति वै | तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते || तीर्थं संप्रा-
प्य यो धीमान्मुण्डनं नैव कारयेत् | वृथास्तस्य क्रियास्सर्वास्तीर्थद्रोही भवेन्नरः || प्राप्य
पुण्यां सरिच्छ्रेष्ठां कम्पते पापसञ्चयाः | केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्तान्परिवापयेत् ||
गङ्गायां भास्करे तीर्थे मुण्डनं न करोति यः | स कोटिकुलसंयुक्ता आकल्पं रौरवे वसेत् || त-
त्र यद्विमलं तीर्थं तत्र देवनिषेवितम् | मत्स्यरूपधरैस्सिद्धैर्जुष्टं चक्रधरैरपि || तत्र
हेममया मत्स्यास्ताम्रारजतसन्निभाः | तत्र स्नात्वा बलिं तेभ्यो दत्वा पुण्यं महत्फलम् || दे-
वी भर्गशिखा तत्र विश्रुता त्रिमलापहा | पितृमुक्तिप्रदा साक्षाद्देवदेवीसखीयुता ||
सूत उवाच || इति श्रुत्वा तु माहात्म्यं मार्ताण्डस्य मुनीश्वराः | प्रोचुर्निबद्धाञ्जलयस्तत्र शुश्रू(श्रु)-
षवः पुनः || मुनय ऊचुः || मार्ताण्डेति कथं नाम क्षेत्रस्यास्य विशेषतः | श्रुत्वा माहात्म्य-

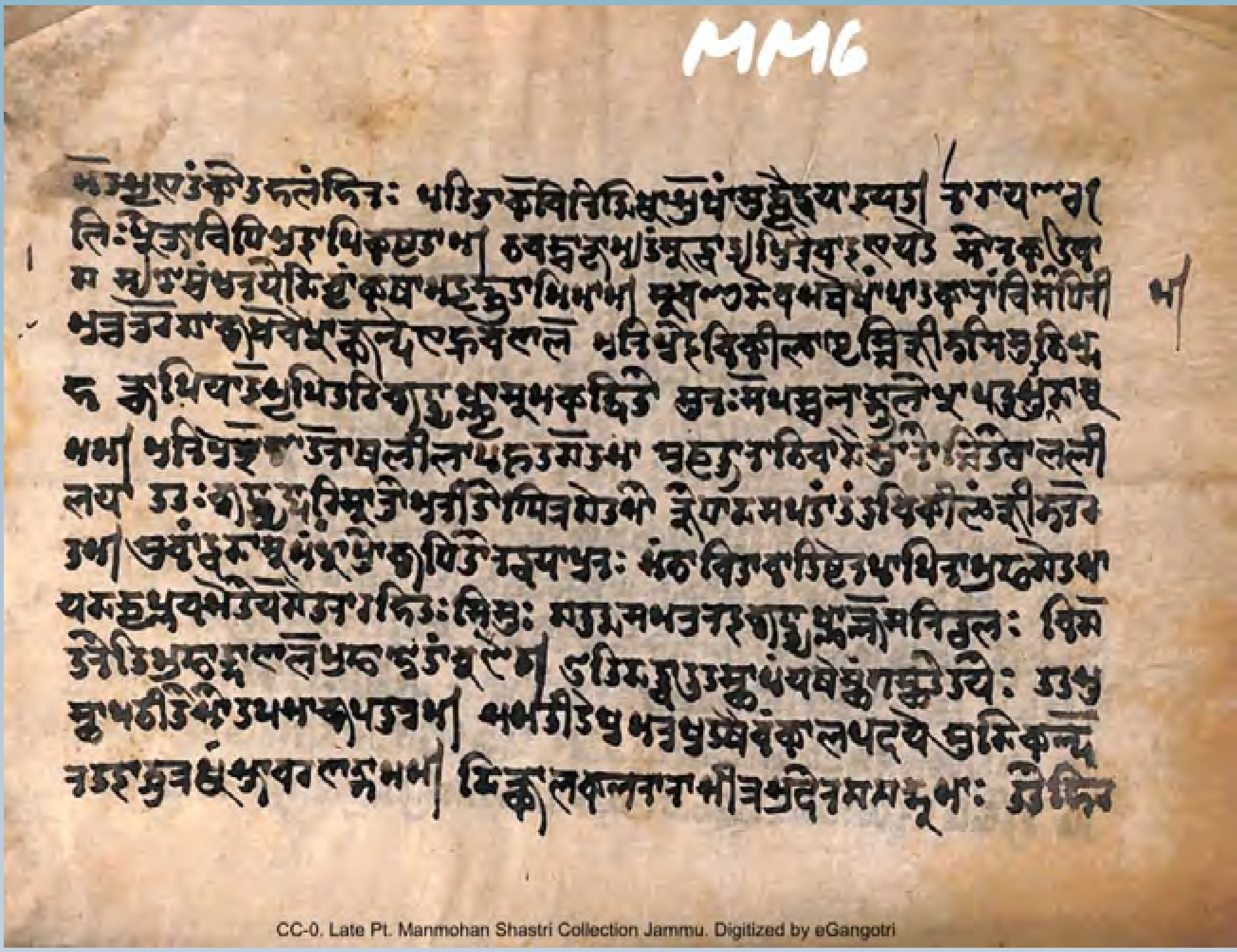

मेतस्य जातं कौतू(त)हलं हि नः || पतिता के विनिर्दिष्टास्तेषां शुद्ध्यै त्वयात्र यत् | नारायणब-
लि: प्रोक्ताविधिस्तत्रापि कथ्यताम् || भवद्वाक्यामृतं श्रुत्वा तृप्तिर्नैवात्र जायते || शौनक उवा-
च || शृणुध्वं मुनयो दिव्यां कथामत्यद्भुतामिमाम् | श्रवणादेव सर्वेषां पातकानां विशोधिनीम् ||
(मु)मन्वन्तरे चाक्षुषे वै प्राक्कल्पे जाह्नवी(व)जले | मुनिपुत्रो विकीर्णाख्यश्चिक्रीड शिशुभिस्स-
ह || क्वापि यातेऽस्य पितरि क्षुत्तृष्णा(ष्ण्या)श्रमकर्षितौ | शुनःशेपश्चलाङ्गूलौ प्रापतुस्तु तदाश्र-
मम् || मुनिपुत्रेण तेनाऽथ लीलापहृतचेतसा | अभ्यु(भ्य)त्थानाभिवादैस्तौ नार्चितौ बालली-
लया || ततः क्षुत्तृट्परिश्रान्तौ❀ मुनी तौ खिन्नचेतसौ | क्रोधादशपतां तं तु विकीर्णं क्रीडनेरि-
तम् || आवां त्वदाश्रमं प्राप्तौ क्षुधितौ न त्वया पुनः | सम्भावितावातिथ्येन पापिना मूढचेतसा ||
यदभ्यप्लवसे तोये चेतनारहितः शिशुः | चतुर्दशमनूनत्र क्षुट्तृष्णाक्लेशनिर्बलः || विचे-
तनोऽतिमूढात्मा जले मूढाण्डतां व्रजेत् | इति दत्वा तु तच्छापं यथेच्छं गच्छतो तयोः || ततस्त-
च्छापभीतोसौ तपसा क्षपयत्तनुम् | समतीतेषु मनुषु तथैवं कालपर्यये || आदिकल्पे-
न तत्राभून्नष्टं स्थावरजङ्गमम् | दिक्कालकलनानासीन्न सूर्यो न च चन्द्रमा: || ततो हिर-

❀क्षुध् + तृट् + परिश्रान्तौ- तृट्(तृष् शब्दस्य प्रथमा एकवचनम्)

ण्यगर्भेण कश्यपो नाम(स)मानसः | प्रजासर्गे नियुक्तोऽभूत्सुतः सर्वजगत्प्रभुः || अदि-

तिप्रमुखादक्षकन्या ब्रह्मानुशासनात् | उवाह विधिवत्स्रष्टं चतुर्दशविधं जगत् ||

अदितेः कश्यपाज्ञातास्ततोण्डानि त्रयोदश | तत्रापि द्वादशैवाण्डा मात्रा संस्वेदितास्तु ते ||

त्रयोदशो जले क्षिप्तास्तेषां नीराजनाविधौ | कश्यपस्य न विज्ञातं तदभूद्दैवयोगतः ||

तदारभ्याण्डजेष्वेकमण्डमारात्रिकाविधौ | कृत्वा स्वेद विना भूतं त्यजन्त्येवाण्डजं

स्त्रियः +|| आदित्यश्च रविश्चैव गभस्तिर्भानुरेव च | सविता च दिवाकरो धर्मस्तपनभा- +not found

स्करौ || सूर्यः त्वष्टा स्वर्पतिश्चेतेषां नामानि द्वादश । प्रभा दीप्तिः प्रकाशा च म-

रीचिस्तापनी तथा || पाचनी हव्यवाहा च तथा तेजोवती परा | शतधामा स्वधा-

मा च पद्मगर्भा तथैव च || च्छाया चेति स्मृताश्चैषां तथा द्वादशशक्तयः । यत्र त्र-

योदशं क्षिप्तमण्डं तत्तु सतीसरः || हिमव(शि)च्छिखरे❁ गौरी लीलाललितपङ्कजम् |

न्यस्तान्यालोक्य तीर्थानि त्रैलो(के)क्ये यत्र कुत्रचित् || एकत्र समवायेन तानि स्थापयितुं प्रभुः ।

1. ❁हिमवत् + शिखरे = हिमवच्छिखरे

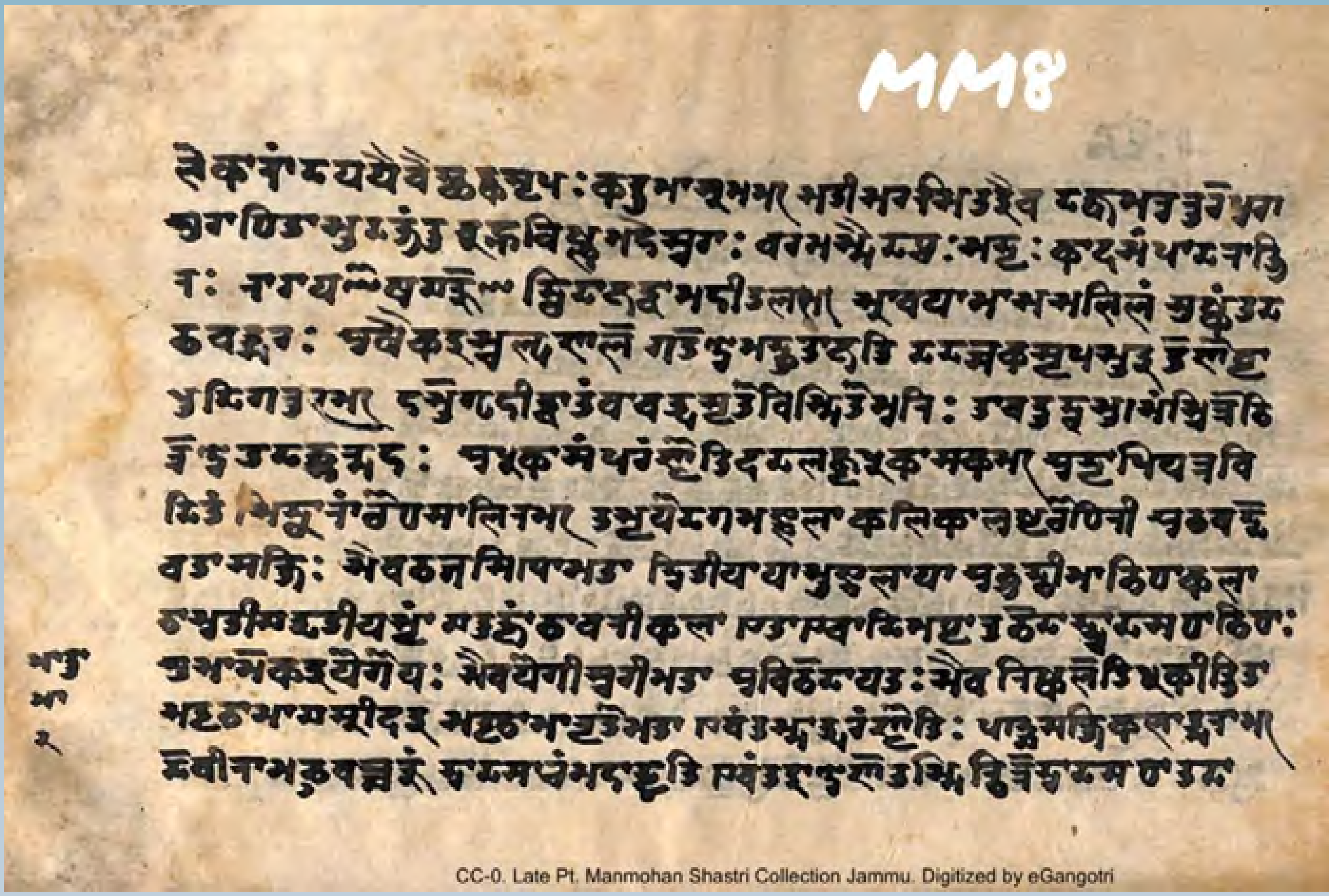

लोकानां दययैवेच्छत्कश्यपः कर्तुमाश्रमम् ॥ सतीसरसि तत्रैव दक्षमन्वन्तरे पुरा ।
आराधितास्तदर्थं तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ वरमस्मै दधुः सद्यः कार्यसंपादनार्थि-
नः । नारायणोऽथ चक्रेण द्विधा(दा) कृत्वा महीतलम् ॥ स्रावयामास सलिलं शुष्कं तद -
भवत्सरः । अथैकत्र स्वल्पजले गतेऽण्डमद्भुताकृतिः(ति) ॥ ददर्श कश्यपस्तत्र तेजो व्या-
प्तदिगन्तरम् । हस्ते गृहीत्वा तं यावत्पश्यतो विस्मितो मुनिः ॥ तावत्तद्ध(द्व)स्त संस्विन्ने भि-
न्नेऽण्ड तदभून्महः । अप्रकाशं परंज्योतिर्यदलक्ष्य प्रकाशकम् ॥ अद्यापि यन्न वि-
दितं सिद्धानां बोधशालिनम् । तस्य योदगमञ्ज्वा(ज्ञा)ला कलिकालुष्यबोधिनी ॥ अभवद्दे-
वताशक्तिः सैव भर्गशिखा मता । द्वितीयायास्तु ज्वालाया अभूद्भीमाभिधा कला ॥
भास्वती च तृतीयस्यां चतुर्थ्यां भावनी कला । एता एवादिमध्यान्तभेदाद्द्वादशधाभिधाः ॥
आसामेकत्र योगो यः सैव योगीश्वरी मता । अविभेदायतः सैव निष्कलेति प्रकीर्तिता ॥
सत्यभामा च श्रीर्यत्र सत्यभामान्यतो मता । एवं तस्मात्परंज्योतिः पञ्चशक्तिकलात्मनाम् ॥
देवीनामभवच्चक्रं द्वादशाबं महाद्युतिः(ति) । एवं तत्राण्डजे तस्मिन्भिन्ने द्वादशधा तदा ॥

Source: - Dogra Art Museum. Digitisation by e-Gangotri

ल्वकुचार म्योन ल्वकुचार / 𑆬𑇀𑆮𑆑𑆶𑆖𑆳𑆫 𑆩𑇀𑆪𑆾𑆤 𑆬𑇀𑆮𑆑𑆶𑆖𑆳𑆫

M.K.Raina

व्वलबा गिंदव सारी मीलिथ लंठकिंज लंठिस
गरमस वरमस टींकन पांच़न या सज़ुलंगिस
प्योयि कॆंह ज़्वन किथु आस्य गिंदन
शामन शामन शहर तु गामन
मंज़ रेतुकालिस कतिजे आलिस
अथु पिलनावुन दाना त्रावुन
वॅलबी छ्यु कांह पंछिन ठूला
केनुबब्य पमबुछ शाहतुल वाहतुल
कुनुखा तोमलस तीलस नूनस
छ्यु कांह कपुरा असि द्रन लायख
ईचकदाना बीचकदाना सुबह शाम
साटन रीशुम या कॆंह नॊव नॊव वुन्य वुन्य आमुत
प्योयि कॆंह ज़्वन तमि ल्वकुचारुक
शिठुविनि मागुक दज़वुनि हारुक
वॅलबा गिंदव सारी मीलिथ लंठकिंज लंठिस
गरमस वरमस टींकन पांच़न या सज़ुलंगिस

𑆮𑇀𑆮𑆬𑆧𑆳 𑆓𑆴𑆁𑆢𑆮 𑆱𑆳𑆫𑆵 𑆩𑆵𑆬𑆴𑆡 𑆬𑆁𑆜𑆑𑆴𑆁𑆘 𑆬𑆁𑆜𑆴𑆱
𑆓𑆫𑆩𑆱 𑆮𑆫𑆩𑆱 𑆛𑆵𑆁𑆑𑆤 𑆥𑆳𑆁𑆖𑇊𑆤 𑆪𑆳 𑆱𑆘𑇊𑆶𑆬𑆁𑆓𑆴𑆱
𑆥𑇀𑆪𑆾𑆪𑆴 𑆑𑆼𑆁𑆲 𑆘𑇊𑇀𑆮𑆤 𑆑𑆴𑆡𑆶 𑆄𑆱𑇀𑆪 𑆓𑆴𑆁𑆢𑆤
𑆯𑆳𑆩𑆤 𑆯𑆳𑆩𑆤 𑆯𑆲𑆫 𑆠𑆶 𑆓𑆳𑆩𑆤
𑆩𑆁𑆘𑇊 𑆫𑆼𑆠𑆶𑆑𑆳𑆬𑆴𑆱 𑆑𑆠𑆴𑆘𑆼 𑆄𑆬𑆴𑆱
𑆃𑆡𑆶 𑆥𑆴𑆬𑆤𑆳𑆮𑆶𑆤 𑆢𑆳𑆤𑆳 𑆠𑇀𑆫𑆳𑆮𑆶𑆤
𑆮𑆬𑆧𑆵 𑆗𑇀𑆪𑆶 𑆑𑆳𑆁𑆲 𑆥𑆁𑆗𑆴𑆤 𑆜𑆷𑆬𑆳
𑆑𑆼𑆤𑆶𑆧𑆧𑇀𑆪 𑆥𑆩𑆧𑆶𑆗 𑆯𑆳𑆲𑆠𑆶𑆬 𑆮𑆳𑆲𑆠𑆶𑆬
𑆑𑆶𑆤𑆶𑆒𑆳 𑆠𑆾𑆩𑆬𑆱 𑆠𑆵𑆬𑆱 𑆤𑆷𑆤𑆱
𑆗𑇀𑆪𑆶 𑆑𑆳𑆁𑆲 𑆑𑆥𑆶𑆫𑆳 𑆃𑆱𑆴 𑆢𑇀𑆫𑆤 𑆬𑆳𑆪𑆒
𑆆𑆖𑆑𑆢𑆳𑆤𑆳 𑆧𑆵𑆖𑆑𑆢𑆳𑆤𑆳 𑆱𑆶𑆧𑆲 𑆯𑆳𑆩
𑆱𑆳𑆛𑆤 𑆫𑆵𑆯𑆶𑆩 𑆪𑆳 𑆑𑆼𑆁𑆲 𑆤𑆾𑆮 𑆤𑆾𑆮 𑆮𑆶𑆤𑇀𑆪 𑆮𑆶𑆤𑇀𑆪 𑆄𑆩𑆶𑆠
𑆥𑇀𑆪𑆾𑆪𑆴 𑆑𑆼𑆁𑆲 𑆘𑇊𑇀𑆮𑆤 𑆠𑆩𑆴 𑆬𑇀𑆮𑆑𑆶𑆖𑆳𑆫𑆶𑆑
𑆯𑆴𑆜𑆶𑆮𑆴𑆤𑆴 𑆩𑆳𑆓𑆶𑆑 𑆢𑆘𑇊𑆮𑆶𑆤𑆴 𑆲𑆳𑆫𑆶𑆑
𑆮𑆬𑆧𑆳 𑆓𑆴𑆁𑆢𑆮 𑆱𑆳𑆫𑆵 𑆩𑆵𑆬𑆴𑆡 𑆬𑆁𑆜𑆑𑆴𑆁𑆘 𑆬𑆁𑆜𑆴𑆱
𑆓𑆫𑆩𑆱 𑆮𑆫𑆩𑆱 𑆛𑆵𑆁𑆑𑆤 𑆥𑆳𑆁𑆖𑇊𑆤 𑆪𑆳 𑆱𑆘𑇊𑆶𑆬𑆁𑆓𑆴𑆱

Varnamala Art by Suresh Kardar

CST - The Way Forward

Rakesh Kaul

Even though Core Sharada team has achieved many a milestone, but there are still many tasks to be completed and milestones to be reached.

Teaching: Currently we conduct 2-3 sessions in a year due to the bandwidth of limited teachers. Each session, teachers spend lot of time in assignment correction, feedback, uploading training materials and finally preparation of certificates. Our goal is to move towards animated training course which can aid students to take the training anytime as per their convenience. These training modules will be self-explanatory, have the materials embedded and also have auto generated certificates after every successful completion of training. The teachers will work on improving the content of the courses.

Maatrika: From last two years, we have reacheded more than 4500 readers directly and we have been working consistently on improving the contents of Maatrika . Even though currently the contents of Maatrika is multilanguage, but our goal is to have it exclusive Sharada only. We may reach that stage in 3-4 years . Our goal is also to add more of the research oriented contents for Sanskrit scholars.

Font: Even though, we have released the Satisar Sharda font but still this being the customized application does not help us to reach the students in large scale. We are trying to have some collaborations with Google and Microsoft to enable Sharada font in their applications. We have been working on this for the last one year and team will continue to pursue in the same. Also, currently our application does not work on Mac Apple machines and we are working on getting the application released for the Mac products. On the Kashmiri Font (Refer our Publication Koshur Praveshika) which was developed in collaboration with many scholars. Unicode based font is expected to be released in 2025.

Books : We have received many feedback on our Primer Volume 1 and Volume 2 and we will be publishing the revised editions in next one year. The revision is based on various feedback from students, scholars and plan is to add more details on manuscript reading and challenges in the new edition.

Education: We will continue to pursue with Government of Jammu and Kashmir to introduce the script in Primary schools . Also we will continue our collaborations with Universities to enable Sharada diploma courses for students

OCR: We are working in collaboration with few organizations on OCR development and we should have the software ready in next 2 years.

At the end, I want to thank all our readers for the trust shown and we are committed to fulfilling their expectations.

Readers' Feedback

CST

The efforts put in by you in bringing out this sacred Journal from time to time are indeed laudable & the same will boost the morale of our younger generation .
I congratulate you for your excellent contribution to the field of our "Sanatan Dharma".
JAI MATA DI. …..BL Raina 9818737003

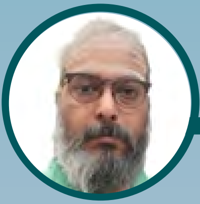

लघुभट्टारक प्रणीत लघुस्तवी / 𑆬𑆔𑆶𑆨𑆛𑇀𑆛𑆳𑆫𑆑 𑆥𑇀𑆫𑆟𑆵𑆠 𑆬𑆔𑆶𑆱𑇀𑆠𑆮𑆵

Dr. Ketu Ramachandrasekhar

(This is **Verse 8** is in continuation to the article series started in Feb 24 edition of Maatrika)

**ये त्वां पाण्डुरपुण्डरीकपटलस्पष्टाभिरामप्रभां
सिञ्चन्तीममृतद्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम् ।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षरपदा निर्याति वक्त्राम्बुजात्
तेषां भारति भारती सुरसरित्कल्लोललोलोर्म्मिभिः ॥ ८॥**

𑆪𑆼 𑆠𑇀𑆮𑆳𑆁 𑆥𑆳𑆟𑇀𑆝𑆶𑆫𑆥𑆶𑆟𑇀𑆝𑆫𑆵𑆑𑆥𑆛𑆬𑆱𑇀𑆥𑆰𑇀𑆛𑆳𑆨𑆴𑆫𑆳𑆩𑆥𑇀𑆫𑆨𑆳𑆁
𑆱𑆴𑆚𑇀𑆖𑆤𑇀𑆠𑆵𑆩𑆩𑆸𑆠𑆢𑇀𑆫𑆮𑆽𑆫𑆴𑆮 𑆯𑆴𑆫𑆾 𑆣𑇀𑆪𑆳𑆪𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆩𑆷𑆫𑇀𑆣𑇀𑆤𑆴 𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆳𑆩𑇀 𑇅
𑆃𑆯𑇀𑆫𑆳𑆤𑇀𑆠𑆁 𑆮𑆴𑆑𑆛𑆱𑇀𑆦𑆶𑆛𑆳𑆑𑇀𑆰𑆫𑆥𑆢𑆳 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆪𑆳𑆠𑆴 𑆮𑆑𑇀𑆠𑇀𑆫𑆳𑆩𑇀𑆧𑆶𑆘𑆳𑆠𑇀
𑆠𑆼𑆰𑆳𑆁 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆴 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵 𑆱𑆶𑆫𑆱𑆫𑆴𑆠𑇀𑆑𑆬𑇀𑆬𑆾𑆬𑆬𑆾𑆬𑆾𑆫𑇀𑆩𑇀𑆩𑆴𑆨𑆴𑆂 𑇆 𑇘𑇆

Padartha:

हे भारति !- O Goddess of Light !
पाण्डर- पुण्डरीक - white lotus
स्पष्ट-अभिराम-प्रभाम्- whose beauty resembles
अमृत द्रवैः -with the flow of nectar
शिरः - head
सिञ्चन्तीम् - drenching
मूर्ध्नि - on the head
स्थिताम् - situated
त्वाम् - yourself
ये - those who
ध्यायन्ति - contemplate
तेषां वक्त्र-उदरात् - from their mouth
विकट-स्फुट. अक्षर-पदा - words with clear and expanded letters.
भारती - power of speech
सुर-सरित्- कल्लोल - लोल - ऊर्मिवत् - like the huge waves of the ākāśa ganga
अश्रान्तम् - without a break
निर्याति -comes out.

Shlokartha:

O Mother! Who is the substratum for the entire gamut of sounds, the devotee who contemplates upon you as white as the white lotus, shining with enchanting lustre and who drenches Sādhaka's head with the continous flow of nectar, also as one residing in the thousand petaled Sahasrara padma, shall be blessed with poesy which has clear import and which would flow from their mouth like the rising waves of pure ākāśa-ganga.

Bhavrtha:

In this verse, Sri Laghu Bhattaraka teaches us the method of contemplating on Mother's Vak bija in Sahasrara. One should use the Dhyana from the previous verse and contemplate the bija "SauH" in the Sahasrara. This bijamantra is celebrated in the Urdhvamnaya tantras as the mula Mantra of Parā Bhattarikā, who shines above the Sahasrara.

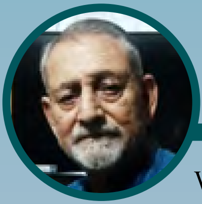

Mata Lalleshwari by Gokal Dembi

We are delighted to publish a collection of Mr Dembi's paintings on Mata Lalleshwari based on her different Vakhs

सुश्री शक्ति मुंशी के यात्रा वृतांत के हिंदी अंश

Shakti Munshi

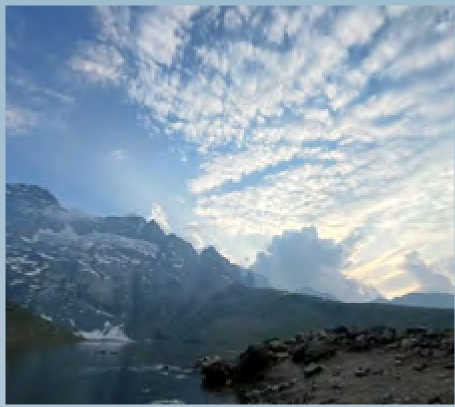

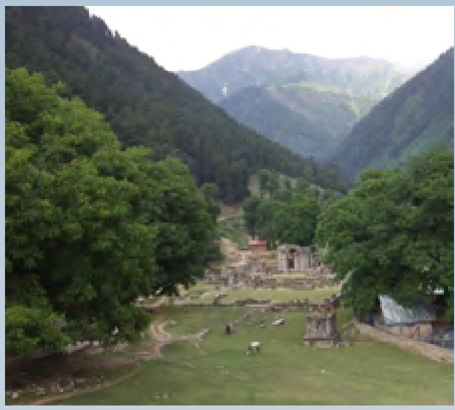
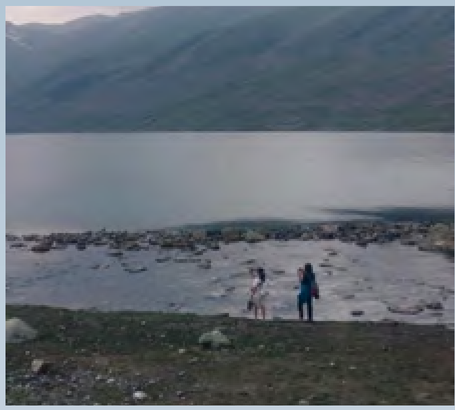

हमारे पूर्वजों को श्रद्धांजलि देने के लिए हरमुख गंगाबल तीर्थ पर जाना एक जल्दबाजी भरा निर्णय था, जिनकी अस्थियाँ हरमुख पर्वत की तलहटी में गंगाबल के जल में विसर्जित की गई थीं।

कश्मीरी पंडितों के लिए हरमुख कैलाश पर्वत के समान है। वास्तव में हरमुख शिखर कैलाश पर्वत जैसा ही है। हरमुख के हिमनदों (ग्लेशियरों) से पिघली हुई बर्फ 'गंगबल' की प्राचीन हिमनद झील में बहती है, जो 'गंगा' जितनी ही पवित्र है। इस प्रकार पवित्र झील से बहने वाली जलधारा को 'हरमुख गंगा' कहते हैं।

गंगबल झील ट्रेक के दो मार्ग हैं - एक नारानाग से और दूसरा मार्ग सोनमर्ग से है। हमने नारानाग मार्ग लिया। नारानाग श्रीनगर-लेह मार्ग पर स्थित कंगन शहर के पास है।

पहले दिन, श्रीनगर पहुँचने के बाद, हम सभी ने डल झील में नेहरू पार्क द्वीप के पीछे स्थित एक हाउसबोट में रात बिताई।

दूसरे दिन, हम नारानाग के लिए बस में सवार हुए और दोपहर में नारानाग के बेस कैंप पहुँच गए। नारानाग में, जो कि काफी ठंडा था, हमने कुछ घंटों तक आराम किया और राजा अवंतिवर्मन द्वारा निर्मित नारानाग शिव मंदिर परिसर की ओर चल पड़े। विभिन्न छोटी और बड़ी संरचनाओं के अवशेषों से गुज़रने के बाद, हम नारानाग पहाड़ों की ओर से निकलने वाले नारानाग झरने तक पहुँचे। यह एक तालाब में से एक छोटी सी धारा के माध्यम से वनगथ नाले में बहती है।

तीसरे दिन, नारानाग से लगभग ६ घंटे की चढ़ाई मध्यम से कठिन थी, विशेष रूप से २१२८ मीटर की ऊंचाई पर स्थित नारानाग से बुतशी पर्वत की चोटी से आगे लगभग ३१०० मीटर पर सेना की चौकी तक जो कि हमारा पहला शिविर स्थल था। यहां के जलपान से हमें स्फूर्ति मिली और शिविर स्थल, जो एक खुला समतल क्षेत्र है ('सेना शिविर' के निकट), तक हमें अगले तीन घंटों तक चलने में मदद मिली।

चौथे दिन, नाश्ते के बाद शिविर स्थल से नुंदकोल झील की ओर हमारी यात्रा फिर शुरू हुई। इसे नंदी कुंड के नाम से भी जाना जाता है जो लगभग ३५०० मीटर की ऊंचाई पर है। दूर से नुंदकोल झील का नजारा शांत था, झील के पीछे राजसी हरमुख चोटी और पिघलती बर्फ से बने सुंदर स्वरूप वाला ग्लेशियर था। हमने झील से निकलने वाली धारा को दो लट्ठों से बने अस्थिर व झूलते पुल के ऊपर से पार किया। कुछ खाने और आधे घंटे आराम करने के उपरांत, हमने गंगबल झील तक लगभग १०० मीटर की चढ़ाई जारी रखी। यही हमारा अंतिम गंतव्य था। पीले फूलों से भरी एक छोटी घाटी, जिसमें हमारे बाईं ओर हरमुख गंगा थी जो गंगबल झील से निकलकर नुंदकोल झील में से होती हुई फिर आगे बहती है। हम लगभग एक घंटे तक इस झील की महिमा में डूबे रहे, इसके ठंडे पानी का आनंद लिया और गंगाबल झील के तट पर एक चट्टान को काटकर बनाए गए छोटे शिव मंदिर में अपने पूर्वजों की आत्मा के लिए ध्यान और प्रार्थना की। हम नुंदकोल झील पर वापस आ गए, जहाँ हमने गड़गड़ाहत करती हरमुख गंगा के तट पर रात के लिए डेरा डाला।

पांचवे दिन, नुंदकोल झील से नारानाग बेस कैंप तक लगभग १६ से १८ किलोमीटर की यात्रा थी। नारानाग तक उतरना अधिक थकाऊ था । यह कठिन अवश्य था, परंतु जुनून व जोश ने हमें नारानाग बेस कैंप तक सुरक्षित पहुंचने में मदद की और फिर अंततः हम श्रीनगर पहुंच गए।

यह एक अविस्मरणीय यात्रा रही।

Learn Sanskrit Shlokas and sentences

Saraswathy N, Vinutha Saligram

Saṃskṛtam sentences and verses (a study) बालसंस्कृतम् 02

A) śloka 02

𑆓𑆟𑆼𑆯𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑆴𑆂 𑇅
𑆃𑆘𑆁 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆴𑆑𑆬𑇀𑆥𑆁 𑆤𑆴𑆫𑆳𑆑𑆳𑆫𑆩𑆼𑆑𑆁 𑆤𑆴𑆫𑆳𑆠𑆕𑇀𑆑𑆩𑆢𑇀𑆮𑆽𑆠𑆩𑆳𑆤𑆤𑇀𑆢 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟𑆩𑇀 𑇅
𑆥𑆫𑆁 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆓𑆶𑆟𑆁 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆴𑆯𑆼𑆰𑆁 𑆤𑆴𑆫𑆵𑆲𑆁 𑆥𑆫𑆧𑇀𑆫𑆲𑇀𑆩𑆫𑆷𑆥𑆁 𑆓𑆟𑆼𑆯𑆁 𑆨𑆘𑆼𑆩 𑇆𑇒𑇆
(𑆓𑆟𑆼𑆯𑆥𑆶𑆫𑆳𑆟𑆩𑇀)

गणेशस्तुतिः ।
अजं निर्विकल्पं निराकारमेकं निरातङ्कमद्वैतमानन्द पूर्णम् ।
परं निर्गुणं निर्विशेषं निरीहं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम ॥२॥
(गणेशपुराणम्)

ajaṃ nirvikalpaṃ nirākāramekaṃ nirātaṅkamadvaitamānanda pūrṇam |
paraṃ nirguṇaṃ nirviśeṣaṃ nirīhaṃ parabrahmarūpaṃ gaṇeśaṃ bhajema ||2||

Simple Meaning:
Let us worship Lord Ganesha, who is eternal, absolute, formless. unique, fearless, the ultimate truth, who is blissful , who is one and infinite , who is impersonal, who is without attributes , differentiation and desires and the Supreme Brahman personified

हम भगवान गणेश की पूजा करें, जो शाश्वत, पूर्ण, निराकार, अद्वितीय, निर्भय, परम सत्य, आनंदमय, एक और अनंत, अवैयक्तिक, जो गुण, भेद और कामनाओं से रहित तथा साक्षात् परम ब्रह्म के रूप में हैं।

B) Basic grammar (vyākaraṇam) 02

In the last issue we studied sentences with examples for different vibhaktayaḥ (विभक्तयः Cases). Now , let us learn about words in a sentence.

पिछले अंक में हमने विभिन्न विभक्तियों के उदाहरणों सहित वाक्यों का अध्ययन किया था ।
अब, वाक्य में शब्दों के बारे में जानें।

In संस्कृतम्,

1) Words are broadly classified under two groups,
सुबन्तम् .... Noun and तिङन्तम्.......Verb.
For example. In the sentence, रामः पठति (Rama reads), the first word (रामः) is a noun and the second word (पठति) is a verb.

संस्कृत भाषा में शब्दों को पद के रूप में प्रयोग होता हैं । इन्हें दो प्रकारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, सुबन्तम् .... संज्ञा पद और तिङन्तम्...... क्रिया पद ।
उदाहरण , रामः पठति (राम पढ़ता है), पहला शब्द (रामः) संज्ञापद है और
दूसरा शब्द (पाठति) क्रियापद है।

2) Verb or क्रियापदम् is formed from the verbal root (धातुः) by adding suffix (प्रत्ययः) called तिङ् प्रत्ययः । There are more than 2000 verbal roots in संस्कृतम् . The verbal

roots are of three types, namely, आत्मनेपदी, परस्मेपदी, उभयपदी ।
The तिङ् suffixes are present at the end of verbs in all tenses and moods (लकाराः), persons (पुरुषाः) and numbers (वचनानि).

क्रिया या क्रियापदम् का निर्माण क्रियापद मूलरूप (धातुः) में प्रत्यय (प्रत्ययः) जोड़ने से होता है, जिसे तिङ् प्रत्ययः कहा जाता है। संस्कृतम् में धातुओं के संख्या 2000 से अधिक हैं ।
आत्मनेपदी, परस्मेपदी, उभयपदी धातुओं के तीन प्रकार हैं ।
तिङ् प्रत्यय विभिन्न काल या वृत्ति (विधि आदि स्थिति) (लकारः), पुरुष (पुरुषाः) और वचन (वचनानि) में क्रियाओं के अंत में होते हैं ।

3) Noun or नामपदम् is formed from nominal root प्रातिपदिकम् (प्रातिपदिकम् , which is a meaningful शब्दः other than धातुः and प्रत्ययः and प्रत्ययान्त शब्दः) by adding सुप suffixes. The सुप suffixes are present at the end of nouns in seven cases (विभक्तयः) and three numbers (वचनानि).

संज्ञा या नामपद प्रातिपदिक (जो धातु और प्रत्यय तथा प्रत्ययान्त शब्द के अलावा एक सार्थक शब्द है) से सुप प्रत्यय जोड़कर बनता है । सुप प्रत्यय संज्ञा के अंत में सात विभक्तियों ओर तीन वचनों में होते हैं।

4) Every noun has a gender in संस्कृतम्. There are three genders. Namely, masculine, feminine, and neuter (पुल्लिङ्गः श्लीलिङ्गः नपुंसकलिङ्गः).

संस्कृत में, प्रत्येक संज्ञा का एक लिङ्ग होता है। तीन लिङ्ग हैं. अर्थात्, पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, और नपुंसकलिङ्ग (पुल्लिङ्गः स्त्रीलिङ्गः नपुंसकलिङ्गः)।

5) The grammatical persons are called पुरुषाः which identify the relationship between subject and its verb . There are three persons (पुरुषाः).
उत्तमपुरुषः is used when the subject is speaking about itself. Namely, I (अहम्)
मध्यमपुरुषः is used when the subject is being spoken to. Namely, You (त्वम्)
प्रथमपुरुषः is used when the subject is spoken about.
Namely, he, she, that (सः, सा, तत्), respectful form of addressing (भवान्, भवती) and any noun other than you & I.

संस्कृत में, पुरुष, कर्ता और उसकी क्रिया के बीच संबंध की पहचान कराते हैं।
संस्कृत में तीन पुरुष हैं।
उत्तमपुरुष का प्रयोग तब किया जाता है जब अपने बारे में बोल रहा हो। अर्थात्, मैं (अहम्)।
मध्यमपुरुष का प्रयोग तब किया जाता है जब विषय से बात (सम्बोधन) की जा रही हो। अर्थात्, आप (त्वम्)।
प्रथमपुरुष का प्रयोग तब किया जाता है जब विषय के बारे में बात की जाती है (जहां पर उत्तम वा मध्यम पुरुष नहीं लगाये जासक्ते)। अर्थात्, वह (तीन लिङ्गरूप) (सः, सा, तत्), संबोधन का सम्मानजनक रूप (भवान्, भवती) और आप, मैं के अलावा किसी भी संज्ञा।

6) The grammatical numbers are called वचनाः which is the number the noun or verb refers to. Namely, Singular (एकवचनम्) , Dual (द्विवचनम्)and Plural(बहुवचनम्).

संस्कृत में. संख्या को वचन (वचनम्) कहा जाता है। अर्थात्, संख्या में एक होने पर एकवचन (एकवचनम्) , दो होने पर द्विवचन (द्विवचनम्) और दो से अधिक होने पर बहुवचन (बहुवचनम्) का प्रयोग है।

7) The tenses and moods are treated together and are called लकाराः ।
There are ten or दश लकाराः ।
धातुओं पर विभक्तियों का प्रयोग से काल और विधि आदि अर्थों का दस लकारों में व्यक्त होता है ।

लट् , लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ् (विधिलिङ्, आशीर्लिङ्), लुङ् , लृङ् ।

Example 1. Root भू = to be (with verbs in प्रथमपुरुषः, एकवचनम् form)

1) भवति	लट् लकारः वर्तमानकालः	Present tense (Time of present action) वर्तमानकाल का घटना वर्णन
2) बभूव	लिट् लकारः परोक्षभूतकालः	Remote past tense भूतकाल का घटना वर्णन जो हमारे सामने न घटी हो और ऐतिहासिक हो
3) भविता	लुट् लकारः अनद्यतनभविष्यत्कालः	Future tense (Time of future events) भविष्यकाल का घटना वर्णन (आज का नहि होता हैं)
4) भविष्यति	लृट् लकारः भविष्यत्कालः	Simple future tense सामान्य भविष्यकाल का घटना वर्णन
5)	लेट् लकारः (वेदे)	Used only in Veda. वेदों में हि पाया जाता हैं
6) भवतु	लोट् लकारः आज्ञार्थः	Imperative mood (command, entreaty) आज्ञा या आदेश संम्बन्दित भाव का प्रकटन
7) अभवत्	लङ् लकारः अनद्यतनभूतकालः	Past tense (Excluding current day) भूतकाल का घटना वर्णन (आज का नहि होता हैं)
8)	लिङ् लकारः	
	(१) भवेत् विधिलिङ् लकारः (विध्यर्थः)	Potential mood (Should,Ought, must) परामर्श संम्बन्दित (चाहना, करना) भाव का प्रकटन
	(२) भूयात् आशीर्लिङ् लकारः (आशीरर्थः)	Benedictive mood (Blessing etc) आशीर्वाद भाव का प्रकटन
9) अभूत्	लुङ् लकारः सामान्यभूतकालः	Past tense (aorist) (Todays action) सामान्य भूतकाल का घटना वर्णन
10) अभविष्यत्	लृङ् लकारः क्रियातिपत्तिः	Conditional Past Future tense एक क्रिया होने पर दुसरे क्रिया का सफलता का अर्थ वर्णन

Example 2. Root भू = to be (with verbs of लट् लकारः in all पुरुषाः and वचनानि)

भू धातोः वर्तमानकालस्य लट् लकाररूपाणि

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यमपुरुषः	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तमपुरुषः	भवामि	भवावः	भवामः

Bringisha Samhita Part - 3

Dr. Ketu Ramachandrasekhar

यस्तु वर्षशतं पूर्ण गयाश्राद्धं समीहते ॥25
दिनमेकन्तु मण्डे श्राद्धं पुण्यन्तु तत्समम् ॥26a.
द्विपञ्चाशतिवर्षाणि गयाश्राद्धानि कुर्वतः ।26.b
एकाहे तु रविक्षेत्रे पुण्यं प्राप्नोति मानवः ॥26.c
सूर्यपादे वरिष्ठे तु यः श्राद्धं कुरुते पुमान् ।
पितरो मोक्षमायान्ति न स भूयोऽभिजायते ॥ 27
सोमवारे त्वमावास्या रविवारे च सप्तमी ।
तत्र मलिम्लुचे मासे सूर्यक्षेत्रे पितॄन्यजेत् ॥ 28
अक्षयं चाप्यनन्तञ्च श्राद्धं दानं जपं हुतम् ।
ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र श्राद्धकाले विशेषतः ॥ 29
शक्योदनमपूपाश्च खण्डवेष्टिश्च शक्तितः ।
सघृतं पायसं चैव हविष्यं व्यञ्जनं तथा ॥30
हिंसाकारं तु यत्किञ्चित्तत्सर्वं परिवर्जयेत् ।
मांसं भुङ्क्ते तु यो मोहात्सूर्यक्षेत्रे कदाचन ॥ 31
निराशाः पितरस्तस्य शापं दत्वा प्रयान्ति वै ।
मृतभुक्त्वा चिरं कालं नरकं चाभिगच्छति ॥32
अन्यक्षेत्र कृतं पापं सूर्यक्षेत्रे विनश्यति ।
सूर्यक्षेत्रकृतं पापं वज्रलेपेन शुद्ध्यति ॥33
श्रीमार्तण्डये क्षेत्रे सप्तम्यां तु रविर्दिने ।
विजया नाम सा प्रोक्ता पितृणामिह मुक्तये ||34
मलिम्लुच सहस्राणि दशहारशतानि च ।
अष्टोत्तरममावस्यामेका विजयसप्तमी ॥35
यत्तु मार्त्तण्ड्यनाथस्य मासे चैव त्रयोदशे ।
गयापिण्डप्रदानस्य वाराणस्याश्च यत्फलम् ॥36
सूर्यक्षेत्रे कुरुक्षेत्र .... तु यत् ।
तत्फलं लभते मर्त्यः सत्यमेव न संशयः ॥37
अधार्मिकाणां पिण्डं च पतितव्रतिनां तथा ।
श्राद्धं पिण्डप्रदानं च तत्रैव तु मलिम्लुचे ||38
तृप्ताः प्रेताः मोदमानाः पितरो यान्ति वै दिवम् ||39

𑆪𑆱𑇀𑆠𑆶 𑆮𑆫𑇀𑆰𑆯𑆠𑆁 𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟 𑆓𑆪𑆳𑆯𑇀𑆫𑆳𑆢𑇀𑆣𑆁 𑆱𑆩𑆵𑆲𑆠𑆼 ॥25
𑆢𑆴𑆤𑆩𑆼𑆑𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆩𑆟𑇀𑆝𑆼 𑆯𑇀𑆫𑆳𑆢𑇀𑆣𑆁 𑆥𑆶𑆟𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆠𑆠𑇀𑆱𑆩𑆩𑇀 ॥26a.
𑆢𑇀𑆮𑆴𑆥𑆚𑇀𑆖𑆳𑆯𑆠𑆴𑆮𑆫𑇀𑆰𑆳𑆟𑆴 𑆓𑆪𑆳𑆯𑇀𑆫𑆳𑆢𑇀𑆣𑆳𑆤𑆴 𑆑𑆶𑆫𑇀𑆮𑆠𑆂 ।26.b
𑆍𑆑𑆳𑆲𑆼 𑆠𑆶 𑆫𑆮𑆴𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆥𑆶𑆟𑇀𑆪𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆥𑇀𑆤𑆾𑆠𑆴 𑆩𑆳𑆤𑆮𑆂 ॥26.c
𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆥𑆳𑆢𑆼 𑆮𑆫𑆴𑆰𑇀𑆜𑆼 𑆠𑆶 𑆪𑆂 𑆯𑇀𑆫𑆳𑆢𑇀𑆣𑆁 𑆑𑆶𑆫𑆶𑆠𑆼 𑆥𑆶𑆩𑆳𑆤𑇀 ।
𑆥𑆴𑆠𑆫𑆾 𑆩𑆾𑆑𑇀𑆰𑆩𑆳𑆪𑆳𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆤 𑆱 𑆨𑆷𑆪𑆾𑇁𑆨𑆴𑆘𑆳𑆪𑆠𑆼 ॥ 27
𑆱𑆾𑆩𑆮𑆳𑆫𑆼 𑆠𑇀𑆮𑆩𑆳𑆮𑆳𑆱𑇀𑆪𑆳 𑆫𑆮𑆴𑆮𑆳𑆫𑆼 𑆖 𑆱𑆥𑇀𑆠𑆩𑆵 ।
𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆩𑆬𑆴𑆩𑇀𑆬𑆶𑆖𑆼 𑆩𑆳𑆱𑆼 𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆥𑆴𑆠𑆹𑆤𑇀𑆪𑆘𑆼𑆠𑇀 ॥ 28
𑆃𑆑𑇀𑆰𑆪𑆁 𑆖𑆳𑆥𑇀𑆪𑆤𑆤𑇀𑆠𑆚𑇀𑆖 𑆯𑇀𑆫𑆳𑆢𑇀𑆣𑆁 𑆢𑆳𑆤𑆁 𑆘𑆥𑆁 𑆲𑆶𑆠𑆩𑇀 ।
𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆟𑆳𑆤𑇀𑆨𑆾𑆘𑆪𑆼𑆠𑇀𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆯𑇀𑆫𑆳𑆢𑇀𑆣𑆑𑆳𑆬𑆼 𑆮𑆴𑆯𑆼𑆰𑆠𑆂 ॥ 29
𑆯𑆑𑇀𑆪𑆾𑆢𑆤𑆩𑆥𑆷𑆥𑆳𑆯𑇀𑆖 𑆒𑆟𑇀𑆝𑆮𑆼𑆰𑇀𑆛𑆴𑆯𑇀𑆖 𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆠𑆂 ।
𑆱𑆔𑆸𑆠𑆁 𑆥𑆳𑆪𑆱𑆁 𑆖𑆽𑆮 𑆲𑆮𑆴𑆰𑇀𑆪𑆁 𑆮𑇀𑆪𑆚𑇀𑆘𑆤𑆁 𑆠𑆡𑆳 ॥30
𑆲𑆴𑆁𑆱𑆳𑆑𑆳𑆫𑆁 𑆠𑆶 𑆪𑆠𑇀𑆑𑆴𑆚𑇀𑆖𑆴𑆠𑇀𑆠𑆠𑇀𑆱𑆫𑇀𑆮𑆁 𑆥𑆫𑆴𑆮𑆫𑇀𑆘𑆪𑆼𑆠𑇀 ।
𑆩𑆳𑆁𑆱𑆁 𑆨𑆶𑆕𑇀𑆑𑇀𑆠𑆼 𑆠𑆶 𑆪𑆾 𑆩𑆾𑆲𑆳𑆠𑇀𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆑𑆢𑆳𑆖𑆤 ॥ 31
𑆤𑆴𑆫𑆳𑆯𑆳𑆂 𑆥𑆴𑆠𑆫𑆱𑇀𑆠𑆱𑇀𑆪 𑆯𑆳𑆥𑆁 𑆢𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆳𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆮𑆽 ।
𑆩𑆸𑆠𑆨𑆶𑆑𑇀𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆖𑆴𑆫𑆁 𑆑𑆳𑆬𑆁 𑆤𑆫𑆑𑆁 𑆖𑆳𑆨𑆴𑆓𑆖𑇀𑆗𑆠𑆴 ॥32
𑆃𑆤𑇀𑆪𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫 𑆑𑆸𑆠𑆁 𑆥𑆳𑆥𑆁 𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆮𑆴𑆤𑆯𑇀𑆪𑆠𑆴 ।
𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫𑆑𑆸𑆠𑆁 𑆥𑆳𑆥𑆁 𑆮𑆘𑇀𑆫𑆬𑆼𑆥𑆼𑆤 𑆯𑆶𑆢𑇀𑆣𑇀𑆪𑆠𑆴 ॥33
𑆯𑇀𑆫𑆵𑆩𑆳𑆫𑇀𑆠𑆟𑇀𑆝𑆪𑆼 𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆱𑆥𑇀𑆠𑆩𑇀𑆪𑆳𑆁 𑆠𑆶 𑆫𑆮𑆴𑆫𑇀𑆢𑆴𑆤𑆼 ।
𑆮𑆴𑆘𑆪𑆳 𑆤𑆳𑆩 𑆱𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆾𑆑𑇀𑆠𑆳 𑆥𑆴𑆠𑆸𑆟𑆳𑆩𑆴𑆲 𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆪𑆼 ||34
𑆩𑆬𑆴𑆩𑇀𑆬𑆶𑆖 𑆱𑆲𑆱𑇀𑆫𑆳𑆟𑆴 𑆢𑆯𑆲𑆳𑆫𑆯𑆠𑆳𑆤𑆴 𑆖 ।
𑆃𑆰𑇀𑆛𑆾𑆠𑇀𑆠𑆫𑆩𑆩𑆳𑆮𑆱𑇀𑆪𑆳𑆩𑆼𑆑𑆳 𑆮𑆴𑆘𑆪𑆱𑆥𑇀𑆠𑆩𑆵 ॥35
𑆪𑆠𑇀𑆠𑆶 𑆩𑆳𑆫𑇀𑆠𑇀𑆠𑆟𑇀𑆝𑇀𑆪𑆤𑆳𑆡𑆱𑇀𑆪 𑆩𑆳𑆱𑆼 𑆖𑆽𑆮 𑆠𑇀𑆫𑆪𑆾𑆢𑆯𑆼 ।
𑆓𑆪𑆳𑆥𑆴𑆟𑇀𑆝𑆥𑇀𑆫𑆢𑆳𑆤𑆱𑇀𑆪 𑆮𑆳𑆫𑆳𑆟𑆱𑇀𑆪𑆳𑆯𑇀𑆖 𑆪𑆠𑇀𑆦𑆬𑆩𑇀 ॥36
𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆑𑆶𑆫𑆶𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫𑆼 .... 𑆠𑆶 𑆪𑆠𑇀 ।
𑆠𑆠𑇀𑆦𑆬𑆁 𑆬𑆨𑆠𑆼 𑆩𑆫𑇀𑆠𑇀𑆪𑆂 𑆱𑆠𑇀𑆪𑆩𑆼𑆮 𑆤 𑆱𑆁𑆯𑆪𑆂 ॥37
𑆃𑆣𑆳𑆫𑇀𑆩𑆴𑆑𑆳𑆟𑆳𑆁 𑆥𑆴𑆟𑇀𑆝𑆁 𑆖 𑆥𑆠𑆴𑆠𑆮𑇀𑆫𑆠𑆴𑆤𑆳𑆁 𑆠𑆡𑆳 ।
𑆯𑇀𑆫𑆳𑆢𑇀𑆣𑆁 𑆥𑆴𑆟𑇀𑆝𑆥𑇀𑆫𑆢𑆳𑆤𑆁 𑆖 𑆠𑆠𑇀𑆫𑆽𑆮 𑆠𑆶 𑆩𑆬𑆴𑆩𑇀𑆬𑆶𑆖𑆼 ||38
𑆠𑆸𑆥𑇀𑆠𑆳𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆼𑆠𑆳𑆂 𑆩𑆾𑆢𑆩𑆳𑆤𑆳𑆂 𑆥𑆴𑆠𑆫𑆾 𑆪𑆳𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆮𑆽 𑆢𑆴𑆮𑆩𑇀 ||39

25b-26a: A single performance of Shraddha rites in the sacred Martand region holds the same spiritual merit as conducting Shraddha in Gaya for a century.
26b-c: Moreover, an individual who conducts Shraddha just once in the revered Ravi Kshetra gains equivalent virtues to those accrued from a hundred years of performing it in Gaya.
27: The man who offers Shraddha during Suryapada, the time of day devoted to Surya, ensures eternal salvation for his ancestors, freeing them from the cycle of rebirth.
28: It is essential to honour one's ancestors, particularly on days marked by the conjunction of Amavasya with Monday, Saptami with Sunday, and during the Malamasa (Purushottama month).
29: The benefits of performing Shraddha, giving dana (charity), reciting mantras, and conducting homa (fire rituals) in Martanda are boundless and everlasting. Feeding Brahmanas is especially meritorious during the Shraddha.
30: Offerings should include Shakyodana (sweetened rice), Apupa (Vada), Khandveshti (Malpua), Payasa (Kheer), and other dishes, according to one's means.
31-32: On Shraddha occasions, one must abstain from any food associated with harm or violence. Inadvertently serving or consuming meat in Martanda brings ancestral displeasure and curses, and the server faces prolonged suffering in the afterlife.
33: Sins incurred at other pilgrimage sites are absolved in Surya Kshetra, but transgressions in Surya Kshetra can only be cleansed with the intense penance of Vajralepa.
34: The conjunction of Saptami with Sunday is known as Vijayasaptami. Rites performed on this day grant liberation to one's forebears.
35: A single Vijayasaptami observance is more spiritually rewarding than thousands of Malamasa Shraddhas, hundreds of Dusseras, and over a hundred Amavasyas.
36-37: The merits of numerous Pindadana-Shraddha rites performed at holy places like Gaya, Varanasi, and Kurukshetra can be obtained by a single observance during Malamasa in Martanda.
38-39: Even those who have strayed from virtue, broken their vows, and suffer as spirits after death, they too can achieve the exalted state of ancestors when Shraddha is performed for them in Martanda.

परवानॖ लॉगिथ गथ करस
तथ शम्मा रोयस तल मरस
छम कल तॅहुंज़ मोल छुम नॖ हार
अज़ॖ सालॖ अनतनॖ बालॖयार

English Translation

Like a moth (परवानॖ) circling the flame
(गथ करस) (and dying for it eventually),
I will sacrifice (मरस) myself for his
radiant flame-face (शम्मा रोयस)
I am worried about him (छम कल तॅहुंज़)
I wasn't able to repay (हार) the price
(मोल) of love we shared (मोल छुम नॖ हार)
Can you please get (अनतनॖ) my love home

पन तु अमिच महिमा / 𑆥𑆤 𑆠𑆶 𑆃𑆩𑆴𑆖 𑆩𑆲𑆴𑆩𑆳

Kishni Pandita

वेनायक ज़ोरम हुंज़ छि कार्शयन बटन खांतुर् स्यठा ख़ास महिमा । अमि दोह छि कार्शिर्य बट् दोन दीवियन, माजि विबा तु गरबायि हुंज़ पूज़ा करान। यिम् दोशवय छि कृशी हुंज़ु दीवी। वार्- वारु वख़्तस सुत्य बनेयु विबा तु गर्बा माजि बीब गरस मांज। वुनि ति येलि पनुच पूज़ा छि गरन मंज़ करान बीब गरस माजि सुती छि शोरू करान ।

यि बोड दोह छु बदुर्यप्यथस मंज़ यिवान मनावुनु। नवि कपुसुक पन ओस अकिस कन्यायि हुंदि अथु श्रोच्रि श्रानि कतनावनु यिवान । यि गोडन्युक पन ओस विबायि तु गर्बायि माजन अर्पण यिवान करुनु।

चूंकि पृथ शोब कामि ब्रोंठ छि गनीशजी सुंज़ अस्तोती करनु यिवान, तु व्यनायक ज़ोरम हुंज़ छि बटन खांतुर् ख़ास महिमा। अमि दोह तु बेयि दोन त्रेन दोहन, येमि दोहन जान साथ आसि छु पन यिवान दिनु। दपान छि अमि पूज़ायि हुंद छु स्यठा महत्व। अगर मनुशस आसि ख़राब वखुत चलान या गछ्यस कम वख़्तस मंज़ मनवांछित फलुच्य कामना, तुमिस पज़ि यि पूज़ा करुन्य।

सर्वशास्त्र ज्ञाता सूतजी छु वनान ज़ि युस मनुश यि पनदान वृत करि, गनेशजी तु कृशि दीवियन हुंज़ि कृपायि सुत्य (रूज़ी) तस दन, सोख सम्पदा, सारेय मनोकामनायि गछ्नस स्यद।

पन पूज़ा छि हश ज़िछि नोशि पिलनावान त यिथु पांठ्य छि यि परम्परा ब्रोंठ कुन पकान।

अमी दोह छि यिवान रोठ बनावनु। अथ सुत्य छि कुनक् आटिच दुवेरि फुल्क् ति यिवान बनावनु। अड्यन गरन छे बुज़ु वांगुन बनावनुक ति रीथ रेवाज।

पूज़ायि हुंज़ि जायि प्यठ छु अख गंड्वु / कलश, थवान। अथ प्यठ छु रोठ, फुलुक् , मेवु तु कोतमुत पन यिवान थवनु । गंड्वस मंज़ छु पोन्य,दोद, ज़ाफल,अख रोपय तु द्रमुन रच्रिहेना थवान। सांरी बांच्र छि कलुशस ब्रोंठ कनि बेहान, अथस मंज़ छि रटान अर्ग, पोश तु बेयि द्रमुन । तमि पतु छि गरुच ज़िठ, बंड मांज (तमिस गरीब) सुंज़ कथा वनान तु किथु पांठ्य छि यमि पूज़ायि सुत्य तंम्य संद्य दोह फ़ेरान।

पोतुस छि बंड़ मांज वनान 'यिथु पांठ्य तमि सुंद नसीबु फ्यूर तिथय पांठ्य फीरितन असि ति। असि सारिनी रूज़ितन महागनीश सुंज़ तु दीवियन हुंज़ कृपा।

Names of professions in Kashmiri

Parul Sharga

नॉयिद / 𑆤𑆾𑆪𑆴𑆢

खार / 𑆒𑆳𑆫

छान / 𑆗𑆳𑆤

मोज़ूर / 𑆩𑆾𑆘𑇊𑆷𑆫

बूट् वातुल / 𑆧𑆷𑆛𑇀 𑆮𑆳𑆠𑆶𑆬

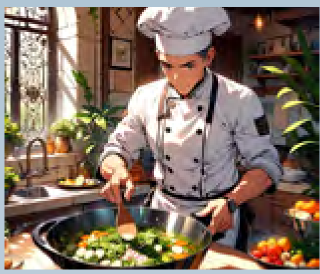

वाज़ / 𑆮𑆳𑆘𑇊

स्वनुर / 𑆱𑇀𑆮𑆤𑆶𑆫

डाक् वोल / 𑆝𑆳𑆑𑇀 𑆮𑆾𑆬

ग्रूस / 𑆓𑇀𑆫𑆷𑆱

दसिल / 𑆢𑆱𑆴𑆬

गूर / 𑆓𑆷𑆫

गाड् हांज़ / 𑆓𑆳𑆝𑇀 𑆲𑆳𑆁𑆘𑇊

वकील / 𑆮𑆑𑆵𑆬

क्राल / 𑆑𑇀𑆫𑆳𑆬

कांदुर / 𑆑𑆳𑆁𑆢𑆶𑆫

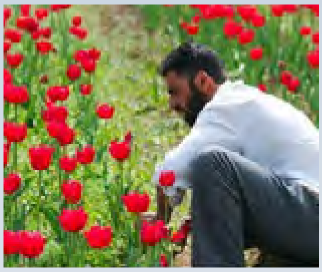

बागवान / 𑆧𑆳𑆓𑆮𑆳𑆤

गबि रोछ / 𑆓𑆧𑆴 𑆫𑆾𑆗

दोब / 𑆢𑆾𑆧

सुच़ / 𑆱𑆶𑆖𑇊

नलक् वोल / 𑆤𑆬𑆑𑇀 𑆮𑆾𑆬

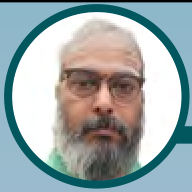

Celebrating 'Parva' in Bharatiya Civilization "Going Back to Roots)

Dr. Ketu Ramachandrasekhar

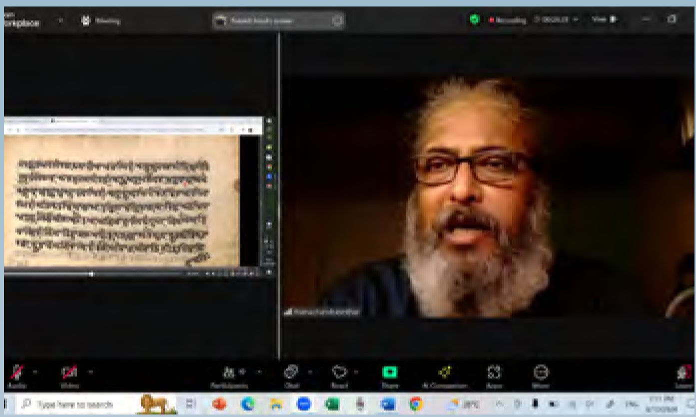

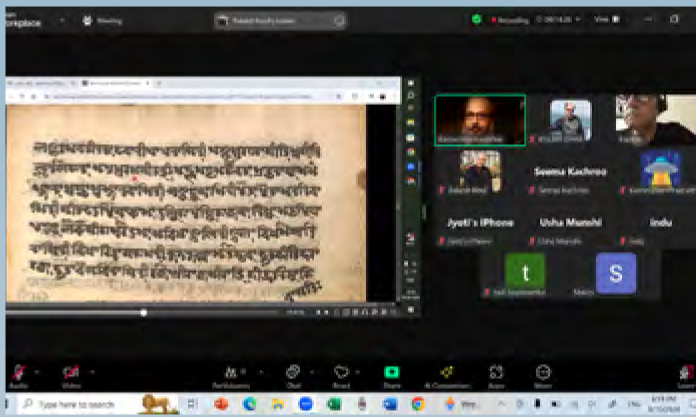

During the weekly session of "Going Back to Roots" on explanation of Bhavani Sahasranama, the explanation on the name SuParva was very beautifully explained by Sekharji. We requested him to write a detailed article on the same.
Celebrating 'Parva' in Bharatiya Civilization
Ketu Ramachandrasekhar

Bharat, a land of staggering diversity, celebrates festivals for every reason and every season. These festivals are the expressions of a culture that lives in a state of perpetual celebration. They are the moments when the mundane transcends into the magnificent, bringing life to a state of exuberance and enthusiasm. Each festival here weaves together stories of the past with the aspirations of the present. The festivals are as varied as the people themselves, celebrating everything from the bounty of harvests to the memories of historical legends, and from the reverence for deities to the cycles of the moon and sun. Homes come alive with lights and colors, new garments add splendor to the gatherings, and the air resonates with the melodies of music and the rhythm of dance steps. Feasting tables unite families and friends, as every festival becomes a momentous occasion to rejuvenate the bonds and share joy. In Bharat, festivals are not just days on a calendar; they are exuberant expressions of a culture that cherishes every shade of life's palette.

In the Bhavani Sahasranama, one of the names attributed to Devi is Suparva. This name signifies "one who is in the form of Parva," referring to the festival that marks the conjunction of two elements. This profound name brings out the essence of Hindu festivals, where the convergence of diverse cultural, spiritual, and natural elements is celebrated. These festivals, deeply embedded in the Indian ethos, reflect the harmony between human life and the cycles of nature, the union of community and spirituality, and the blending of tradition and joy.

The essence of these celebrations transcends mere merriment; they are the heartbeat of a civilization that has always found reasons to rejoice. The agrarian roots of the country turned every aspect of farming into a cause for festivity—from the ploughing of fields to the sowing of seeds, and from the meticulous care of the growing crops to the jubilance of the harvest. These were the days when the entire culture was a continuous festival, each day a chapter in an ongoing saga of life and labor. However, the tides of time have brought changes. With the advent of poverty over the centuries, the daily festivities waned, leaving behind only the most significant ones to be celebrated. Yet, even as the number of festivals has diminished, their spirit remains undiminished, reminding us of the resilience and eternal optimism that define the Indian ethos

In the rich culture of Bharatiya civilization, festivals, also known as Parva hold a place of profound significance. These celebrations, known as Parva, are deeply rooted in the agrarian traditions of Bharat. Parvas are not mere markers of time but the rhythm of an agrarian society's heartbeat. The very essence of Bharatiya society has been woven around its agricultural practices, with festivals marking the rhythms of the agricultural calendar.

Bharatiya civilization has fulfilled its Dharma as an

agrarian society by intricately linking the concepts of space and time with rain, a vital component for agriculture. The word "Varsha" in Sanskrit, intriguingly, means rain, year, and land, underscoring this intrinsic connection. This linguistic unity reflects how deeply entwined agriculture and natural cycles are with the cultural and temporal understanding in Bharat.

Hindu festivals, or Parva, are more than mere celebrations; they are a testament to the deep connection between Bharatiya civilization and its agrarian roots. These festivals not only mark the passage of time and the changing seasons but also reinforce the harmonious relationship between humans and nature. Through these vibrant celebrations, the wisdom of the ancients continues to guide modern agricultural practices, ensuring that the cycle of life, growth, and harvest remains unbroken.

Parva in Jyotisha:
The term 'Parva' in Jyotisha signifies the sacred conjunctions and oppositions of the Sun and Moon, the full and new Moon tithis, and the eclipses. In the Bhutasankhya representation system, it represents the number five, denoting the five auspicious days in a month—Amavasya, Purnima, Krishna paksha Ashtami, Krishna paksha Chaturdashi, and Sankranti. These days are not just dates on a calendar but the confluence of divine energies. Parva is the act of joining, the association of time and space with the spirit of humanity. It is the node in the stem of life, where the physical and metaphysical meet. It is the period when performing sacred ceremonies yields the highest merit.

The root meaning of 'Parva' beautifully captures the essence of festivals in Indian culture. The word 'Parva' signifies the act of joining or associating, which resonates with the way festivals bring people together, fostering a sense of community and shared experience. Just as a node (or joint) on a plant stem signifies a point of connection and growth, festivals serve as pivotal moments that connect various aspects of life—spiritual, social, and agricultural.

In the context of festivals, 'Parva' can be seen as a time when the celestial and the terrestrial, the divine and the human, the past and the present, all converge. It is an association not just between people, but also between people and the divine, the earth, and the cosmos. This convergence is celebrated through rituals, prayers, and communal activities that mark the festival's significance.

Moreover, just as a node on a plant is a critical point that supports new growth and branching, festivals are moments that strengthen cultural roots and encourage the blossoming of community spirit. They are points in time that allow for reflection, renewal, and the nurturing of bonds within the community. In this way, 'Parva' as a concept goes beyond the literal meaning to embody the deeper connections that festivals foster within society.

Bharat boasts a variety of calendars, reflecting its diverse cultural and regional traditions. Some of these are lunar-based, some are solar-based, and others are luni-solar, blending both lunar and solar calculations. This multiplicity of calendars mirrors the complexity and richness of Bharatiya cultural practices, each attuned to the agricultural and climatic variations of their regions.

The Role of Agriculture:
Agriculture has been the cornerstone of Bharatiya civilization, with the agricultural calendar dictating the timing of festivals and cultural practices. The year and its months were defined by agricultural activities: sowing, harvesting, accounting, cleaning, and resting. These activities (achara) practised in specific time (Kaala) collectively shaped the kalachara (culture) of Bharatavarsha.

Seasonal Agriculture and Traditional Knowledge
Seasonal agriculture mirrors the cycle of life itself—from seed to flower to seed, encapsulating an entire generation within a single season. It is the seed that bridges generations, ensuring the continuity of life and tradition.

In Bharatiya tradition, agriculture is seen in two main aspects:
Seasonal Agriculture: This type of agriculture completes its cycle within one season, with plants living for one season alone. The seed acts as a bridge between two generations of crop cycles.
Perennial Agriculture: Some crops grow throughout the year, providing a steady supply of produce.

Some major festivals tied to agricultural cycles include:
Deepavali (Diwali): Celebrated in October/November, it follows the harvest season and is a time of joy and thanksgiving.
Sankranti, Pongal, Bihu, Lohri: These festivals, celebrated in January, mark the harvest season and are

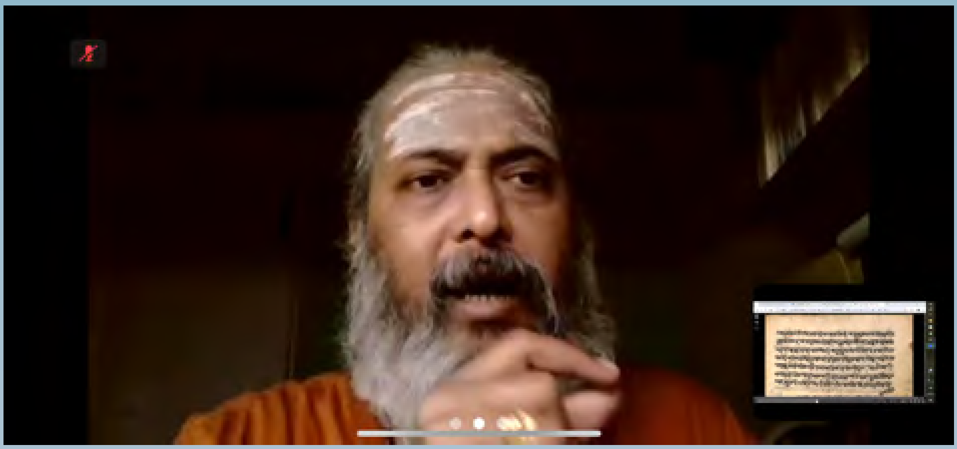

times of communal feasting and merriment.
Ugadi: Celebrated in April, it marks the beginning of the new year in some regions and is associated with deep ploughing of land. On this day, people take baths with neem leaves, believed to have medicinal properties.
Holi: The festival of colors in March, it signifies the end of winter and the beginning of the spring harvest.
Nagapanchami: Celebrated in August, this festival emphasizes soil health. Raw milk and ghee are poured into termite mounds in honor of the snakes, attracting ants that help improve soil quality.

But what of summer? It is a season of anticipation, where the land and its people await the monsoon's rejuvenating embrace. It is a time of preparation, where the seeds of tomorrow's bounty are sown in the womb of the earth.

Traditional knowledge in Bharatiya society has been passed down through generations via oral traditions, myths, proverbs, folklore, legends, rituals, songs, arts, and even laws. This accumulated wisdom reflects the practical effects of living in harmony with nature. Let us try to understand this in connection with the festival of Nagapanchami,
which is celebrated in Ashadha month (July- August). It is a festival that exemplifies the harmonious relationship between traditional farming practices and cultural festivities. It underscores the ancient wisdom of integrating agricultural activities with religious observance to sustain and enhance soil health, which is vital for a successful harvest.

During Nagapanchami, farmers pour raw milk and ghee onto soil bunds constructed by termites, as an offering to the Nagas-snakes. This practice is not merely a religious ritual but serves a dual purpose. The offering attracts a variety of ants to the fields. These ants, in turn, play a crucial role in pest control by helping to manage the termite population, which can be particularly problematic during the harvesting season. By controlling termites naturally, the ants aid in preserving the integrity of the soil and the crops.

Furthermore, after the harvest, farmers traditionally construct bunds in their fields. These bunds are not only effective in water retention and soil conservation but also act as a preventive measure against termite infestation. The creation of bunds is a proactive step that reflects the ingenuity of traditional farming methods.

Similar to Nagapanchami which is a prime example of how festivals are intricately linked to farming practices there are several others which showcase a sustainable approach to agriculture that respects and utilizes biodiversity, aligning religious devotion with ecological stewardship- all done during festivals.

Let us rediscover the essence of 'Parva,' and rekindle the spirit of celebration that is the hallmark of Bharatiya culture. Let us celebrate these festivals, not just treat them as days of observance but as the vibrant pulsations of an agrarian legacy that continues to enrich our lives.

श्री परमान्नदजी की कविता संतोश ब्यालि बवि आनंद फल

𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆤𑇀𑆤𑆢𑆘𑆵 𑆑𑆵 𑆑𑆮𑆴𑆠𑆳 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯 𑆧𑇀𑆪𑆳𑆬𑆴 𑆧𑆮𑆴 𑆄𑆤𑆁𑆢 𑆦𑆬

Explanation by Sh A K Razdan

कर्मु बूमिकायि दिज़ि दर्मुक बल,
संतोशु ब्यालि बवि आनंदु फल।

द्रयि प्रानु दान्दुज़ूर्य द्यन तु राथ वाय,
कुम्बक् कुरु ज़ोरु तिम नुय लाय,
हिलु कर युथ नु बीठ रॊज़ि कांह रेल। संतोशु॰
लोल के अलु फालु तुलु तुलनाविथ,
दैरु यट् फुरि दतु फुट्राविथ,
वैरुक स्नेह युथ नु रोज़्यस तल। संतोशु॰

वेन्नार बंठ्य तु बेरु लंदिथ क्यथ,
श्रूच़ यनु द्यव श्वजराविथ वथ,
समद्रश्टि पातुजन अदु फेरि ज़ल। संतोशु॰

सोंत छुय दोह तारु मोत यावुन ,
पज़ि नज़ि साथा रावुरावुन ,
वव ब्योल मव प्रार करु मंगल। संतोशु॰

त्रोपुरिथ स्फुरनायि नाम्य वुदर ,
सोरुके रबि च़खि सुत्यन बर ,
इंद्रिय गगुरन करू वठल। संतोशु॰

ब्कती हुंज़ि न्यंदि फेरि सादनायि खीत्य,
ह्यलि नेरि तपुके पपु सगु सुत्य,
संबावनायि फोलि पंपोश डल। संतोशु॰

विशये पंश वारु रछिनावख,
तिमुनुय अथि युथ नु खीत्य ख्यावख,
बावुचि रावुछि नेर निशकल। संतोशु॰

हेलि येलि नेरि तेलि सप न्यस क्राव,
वैरागु द्राति सुत्य लून्य लून्य त्राव,
संबन्दु रोस्न मॉव्य लाव्यन वल। संतोशु॰

मटि खसु नु चि रज़ि मटि मटि सार,
साद नि अन बाय बंद तय यार,
निति नेमु सोमरिथ अदु समि खल। संतोशु॰

त्रिगुन त्यागु नोम अख गोन लद,
निर्मानु प्रावख निर्वानु पद,
समि तंत्य तमु दिथ तु कर कोशल। संतोशु॰

द्यानु दारनायि वानु मोंड व्यस्तार ,
ग्यानु दानु खासु खासु गासु निश च़ार,
मनुके अनुबवु वारु दिथ छल। संतोशु॰

त्याग के अथु सुत्य वारु छोम्बुनाव,
प्रोन तु ज़ग ब्योन ब्योन फुटुजन थाव,
ज़ागि रोज़ लागुनयि त्राविथ ज़्वल। संतोशु॰

𑆑𑆫𑇀𑆩𑆶 𑆧𑆷𑆩𑆴𑆑𑆳𑆪𑆴 𑆢𑆴𑆘𑆴 𑆢𑆫𑇀𑆩𑆶𑆑 𑆧𑆬,
𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶 𑆧𑇀𑆪𑆳𑆬𑆴 𑆧𑆮𑆴 𑆄𑆤𑆁𑆢𑆶 𑆦𑆬।
𑆢𑇀𑆫𑆪𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆤𑆶 𑆢𑆳𑆤𑇀𑆢𑆶𑆘𑆷𑆫𑇀𑆪 𑆢𑇀𑆪𑆤 𑆠𑆶 𑆫𑆳𑆡 𑆮𑆳𑆪,
𑆑𑆶𑆩𑇀𑆧𑆑𑇀 𑆑𑆶𑆫𑆶 𑆘𑆾𑆫𑆶 𑆠𑆴𑆩 𑆤𑆶𑆪 𑆬𑆳𑆪,
𑆲𑆴𑆬𑆶 𑆑𑆫 𑆪𑆶𑆡 𑆤𑆶 𑆧𑆵𑆜 𑆫𑆾𑆘𑆴 𑆑𑆳𑆁𑆲 𑆫𑆼𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆬𑆾𑆬 𑆑𑆼 𑆃𑆬𑆶 𑆦𑆳𑆬𑆶 𑆠𑆶𑆬𑆶 𑆠𑆶𑆬𑆤𑆳𑆮𑆴𑆡,
𑆢𑆽𑆫𑆶 𑆪𑆛𑇀 𑆦𑆶𑆫𑆴 𑆢𑆠𑆶 𑆦𑆶𑆛𑇀𑆫𑆳𑆮𑆴𑆡,
𑆮𑆽𑆫𑆶𑆑 𑆱𑇀𑆤𑆼𑆲 𑆪𑆶𑆡 𑆤𑆶 𑆫𑆾𑆘𑇀𑆪𑆱 𑆠𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆮𑆼𑆤𑇀𑆤𑆳𑆫 𑆧𑆁𑆜𑇀𑆪 𑆠𑆶 𑆧𑆼𑆫𑆶 𑆬𑆁𑆢𑆴𑆡 𑆑𑇀𑆪𑆡,
𑆯𑇀𑆫𑆷𑆖 𑆪𑆤𑆶 𑆢𑇀𑆪𑆮 𑆯𑇀𑆮𑆘𑆫𑆳𑆮𑆴𑆡 𑆮𑆡,
𑆱𑆩𑆢𑇀𑆫𑆯𑇀𑆛𑆴 𑆥𑆳𑆠𑆶𑆘𑆤 𑆃𑆢𑆶 𑆦𑆼𑆫𑆴 𑆘𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆱𑆾𑆁𑆠 𑆗𑆶𑆪 𑆢𑆾𑆲 𑆠𑆳𑆫𑆶 𑆩𑆾𑆠 𑆪𑆳𑆮𑆶𑆤 ,
𑆥𑆘𑆴 𑆤𑆘𑆴 𑆱𑆳𑆡𑆳 𑆫𑆳𑆮𑆶𑆫𑆳𑆮𑆶𑆤 ,
𑆮𑆮 𑆧𑇀𑆪𑆾𑆬 𑆩𑆮 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫 𑆑𑆫𑆶 𑆩𑆁𑆓𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆠𑇀𑆫𑆾𑆥𑆶𑆫𑆴𑆡 𑆱𑇀𑆦𑆶𑆫𑆤𑆳𑆪𑆴 𑆤𑆳𑆩𑇀𑆪 𑆮𑆶𑆢𑆫 ,
𑆱𑆾𑆫𑆶𑆑𑆼 𑆫𑆧𑆴 𑆖𑆒𑆴 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆪𑆤 𑆧𑆫 ,
𑆅𑆁𑆢𑇀𑆫𑆴𑆪 𑆓𑆓𑆶𑆫𑆤 𑆑𑆫𑆷 𑆮𑆜𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆧𑇀𑆑𑆠𑆵 𑆲𑆶𑆁𑆘𑆴 𑆤𑇀𑆪𑆁𑆢𑆴 𑆦𑆼𑆫𑆴 𑆱𑆳𑆢𑆤𑆳𑆪𑆴 𑆒𑆵𑆠𑇀𑆪,
𑆲𑇀𑆪𑆬𑆴 𑆤𑆼𑆫𑆴 𑆠𑆥𑆶𑆑𑆼 𑆥𑆥𑆶 𑆱𑆓𑆶 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆪,
𑆱𑆁𑆧𑆳𑆮𑆤𑆳𑆪𑆴 𑆦𑆾𑆬𑆴 𑆥𑆁𑆥𑆾𑆯 𑆝𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆮𑆴𑆯𑆪𑆼 𑆥𑆁𑆯 𑆮𑆳𑆫𑆶 𑆫𑆗𑆴𑆤𑆳𑆮𑆒,
𑆠𑆴𑆩𑆶𑆤𑆶𑆪 𑆃𑆡𑆴 𑆪𑆶𑆡 𑆤𑆶 𑆒𑆵𑆠𑇀𑆪 𑆒𑇀𑆪𑆳𑆮𑆒,
𑆧𑆳𑆮𑆶𑆖𑆴 𑆫𑆳𑆮𑆶𑆗𑆴 𑆤𑆼𑆫 𑆤𑆴𑆯𑆑𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆲𑆼𑆬𑆴 𑆪𑆼𑆬𑆴 𑆤𑆼𑆫𑆴 𑆠𑆼𑆬𑆴 𑆱𑆥 𑆤𑇀𑆪𑆱 𑆑𑇀𑆫𑆳𑆮,
𑆮𑆽𑆫𑆳𑆓𑆶 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆠𑆴 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆪 𑆬𑆷𑆤𑇀𑆪 𑆬𑆷𑆤𑇀𑆪 𑆠𑇀𑆫𑆳𑆮,
𑆱𑆁𑆧𑆤𑇀𑆢𑆶 𑆫𑆾𑆱𑇀𑆤 𑆩𑆾𑆮𑇀𑆪 𑆬𑆳𑆮𑇀𑆪𑆤 𑆮𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆩𑆛𑆴 𑆒𑆱𑆶 𑆤𑆶 𑆖𑆴 𑆫𑆘𑆴 𑆩𑆛𑆴 𑆩𑆛𑆴 𑆱𑆳𑆫,
𑆱𑆳𑆢 𑆤𑆴 𑆃𑆤 𑆧𑆳𑆪 𑆧𑆁𑆢 𑆠𑆪 𑆪𑆳𑆫,
𑆤𑆴𑆠𑆴 𑆤𑆼𑆩𑆶 𑆱𑆾𑆩𑆫𑆴𑆡 𑆃𑆢𑆶 𑆱𑆩𑆴 𑆒𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆠𑇀𑆫𑆴𑆓𑆶𑆤 𑆠𑇀𑆪𑆳𑆓𑆶 𑆤𑆾𑆩 𑆃𑆒 𑆓𑆾𑆤 𑆬𑆢,
𑆤𑆴𑆫𑇀𑆩𑆳𑆤𑆶 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆮𑆒 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆳𑆤𑆶 𑆥𑆢,
𑆱𑆩𑆴 𑆠𑆁𑆠𑇀𑆪 𑆠𑆩𑆶 𑆢𑆴𑆡 𑆠𑆶 𑆑𑆫 𑆑𑆾𑆯𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆢𑇀𑆪𑆳𑆤𑆶 𑆢𑆳𑆫𑆤𑆳𑆪𑆴 𑆮𑆳𑆤𑆶 𑆩𑆾𑆁𑆝 𑆮𑇀𑆪𑆱𑇀𑆠𑆳𑆫 ,
𑆓𑇀𑆪𑆳𑆤𑆶 𑆢𑆳𑆤𑆶 𑆒𑆳𑆱𑆶 𑆒𑆳𑆱𑆶 𑆓𑆳𑆱𑆶 𑆤𑆴𑆯 𑆖𑆳𑆫,
𑆩𑆤𑆶𑆑𑆼 𑆃𑆤𑆶𑆧𑆮𑆶 𑆮𑆳𑆫𑆶 𑆢𑆴𑆡 𑆗𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·
𑆠𑇀𑆪𑆳𑆓 𑆑𑆼 𑆃𑆡𑆶 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆪 𑆮𑆳𑆫𑆶 𑆗𑆾𑆩𑇀𑆧𑆶𑆤𑆳𑆮,
𑆥𑇀𑆫𑆾𑆤 𑆠𑆶 𑆘𑆓 𑆧𑇀𑆪𑆾𑆤 𑆧𑇀𑆪𑆾𑆤 𑆦𑆶𑆛𑆶𑆘𑆤 𑆡𑆳𑆮,
𑆘𑆳𑆓𑆴 𑆫𑆾𑆘 𑆬𑆳𑆓𑆶𑆤𑆪𑆴 𑆠𑇀𑆫𑆳𑆮𑆴𑆡 𑆘𑇀𑆮𑆬। 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶·

तुलिथ अदु थव अंबरन माल,
सोहम हायकु सुत्य नखु वाल,
लोति बार वातुनाविथ खनुबल। संतोशु॰

शमु दमु यमु नेमु गाट वातु नाव,
शानती श्रदायि ज़लु पकुनाव नाव,
पानस शिहुलिथ मानसबल। संतोशु॰

लागुनयि वालि माल आगस तार,
खाल्य युथ नु रोज़ि हाल्य जांगीरदार ,
फाज़िल तु बाकी नेरि कस तल । संतोशु॰

च़ोरिथ बियि ब्योल संच्रिथ थव ,
सोंत येलि यियि तेलि फलि फलि वव,
वॅपकारु वॅपदी नव नव थल। संतोशु॰

योगु मायायि हुंद बूगी आस,
यी छय दुय तस सुत्य तिय कास,
सादु नाव प्योय तय स्वादु मो डल। संतोशु॰

कर्मु फल सोरुय गुरु शब्दय ,
संच्रिथ क्रिय मान प्रारब्दय,
कर्मु कांडु वनि नेरि ग्यानु वुज़मल। संतोशु॰

स्वयम प्रकाशिके विग्यानय ,
त्रांविथ मान बेयि अबिमानय,
प्रांविथ रोज़ द्वादु शान्तु मन्डल। संतोशु॰

परमान्द ओस ज़मीनदार,
हूरिथ दनु द्यार सूरित लार,
वांगुज वांरिच ज़ंजिस गांगल। संतोशु॰ ॰

𑆠𑆶𑆬𑆴𑆡 𑆃𑆢𑆶 𑆡𑆮 𑆃𑆁𑆧𑆫𑆤 𑆩𑆳𑆬,
𑆱𑆾𑆲𑆩 𑆲𑆳𑆪𑆑𑆶 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆪 𑆤𑆒𑆶 𑆮𑆳𑆬,
𑆬𑆾𑆠𑆴 𑆧𑆳𑆫 𑆮𑆳𑆠𑆶𑆤𑆳𑆮𑆴𑆡 𑆒𑆤𑆶𑆧𑆬𑇅 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶𑇇
𑆯𑆩𑆶 𑆢𑆩𑆶 𑆪𑆩𑆶 𑆤𑆼𑆩𑆶 𑆓𑆳𑆛 𑆮𑆳𑆠𑆶 𑆤𑆳𑆮,
𑆯𑆳𑆤𑆠𑆵 𑆯𑇀𑆫𑆢𑆳𑆪𑆴 𑆘𑆬𑆶 𑆥𑆑𑆶𑆤𑆳𑆮 𑆤𑆳𑆮,
𑆥𑆳𑆤𑆱 𑆯𑆴𑆲𑆶𑆬𑆴𑆡 𑆩𑆳𑆤𑆱𑆧𑆬𑇅 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶𑇇
𑆬𑆳𑆓𑆶𑆤𑆪𑆴 𑆮𑆳𑆬𑆴 𑆩𑆳𑆬 𑆄𑆓𑆱 𑆠𑆳𑆫,
𑆒𑆳𑆬𑇀𑆪 𑆪𑆶𑆡 𑆤𑆶 𑆫𑆾𑆘𑆴 𑆲𑆳𑆬𑇀𑆪 𑆘𑆳𑆁𑆓𑆵𑆫𑆢𑆳𑆫 ,
𑆦𑆳𑆘𑆴𑆬 𑆠𑆶 𑆧𑆳𑆑𑆵 𑆤𑆼𑆫𑆴 𑆑𑆱 𑆠𑆬 𑇅 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶𑇇
𑆖𑆾𑆫𑆴𑆡 𑆧𑆴𑆪𑆴 𑆧𑇀𑆪𑆾𑆬 𑆱𑆁𑆖𑇀𑆫𑆴𑆡 𑆡𑆮 ,
𑆱𑆾𑆁𑆠 𑆪𑆼𑆬𑆴 𑆪𑆴𑆪𑆴 𑆠𑆼𑆬𑆴 𑆦𑆬𑆴 𑆦𑆬𑆴 𑆮𑆮,
𑆮𑆥𑆑𑆳𑆫𑆶 𑆮𑆥𑆢𑆵 𑆤𑆮 𑆤𑆮 𑆡𑆬𑇅 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶𑇇
𑆪𑆾𑆓𑆶 𑆩𑆳𑆪𑆳𑆪𑆴 𑆲𑆶𑆁𑆢 𑆧𑆷𑆓𑆵 𑆄𑆱,
𑆪𑆵 𑆗𑆪 𑆢𑆶𑆪 𑆠𑆱 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆪 𑆠𑆴𑆪 𑆑𑆳𑆱,
𑆱𑆳𑆢𑆶 𑆤𑆳𑆮 𑆥𑇀𑆪𑆾𑆪 𑆠𑆪 𑆱𑇀𑆮𑆳𑆢𑆶 𑆩𑆾 𑆝𑆬𑇅 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶𑇇
𑆑𑆫𑇀𑆩𑆶 𑆦𑆬 𑆱𑆾𑆫𑆶𑆪 𑆓𑆶𑆫𑆶 𑆯𑆧𑇀𑆢𑆪 ,
𑆱𑆁𑆖𑇀𑆫𑆴𑆡 𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪 𑆩𑆳𑆤 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑆧𑇀𑆢𑆪,
𑆑𑆫𑇀𑆩𑆶 𑆑𑆳𑆁𑆝𑆶 𑆮𑆤𑆴 𑆤𑆼𑆫𑆴 𑆓𑇀𑆪𑆳𑆤𑆶 𑆮𑆶𑆘𑆩𑆬𑇅 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶𑇇
𑆱𑇀𑆮𑆪𑆩 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆯𑆴𑆑𑆼 𑆮𑆴𑆓𑇀𑆪𑆳𑆤𑆪 ,
𑆠𑇀𑆫𑆳𑆁𑆮𑆴𑆡 𑆩𑆳𑆤 𑆧𑆼𑆪𑆴 𑆃𑆧𑆴𑆩𑆳𑆤𑆪,
𑆥𑇀𑆫𑆳𑆁𑆮𑆴𑆡 𑆫𑆾𑆘 𑆢𑇀𑆮𑆳𑆢𑆶 𑆯𑆳𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆩𑆤𑇀𑆝𑆬𑇅 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶𑇇
𑆥𑆫𑆩𑆳𑆤𑇀𑆢 𑆏𑆱 𑆘𑆩𑆵𑆤𑆢𑆳𑆫,
𑆲𑆷𑆫𑆴𑆡 𑆢𑆤𑆶 𑆢𑇀𑆪𑆳𑆫 𑆱𑆷𑆫𑆴𑆠 𑆬𑆳𑆫,
𑆮𑆳𑆁𑆓𑆶𑆘 𑆮𑆳𑆁𑆫𑆴𑆖 𑆘𑆁𑆘𑆴𑆱 𑆓𑆳𑆁𑆓𑆬𑇅 𑆱𑆁𑆠𑆾𑆯𑆶𑇇

कर्म बूमिका: Field of your activity. Rather every act in life that I undertake must be righteous one and with that the seeds of all my actions will bear the fruits of contentment and bliss unbound. द्वय प्रान: means inhaling and exhaling. कुम्बक: means withholding breath in Pranayama (Richak, Kumbhak and Poorak. In breath, holding breath and out breath)
कुर means a hunter (चाबुक). हिल करुन means to strive. बीठ रेल means a piece of un-ploughed land in the field. लोलक्य आल फाल: tools of love such as compassion, forgiveness, straightforwardness , kindness, cheerfulness and above all truth. दैर्य: means patience
यटफूर Is a wooden club used by a farmer to break big plods (दत्) of earth into small and smooth soil for the field to cultivate. वैरुक स्नेह not even a trace of hatred should there be in you conduct. गंगुल (गंगल): was an ancient religious practice of a religious ritual in the field itself when seeds were sown in Spring to start a new agriculture year. नाम्य वुडर: is a slightly raised boundary of the filed so that water from the paddy field doesn't escape. यन्द्रे गगरन करू वठल: shoo-away all the rats of your outgoing senses. विशय पोश: Save your field from stray animals (of your uncontrolled desires) otherwise they will graze your crop. हयलि सवि: When your field will ripen then you can do क्राव, a ritualistic practice at the time of harvesting crops). There is an old saying in Kashmiri which is युस करि गंगुल सुय करि क्राव (one who has sown seeds on time can only expect to reap a crop). त्रगुण त्याग (going beyond three Gunas of Stava, Rajas and Tamas, you can stack your reaped crops). वान मोंड: A log of wood on the crop is thrashed to separate the grains from the grass. सन्च्रथ्थ क्रयमान त प्रालब्दय:Sanchit Karna is the mountain of Karma generated by each individual over millions of lives. Kriyamaan is that Karma which we are generating in this life and keep on adding to our mountain of Sanchit Karma. Pralabdah Karma is the handful of Karmas lifted us from our individual mountain of Karma to conduct our present life. We have chosen our Prarabdah ourselves from our huge stock. God's grace can reduce the mountain of Sanchit Karma to dust and we can be liberated after this life. Our Prarabdah Karma of this life has to be exhausted here only. Even Divinity Itself has no power to obliterate our Prarabdah Karma. Good or bad, what is our Prarabdah we have to face it. The day we exhaust our Prarabdah here we coil up our mortal frame.

क्याह छुख च़ु करनि आमुत /

Girija Kaul

क्याह छुख च़ु करनि आमुत
क्याह सॊरनि आख च़ु ज़ीवो।

सय दिथ च़े पय छु छारुन
गछि किथु लय च़े ज़ीवो
क्याह छुख च़ु करनि आमुत
क्याह सॊरनि आख च़ु ज़ीवो।

नेथुर्नन्य तु अंन्य वतन पेठ
ज़रिया वॅलिथ छु होन्यन
बॅछि हंत्य मरान छि कॊछि मंज़
दॊदुश्रान पलन तु बोन्यन
गरुबारु बोनि गगरन
गमुखारु बन च़ु ज़ीवो
क्याह छुख च़ु करनि आमुत
क्याह सॊरनि आख च़ु ज़ीवो।

फॊलुमुत डलुक च़ु पंपोश
लॊमबि मंज़ु च़ु रोज़ु बाहोश
फॉलाव च़ु मुशकि अदुफर
माशोकु गछान मदहोश
हॊदु म्यॊड छु लोलु ख्यावुन
होंडु मारनय नु ज़ीवो
क्याह छुख च़ु करनि आमुत
क्याह सॊरनि आख च़ु ज़ीवो।

ह्योनु द्युन छु क्रुठु खेला
गिरिजायि मीठ वेला
रोवुम लोबुन मे रॅविथ
ग्यानय बरिथ छु ठेला
नाशवानु यि संसारा,
तारा लगुन च़े जीवो।

क्याह छुख च़ु करनि आमुत
क्याह सॊरनि आख च़ु ज़ीवो।

Girja Kaul, a teacher by profession, was initiated into spirituality by her mother in law, her Guru Maa. With her grace, she started writing poetry in Kashmiri in 1989. She has published three books titled Gurudakshina, Tulsi Tapasya, and Kalyug ka Avatar. Her writing eloquently illustrates the journey of self realization. Here we are reproducing one of her Leelas.

Painting on Lalleshwari by Seema Kachroo

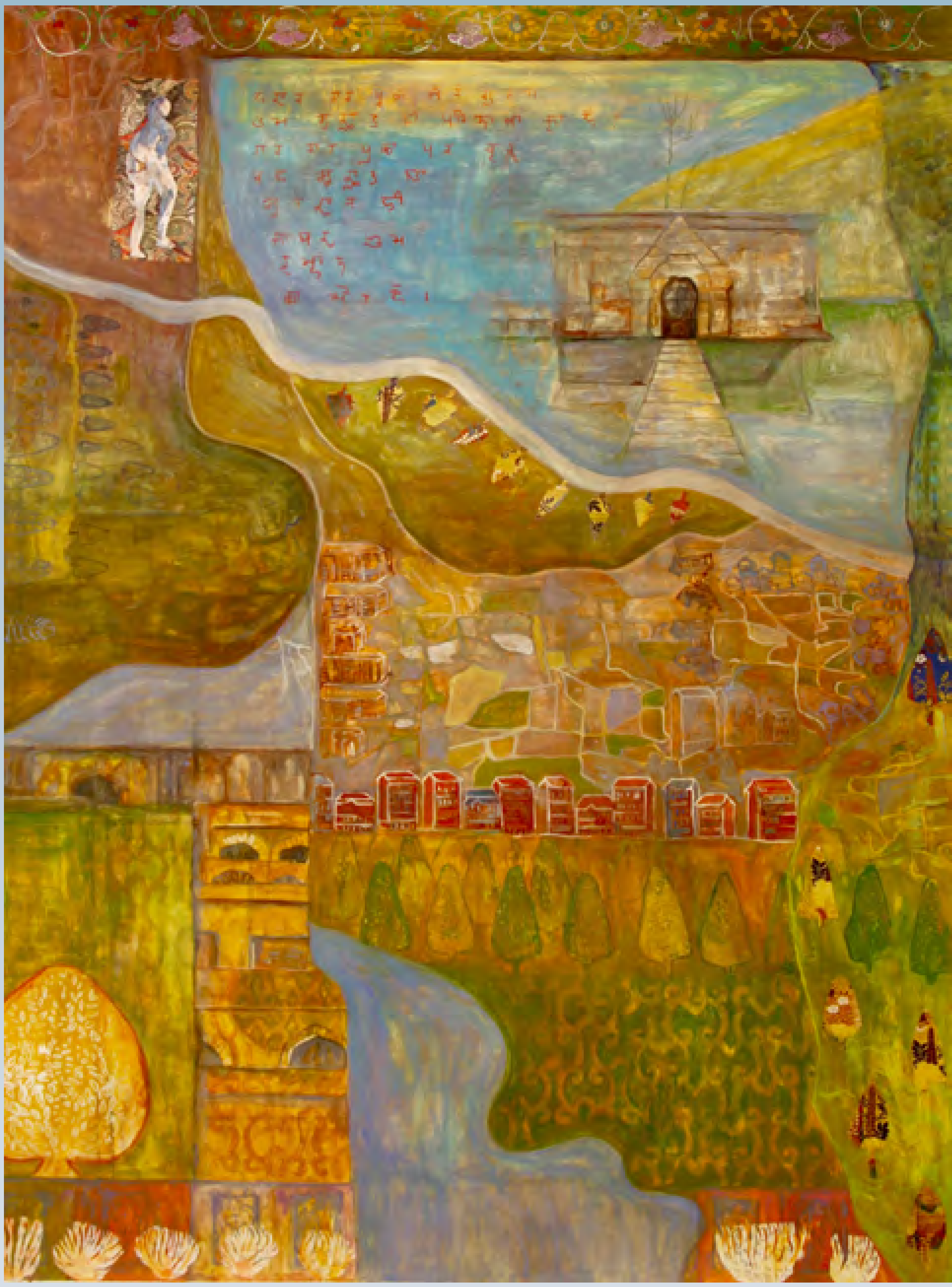

Painting by Mrs Seema Kachroo
Title of the work: The Songs of Lalleshwari- 6
Size: 24"x 30"
Medium: Mixed media on paper
Year : 2022-23

ग्वरस पृ़छोम सासि लटे
यस नु केंह वनान तस क्याह नाव
पृ़छान पृ़छान थचिस तु लूसुस
केंहनस निशि क्याहताम द्राव ।।26 ।।

(Ref: The book *The Ascent of Self* by B N Parimoo (Published by Motilal Banarasidass Publishers Delhi 1979, the page 56)

"A thousand times at least I asked my Guru
to give Nothingness a name.
Then I gave up. What name can you give
to the source from which all names have
sprung?"

Ref: Reference is from the book *I, Lalla* by Ranjit Hoskote (Published by Penguin Books, New Delhi 2011, page 59, verse number 57)

"These verses were my guides and inspiration for work. This is the sixth painting from a series of my paintings on Lalleshwari".... *w*Seema Kachroo.

क्याह छु यि संसार / 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆲 𑆗𑆶 𑆪𑆴 𑆱𑆁𑆱𑆳𑆫

Amit Zutshi

क्याह छु यि संसार, क्याह छि अमिक्य छ़ल।
बोनि तल बिहिथ शेहजारुच छस कल।

माजि ज़ाव ॴही वुंबरि सुंब छस,
पथुय पाहन रूद लफ़्ज़व कऺडुस वस
द्राव गरि वॊनहोस द्राव पानस ॴशस,
ब्यूठ गरि छ़ुनुहोस आदारस फिरिथ फश।

खांदर कऺरिथ आय व्वन्य वॅमा गरस मन्ज़,
शंकर बन्यव मगर हमसायन हुंद कंज़।

ज़ाव शुर तु गरु बन्यव मन्दरस ह्युवुय शॅद,
तिहिंद मोल मऻज छ़ांडान वुन्यक्यनसुय बॅद।

शुर्यव कोर कार, अमासना खराब क्या असल,
रूद्य मगर शुरी, मानव न अंस्य तिमन छि अकुल।

गोमुत छु दुगोश,रूद नु व्वन्य स्यज़र,
लॅकुचारस मंज़ुय क्याज़ि आमुत बुजर।

शुर्य छि वनान वखुत रूद व्वन्य हना कमुय,
यु किथु कऺन्य, आमतिस ज़न गव न किहीं समयी।

अनिगऺट गऺयि यकदम,
प्यठय गाश ज़न द्राव सिरियुक
कोत छिम निवान पचि प्यठ,
शुर्य बऻच़ वदान लुख

यिम क्या मे करनि द्रायि सूर,
क्याज़ि गॅब्योस शुर्यन,
रेहि हुन्द तच़रुय छुम नु बासान,
तुर ज़न छम खॅरन।

यि किथु कऺन्य यि नारन ज़ोलुम पान, मगर छुस ह्यसव।
कथ बलायि द्युतु होस,कांह छुमनु बोज़ान कनव।
दपान आसार संमसार रोज़ि कस, छु यि बॊड छ़ल,

तेलि क्याज़ि बोनि तल बिहिथ शेहजारुच छम कल।
तेलि क्याज़ि बोनि तल बिहिथ शेहजारुच छम कल।

𑆑𑇀𑆪𑆳𑆲 𑆗𑆶 𑆪𑆴 𑆱𑆁𑆱𑆳𑆫, 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆲 𑆗𑆴 𑆃𑆩𑆴𑆑𑇀𑆪 𑆗𑇊𑆬𑇅
𑆧𑆾𑆤𑆴 𑆠𑆬 𑆧𑆴𑆲𑆴𑆡 𑆯𑆼𑆲𑆘𑆳𑆫𑆶𑆖 𑆗𑆱 𑆑𑆬𑇅

𑆩𑆳𑆘𑆴 𑆘𑇊𑆳𑆮 𑆄𑆁𑆲𑆵 𑆮𑆶𑆁𑆧𑆫𑆴 𑆱𑆶𑆁𑆧 𑆗𑆱,
𑆥𑆡𑆶𑆪 𑆥𑆳𑆲𑆤 𑆫𑆷𑆢 𑆬𑆦𑇊𑇀𑆘𑇊𑆮 𑆑𑆝𑆶𑆱 𑆮𑆱
𑆢𑇀𑆫𑆳𑆮 𑆓𑆫𑆴 𑆮𑆾𑆤𑆲𑆾𑆱 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆮 𑆥𑆳𑆤𑆱 𑆄𑆯𑆱,
𑆧𑇀𑆪𑆷𑆜 𑆓𑆫𑆴 𑆗𑇊𑆶𑆤𑆶𑆲𑆾𑆱 𑆄𑆢𑆳𑆫𑆱 𑆦𑆴𑆫𑆴𑆡 𑆦𑆯𑇅

𑆒𑆳𑆁𑆢𑆫 𑆑𑆫𑆴𑆡 𑆄𑆪 𑆮𑇀𑆮𑆤𑇀𑆪 𑆮𑆩𑆳 𑆓𑆫𑆱 𑆩𑆤𑇀𑆘𑇊,
𑆯𑆁𑆑𑆫 𑆧𑆤𑇀𑆪𑆮 𑆩𑆓𑆫 𑆲𑆩𑆱𑆳𑆪𑆤 𑆲𑆶𑆁𑆢 𑆑𑆁𑆘𑇊𑇅

𑆘𑇊𑆳𑆮 𑆯𑆶𑆫 𑆠𑆶 𑆓𑆫𑆶 𑆧𑆤𑇀𑆪𑆮 𑆩𑆤𑇀𑆢𑆫𑆱 𑆲𑇀𑆪𑆶𑆮𑆶𑆪 𑆯𑆢,
𑆠𑆴𑆲𑆴𑆁𑆢 𑆩𑆾𑆬 𑆩𑆳𑆘 𑆗𑇊𑆳𑆁𑆝𑆳𑆤 𑆮𑆶𑆤𑇀𑆪𑆑𑇀𑆪𑆤𑆱𑆶𑆪 𑆧𑆢𑇅

𑆯𑆶𑆫𑇀𑆪𑆮 𑆑𑆾𑆫 𑆑𑆳𑆫, 𑆃𑆩𑆳𑆱𑆤𑆳 𑆒𑆫𑆳𑆧 𑆑𑇀𑆪𑆳 𑆃𑆱𑆬,
𑆫𑆷𑆢𑇀𑆪 𑆩𑆓𑆫 𑆯𑆶𑆫𑆵, 𑆩𑆳𑆤𑆮 𑆤 𑆃𑆁𑆱𑇀𑆪 𑆠𑆴𑆩𑆤 𑆗𑆴 𑆃𑆑𑆶𑆬𑇅

𑆓𑆾𑆩𑆶𑆠 𑆗𑆶 𑆢𑆶𑆓𑆾𑆯,𑆫𑆷𑆢 𑆤𑆶 𑆮𑇀𑆮𑆤𑇀𑆪 𑆱𑇀𑆪𑆘𑇊𑆫,
𑆬𑆑𑆶𑆖𑆳𑆫𑆱 𑆩𑆁𑆘𑇊𑆶𑆪 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆘𑇊𑆴 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆧𑆶𑆘𑆫𑇅

𑆯𑆶𑆫𑇀𑆪 𑆗𑆴 𑆮𑆤𑆳𑆤 𑆮𑆒𑆶𑆠 𑆫𑆷𑆢 𑆮𑇀𑆮𑆤𑇀𑆪 𑆲𑆤𑆳 𑆑𑆩𑆶𑆪,
𑆪𑆶 𑆑𑆴𑆡𑆶 𑆑𑆤𑇀𑆪, 𑆄𑆩𑆠𑆴𑆱 𑆘𑇊𑆤 𑆓𑆮 𑆤 𑆑𑆴𑆲𑆵𑆁 𑆱𑆩𑆪𑆵𑇅

𑆃𑆤𑆴𑆓𑆛 𑆓𑆪𑆴 𑆪𑆑𑆢𑆩,
𑆥𑇀𑆪𑆜𑆪 𑆓𑆳𑆯 𑆘𑇊𑆤 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆮 𑆱𑆴𑆫𑆴𑆪𑆶𑆑
𑆑𑆾𑆠 𑆗𑆴𑆩 𑆤𑆴𑆮𑆳𑆤 𑆥𑆖𑆴 𑆥𑇀𑆪𑆜,
𑆯𑆶𑆫𑇀𑆪 𑆧𑆳𑆖𑇊 𑆮𑆢𑆳𑆤 𑆬𑆶𑆒

𑆪𑆴𑆩 𑆑𑇀𑆪𑆳 𑆩𑆼 𑆑𑆫𑆤𑆴 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆪𑆴 𑆱𑆷𑆫,
𑆑𑇀𑆪𑆳𑆘𑇊𑆴 𑆓𑆧𑇀𑆪𑆾𑆱 𑆯𑆶𑆫𑇀𑆪𑆤,
𑆫𑆼𑆲𑆴 𑆲𑆶𑆤𑇀𑆢 𑆠𑆖𑇊𑆫𑆶𑆪 𑆗𑆶𑆩 𑆤𑆶 𑆧𑆳𑆱𑆳𑆤,
𑆠𑆶𑆫 𑆘𑇊𑆤 𑆗𑆩 𑆒𑆫𑆤𑇅

𑆪𑆴 𑆑𑆴𑆡𑆶 𑆑𑆤𑇀𑆪 𑆪𑆴 𑆤𑆳𑆫𑆤 𑆘𑇊𑆾𑆬𑆶𑆩 𑆥𑆳𑆤, 𑆩𑆓𑆫 𑆗𑆶𑆱 𑆲𑇀𑆪𑆱𑆮𑇅
𑆑𑆡 𑆧𑆬𑆳𑆪𑆴 𑆢𑇀𑆪𑆶𑆠𑆶 𑆲𑆾𑆱,𑆑𑆳𑆁𑆲 𑆗𑆶𑆩𑆤𑆶 𑆧𑆾𑆘𑇊𑆳𑆤 𑆑𑆤𑆮𑇅
𑆢𑆥𑆳𑆤 𑆄𑆱𑆳𑆫 𑆱𑆁𑆩𑆱𑆳𑆫 𑆫𑆾𑆘𑇊𑆴 𑆑𑆱, 𑆗𑆶 𑆪𑆴 𑆧𑆾𑆝 𑆗𑇊𑆬,

𑆠𑆼𑆬𑆴 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆘𑇊𑆴 𑆧𑆾𑆤𑆴 𑆠𑆬 𑆧𑆴𑆲𑆴𑆡 𑆯𑆼𑆲𑆘𑆳𑆫𑆶𑆖 𑆗𑆩 𑆑𑆬𑇅
𑆠𑆼𑆬𑆴 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆘𑇊𑆴 𑆧𑆾𑆤𑆴 𑆠𑆬 𑆧𑆴𑆲𑆴𑆡 𑆯𑆼𑆲𑆘𑆳𑆫𑆶𑆖 𑆗𑆩 𑆑𑆬𑇅

Highlights

CST

Offline course of basic Sharada lipi with Bhandarkar oriental research institute to begin from 3rd June at Pune

Sharda lekhan - an online workshop on Sharada script calligraphy to begin from 9th june

Currently there are 4 manuscripts getting transliterated by Four Teams of Core Sharada Team
1. Shaiva Nirwaan
2. Vignan Bhairav critical edition
3. Martand Mahatmaya
4. Spanda Nirnaya

Kashmiri Vowels in Devanagari & Sharada Scripts

A. Special vowels used in Kashmiri Devanagari & Sharada

ॳ	ॴ	ॵ	ॶ	ॷ	ऎ	ॲ	ऑ
◌ऺ	◌ऻ	◌ॏ	◌ॖ	◌ॗ	◌ॆ	◌ॅ	◌ॉ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

Vowels with Guide words

अ	आ	ॳ	ॴ	ॶ	ॷ	ॵ	ओ	औ	अं
	◌ा	◌ऺ	◌ऻ	◌ॖ	◌ॗ	◌ॏ	◌ो	◌ौ	◌ं
अख	आराम	ॳछ	मऻज	बॖ	तॗर	दॏर	मोल	औशद	अंग
𑆃𑆒	𑆄𑆫𑆳𑆩	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	𑆩𑆾𑆬	𑆐𑆯𑆢	𑆃𑆁𑆓

Vowels with Guide words Continued..

इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ऎ
ि◌	◌ी	◌ु	◌ू	◌े	◌ै	◌ॆ
खिर	शीन	बुथ	जून	रेल	वैकुंठ	रॆह
𑆒𑆴𑆫	𑆯𑆵𑆤	𑆧𑆶𑆡	𑆘𑆷𑆤	𑆫𑆼𑆬	𑆮𑆽𑆑𑆶𑆁𑆜	𑆫𑆼𑆲

Click HERE to Buy the complete Book

𑆅 | इ

ि | 𑆴

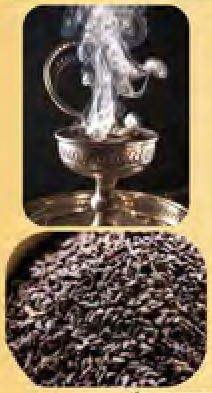

इसबन्द

(हरमाल/ Harmala)

शिशर गांठ

(हिमलंब/ Icicles)

किस

(छोटी उंगली/ Little finger)

किल्लु

(किला/ Fort)

चिठ्य

(चिट्ठी/ Letter)

टिकु वावुज

(फिरकी/ Pinwheel)

वर्णमाला / 𑆮𑆫𑇀𑆟𑆩𑆳𑆬𑆳

CORE SHARADA TEAM FOUNDATION - CORE SHARADA TEAM FOUNDATION - CORE SHARADA TEAM FOUNDATION

Our publications :-

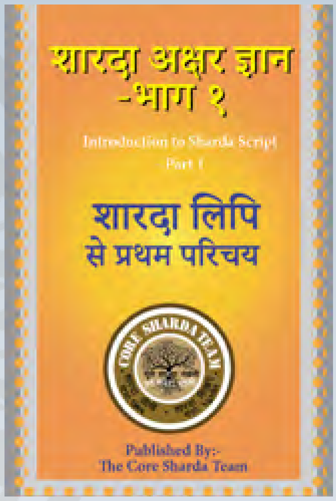

Price Rs 100/-

BUY NOW

Price Rs 175/-

BUY NOW

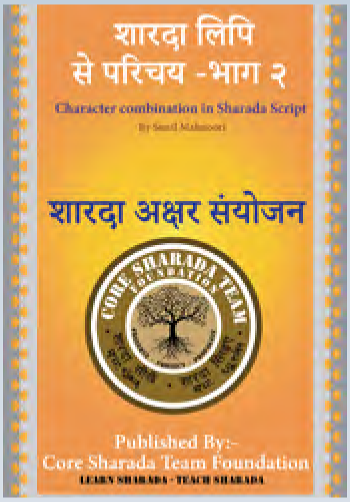

Price Rs 100/-

BUY NOW

For Learning Sharada or any other suggestions:-

facebook.com/Core-Sharda-Team-110148770831539

instagram.com/coreshardateam

shardalipi.com

twitter.com/CoreSharada

maatrika.cst@gmail.com

Phone - 98301 35616 / 90089 52222

DONATE

If you appreciate the efforts by The Core Sharada Team Foundation for the revival of Sharada Script, Kindly Donate generously.

Core Sharada Team Foundation
HDFC Bank, Airport Rd., Bangalure
Account No: 5020 0054 8093 36
IFSC : HDFC0000075
(RTGS / NEFT)

(Income Tax exemption under 80G)
Approval number- AAJCC1659DF20206 12-Clause (iv) of first provison to sub-section (5) of section 80G

© The contents of Maatrika are copyright of The Core Sharada Team Foundation.
Any redistribution or reproduction in part or all of the contents in any form is not allowed without permission.